AASAAN NEKIYA (HINDI)

आसान नेकियां

हर नेकी अहम है 2

अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब 4

अच्छी अच्छी निय्यतें करने का त़रीक़ा 14

गुनाहगार की तौबा 61

इ़यादत के मदनी फूल 131

क़र्ज़ लौटाने की दिलचस्प हि़कायत 151

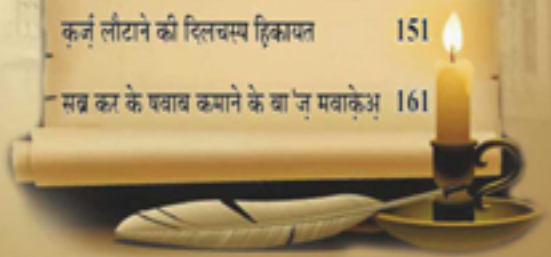

सब्र कर के सवाब कमाने के बा'ज़ मवाक़ेअ़ 161

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**आसान नेकियां**" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (**INDIA**) की **राष्ट्रिय भाषा** "**हिन्दी**" में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (·) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी-जोडणी** (**SPELLING**) रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ-लमा** (عُلَمَاء) में "**-ल**" मफ़तूह़ और **रह़म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं भी ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी–फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** या **ग़–लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

–: राबित़ा :–

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ काम आ गया

क़ियामत के दिन किसी मुसलमान की नेकियां मीज़ान (या'नी तराज़ू) में हल्की हो जाएंगी तो **सरवरे काइनात**, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बिल अर्दे वस्समावात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक पर्चा अपने पास से निकाल कर नेकियों के पलड़े में रख देंगे तो इस से नेकियों का पलड़ा वज़नी हो जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : मेरे मां बाप आप पर कुरबान, आप कौन हैं ? **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : मैं तेरा नबी मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और येह तेरा वोह **दुरूदे पाक** है जो तू ने मुझ पर पढ़ा था।

(موسوعۃ ابن ابی دنیا فی حسن الظن باللہ ج ۱ ص ۹۱ حدیث ۷۹)

वोह पर्चा जिस में लिखा था दुरूद इस ने कभी
येह उस से नेकियां इस की बढ़ाने आए हैं

*(सामाने बख़्शिश, स. **126**)*

सिर्फ़ एक नेकी चाहिये

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : क़ियामत के दिन एक शख़्स अपने बाप के पास आ कर कहेगा : अब्बू जान ! क्या मैं आप का फ़रमां बरदार न था ? क्या मैं आप से महब्बत भरा

सुलूक न करता था ? क्या मैं आप के साथ भलाई न करता था ? आप देख रहे हैं कि मैं किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हूं ! मुझे अपनी नेकियों में से **सिर्फ़ एक नेकी** अ़ता कर दीजिये या मेरे **एक गुनाह का बोझ** उठा लीजिये। बाप कहेगा : "मेरे बेटे ! तू ने मुझ से जो चीज़ मांगी वोह आसान तो है लेकिन मैं भी उसी चीज़ से डरता हूं जिस से तुम डर रहे हो।" इस के बा'द बाप भी बेटे को अपने एह़सानात याद दिला कर येही मुत़ालबा करेगा तो बेटा जवाब देगा : आप ने बहुत थोड़ी चीज़ का सुवाल किया है लेकिन मुझे भी उसी बात का ख़ौफ़ है जिस का आप को डर है। (تفسیر قرطبی، ج۷، الجزء ۱۴، ص ۲۴۷)

क़ियामत की गर्मी में साया अ़ता हो
करम से तेरे अ़र्श का या इलाही
ख़ुदाया मुझे बे ह़िसाब बख़्श देना
मेरे ग़ौष का वासित़ा या इलाही
जवार अपनी जन्नत में मुझ को अ़ता कर
तेरे प्यारे महबूब का या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर नेकी अहम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि क़ियामत के दिन जब नफ़्सा नफ़्सी और सख़्त परेशानी का आ़लम होगा तो दुन्या में बेटे की हर फ़रमाइश पूरी करने का जज़्बा रखने वाला बाप भी उसे अपनी एक नेकी देने या उस के एक गुनाह का बोझ उठाने

से साफ़ इन्कार कर देगा, इसी त़रह़ दुन्या में बाप के हर हुक्म की ता'मील के लिये कोशां रहने वाला बेटा उसे अपनी एक नेकी देने या बाप का एक गुनाह अपने ज़िम्मे लेने से मन्अ़ कर देगा। उस वक़्त हमें नेकियों की सह़ीह़ क़द्रो क़ीमत और गुनाह से बचने की अहम्मिय्यत मा'लूम होगी। बहर ह़ाल कोई **नेकी** छोटी समझ कर छोड़नी नहीं चाहिये और किसी भी गुनाह को मा'मूली समझ कर करना नहीं चाहिये ताकि मैदाने महशर में पछतावे से बचा जा सके।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बरोज़े क़ियामत नेकी ख़ुशख़बरियां सुनाएगी

क़ियामत के दिन नेकियां करने वाले शादां व फ़रह़ां जब कि बुराइयों के आ़दी हैरान व परेशान होंगे, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत नेकी और बदी को लोगों के सामने खड़ा किया जाएगा। नेकी अपने करने वालों को बिशारतें देगी और उन से भलाई का वा'दा करेगी जब कि बुराई कहेगी : मुझ से दूर हो जाओ, मगर वोह इस की त़ाक़त नहीं रखेंगे बल्कि बुराई के साथ चिमटेंगे।

(المسند للامام احمد بن حنبل، ج۷، ص۱۲۳، الحدیث: ۱۹۵۰۴ ملخصًا)

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही
इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शेर दहाड़ते वक़्त क्या कहता है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें मा'लूम है शेर दहाड़ते वक़्त क्या कहता है?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" इरशाद फ़रमाया : शेर कहता है : **ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे किसी नेक शख़्स पर मुसल्लत न फ़रमाना ।** (الفردوس بماثور الخطاب، باب التاء، ج۱، ص۲۹۷، الحدیث:۲۱۵۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकी की किसी बात को ह़क़ीर न जानो

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ شَیْئًا وَلَوْ اَنْ تَلْقَی اَخَاکَ بِوَجْہٍ طَلْقٍ या'नी नेकी की किसी बात को ह़क़ीर न समझो चाहे वोह तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना हो ।

(مسلم، کتاب البر، الحدیث:۲۶۲۶، ص۱۴۱۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस वक़्त किसी नेकी की तौफ़ीक़ मिले मौक़ए़ ग़नीमत जान कर षवाब कमाना चाहिये, क्या बईद वोही नेकी हमारे लिये ज़रीअ़ए नजात बन जाए । चुनान्चे,

अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब

एक त़वील ह़दीषे मुबारक में मुतअ़द्दिद ऐसे लोगों का बयान है कि किसी न किसी नेकी के सबब रह़मते ख़ुदावन्दी ने उन्हें अपनी आग़ोश में ले लिया, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान

बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : आज रात मैं ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा कि ❁ एक शख़्स की रूह क़ब्ज़ करने के लिये मलकुल मौत (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) तशरीफ़ लाए लेकिन उस का **मां बाप की इताअ़त** करना सामने आ गया और वोह बच गया। ❁ एक शख़्स पर अ़ज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के **वुज़ू** (की नेकी) ने उसे बचा लिया। ❁ एक शख़्स को शयातीन ने घेर लिया लेकिन **ज़िक्रुल्लाह** (करने की नेकी) ने उसे बचा लिया। ❁ एक शख़्स को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने घेर लिया लेकिन उसे (उस की) **नमाज़** ने बचा लिया। ❁ एक शख़्स को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुवे था और एक हौ़ज़ पर पानी पीने जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उस के **रोज़े** आ गए और (इस नेकी ने) उस को सैराब कर दिया। ❁ एक शख़्स को देखा कि जहां अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) हलक़े बनाए हुवे तशरीफ़ फ़रमा थे, वहां उन के पास जाना चाहता था लेकिन धुत्कार दिया जाता था कि इतने में उस का **ग़ुस्ले जनाबत** आया और (इस नेकी ने) उस को मेरे पास बिठा दिया। ❁ एक शख़्स को देखा कि उस के आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अन्धेरा ही अन्धेरा है और वोह उस अन्धेरे में हैरानो परेशान है तो उस के **ह़ज व उ़मरा** आ गए और (इन नेकियों ने) उस को अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में पहुंचा दिया। ❁ एक शख़्स को देखा कि वोह मुसलमानों से गुफ़्तगू करना चाहता है लेकिन कोई उस को मुंह नहीं

लगाता तो **सिलए रेह़मी** (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करने की नेकी) ने मोअमिनीन से कहा कि तुम इस से बात चीत करो। तो मुसलमानों ने उस से बात करना शुरूअ़ की। ۞ एक शख़्स के जिस्म और चेहरे की त़रफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से बचा रहा है तो उस का **सदक़ा** आ गया और उस के आगे ढाल बन गया और उस के सर पर साया फ़िगन हो गया। ۞ एक शख़्स को ज़बानिय्या (या'नी अ़ज़ाब के मख़्सूस फ़िरिश्तों) ने चारों त़रफ़ से घेर लिया लेकिन उस का اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ आया (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने की नेकी आई) और इस ने उसे बचा लिया और रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिया। ۞ एक शख़्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है लेकिन उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान ह़िजाब (या'नी पर्दा) है मगर उस का **हुस्ने अख़्लाक़** आया, इस (नेकी) ने उस को बचा लिया और **अल्लाह** तआ़ला से मिला दिया। ۞ एक शख़्स को उस का आ'माल नामा उलटे हाथ में दिया जाने लगा तो उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** आ गया और (इस अ़ज़ीम नेकी की बरकत से) उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दे दिया गया। ۞ एक शख़्स की नेकियों का वज़्न हल्का रहा मगर उस की **सख़ावत** आ गई और नेकियों का वज़्न बढ़ गया। ۞ एक शख़्स जहन्नम के किनारे पर खड़ा था मगर उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** आ गया और वोह बच गया। ۞ एक शख़्स जहन्नम में गिर गया लेकिन उस के ख़ौफ़े ख़ुदा में बहाए हुवे **आंसू** आ गए और (इन आंसूओं की बरकत से) वोह बच गया।

۞ एक शख़्स पुल सिरात़ पर खड़ा था और टहनी की त़रह़ लरज़ रहा था लेकिन उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ **हुस्ने ज़न** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान कि वोह ज़रूर रह़मत फ़रमाएगा) आया और (इस नेकी ने) उसे बचा लिया और वोह पुल सिरात़ से गुज़र गया। ۞ एक शख़्स पुल सिरात़ पर घिसट घिसट कर चल रहा था कि उस का मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना आ गया और (इस नेकी ने) उस को खडा कर के पुल सिरात़ पार करवा दिया। ۞ मेरी उम्मत का एक शख़्स जन्नत के दरवाज़ों के पास पहुंचा तो वोह सब उस पर बन्द थे कि उस का لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ की गवाही देना आया और उस के लिये जन्नती दरवाज़े खुल गए और वोह जन्नत में दाख़िल हो गया। (شرح الصدور ص ۱۸۲)

इस ज़िम्न में और भी कषीर अह़ादीष वारिद हैं। मषलन ۞ एक औ़रत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को **पानी** पिलाया था। (صحیح بخاری ج ۲ ص ۹۰۴ حدیث ۱۲۳۳) ۞ एक ह़दीष में सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान भी मिलता है कि एक शख़्स ने रास्ते में से एक दरख़्त को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से **ईज़ा** न पहुंचे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुश हो कर उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी। (صحیح مسلم ص ۱۴۱ حدیث ۴۱۹۱) ۞ एक सह़ीह़ ह़दीष में तक़ाज़े में **नर्मी** (या'नी क़र्ज़ की वुसूली में आसानी) करने वाले एक शख़्स की नजात हो जाने का वाक़िआ़ भी आया है। (صحیح بخاری ج ۲ ص ۲۱ حدیث ۸۷۰۲)

सच तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के वाक़िआ़त जम्अ़ करने जाएं तो इतने हैं कि हम जम्अ़ ही न कर सकें।

मुज़्दा बाद ऐ आ़सियो ! ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है
तहनिय्यत ऐ मुजरिमो ! शाफ़ेअ़ शहे अबरार है

वोह मालिको मुख़्तार है

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इसी त़रह़ की रिवायात को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : बहर ह़ाल येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम के मुआ़मलात हैं। वोह मालिको मुख़्तार है। जिसे चाहे बख़्श दे, जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, येह सब उस का अ़द्ल ही अ़द्ल है। जहां वोह किसी एक **नेकी** से ख़ुश हो कर अपनी रह़मत से बख़्श देता है वहीं किसी एक **गुनाह** पर जब वोह नाराज़ हो जाता है तो उस का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आ जाता है और फिर उस की गिरिफ़्त निहायत ही सख़्त होती है। लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है कि बज़ाहिर कोई छोटी सी भी **नेकी** हो उसे तर्क न करे कि हो सकता है येही **नेकी** नजात का ज़रीआ़ बन जाए और ब ज़ाहिर **गुनाह** कितना ही मा'मूली नज़र आता हो हरगिज़ हरगिज़ न करे।

(माख़ूज़ अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1 स. 893)

बना दे मुझे नेक, नेकों का सदक़ा गुनाहों से हरदम बचा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों की दो क़िस्में

नेकियां दो क़िस्म की होती हैं : ﴿**एक**﴾ वोह जिन का करना हम पर फ़र्ज़ या वाजिब होता है जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरा तो ऐसी नेकियां हर सूरत करनी ही होंगी क्यूंकि इन की अदाएगी पर षवाब और अ़दमे अदाएगी पर इ़ताब व इ़क़ाब (या'नी मलामत करने के साथ साथ सज़ा भी) है और ﴿**दूसरी**﴾ वोह नेकियां जो मुस्तह़ब्बात के दर्जे में हैं जैसे नवाफ़िल वग़ैरा या'नी अगर करें तो षवाब और न करें तो गुनाह नहीं लेकिन षवाब से बहर ह़ाल महरूम रहेंगे ।

क्या नेकी कमाना मुश्किल काम है ?

हमारी अकषरिय्यत इस वस्वसे का शिकार हो कर नेकियों की त़रफ़ क़दम नहीं बढ़ाती कि "**नेकियां कमाना बहुत मुश्किल है**" मगर ह़ैरत उस वक़्त होती है कि जब येही लोग दुन्यावी मालो दौलत कमाने के लिये मुश्किल से मुश्किल काम पर राज़ी हो जाते हैं । इस के लिये भूक, प्यास, धूप, ज़िल्लत, थकावट वग़ैरा क्या कुछ बर्दाश्त नहीं करते ! ह़त्ता की अपनी जान भी ख़त़रे में डाल देते हैं, सिर्फ़ इस वजह से कि उन का ज़ेह्न बना होता है कि इस परेशानी के सिले में उन्हें थोड़ी बहुत रक़म मिल जाएगी जिस से वोह अपनी ज़रूरियात व ख़्वाहिशात पूरी कर सकेंगे, लेकिन अफ़्सोस कि जब ऐसों के सामने आख़िरत में मिलने वाले इन्आ़मात व आसाइशात का तज़किरा कर के नेक कामों की तरग़ीब दी जाए तो उन्हें येह काम बहुत मुश्किल दिखाई देते हैं और वोह राहे फ़िरार इख़्तियार करने के लिये ह़ीले बहाने बनाने लगते हैं ।

हर नेकी मुश्किल नहीं होती

सच्ची बात तो येह है कि **"हर नेकी मुश्किल नहीं होती, हमारा नफ़्स इन्हें मुश्किल समझता है।"** अलबत्ता कुछ नेकियां ऐसी होती हैं जिन में थोड़ी बहुत मेह़नत मशक़्क़त करनी पड़ती है लेकिन अगर हिम्मत कर के इन्हें शुरूअ़ कर दिया जाए तो वक़्त के साथ साथ **आसानी** पैदा हो जाती है मषलन नींद क़ुरबान कर के तहज्जुद पढ़ना बेह़द मुश्किल मह़सूस होता है लेकिन जो इस का मा'मूल बना ले उस के लिये नमाज़े तहज्जुद की अदाएगी क़दरे आसान हो जाती है। बहर ह़ाल कोई नेकी दुश्वार भी हो तो छोड़नी नहीं चाहिये और मशक़्क़त नहीं बल्कि **इन्आ़म** को पेशे नज़र रखना चाहिये क्यूंकि आ़रिज़ी मशक़्क़त ख़त्म हो जाएगी जब कि इस का इन्आ़म اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हमेशा आप के पास रहेगा।

जितनी मशक़्क़त ज़ियादा उतना षवाब ज़ियादा

अपना मदनी ज़ेह्न बना लीजिये कि नेकी में जितनी मशक़्क़त ज़ियादा होगी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उतना ही षवाब ज़ियादा मिलेगा जैसा कि मन्क़ूल है : اَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ اَحْمَزُهَا या'नी अफ़्ज़ल इ़बादत वोह है जिस में ज़ह़मत (तक्लीफ़) ज़ियादा है। (کشف الخفاء ومزیل الالباس ج۱ص۱۴۱حدیث۴۵۹)

इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इ़बादात में मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से षवाब और फ़ज़ीलत ज़ियादा हो जाती है। (شرح صحیح مسلم للنووی ج۴،جز۸،ص۲۵۱) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : दुन्या में जो नेक अ़मल जितना दुश्वार होगा क़ियामत के रोज़ नेकियों के पलड़े में उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा। (تذکرۃ الاولیاء ص۹۵)

आसान नेकियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशुमार नेकियां ऐसी भी हैं जिन में मेहनत बेहद कम मगर षवाब बहुत ज़ियादा होता है लेकिन तवज्जोह न होने या ला इल्मी की वजह से हम इन षवाबात के हुसूल के कई मवाक़ेअ़ ज़ाएअ़ कर बैठते हैं । अगर थोड़ी सी तवज्जोह कर ली जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे नामए आ'माल में बेशुमार नेकियां जम्अ़ हो सकती हैं ।

अ़मल शुरूअ़ कर दीजिये

जिस पर एक एक **नेकी** जम्अ़ करने की धुन सुवार हो जाए, आसान हो या मुश्किल वोह नेकी करने का कोई मौक़अ़ हाथ से नहीं जाने देता । लिहाज़ा नेकियों का ख़ज़ाना जम्अ़ करने के लिये आज और अभी से निय्यत कर लीजिये कि मैं फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी करने के साथ साथ जब भी किसी मुस्तहब अ़मल की फ़ज़ीलत के बारे में पढ़ूं या सुनूंगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मौक़अ़ मिलते ही उस पर अ़मल करने और इस्तिक़ामत पाने की कोशिश करूंगा क्यूंकि जिस त़रह़ रेल की पटरी बिछाना एक काम है और इस पर ट्रेन चलाना दूसरा काम ! बिल्कुल इसी त़रह़ किसी अ़मल की फ़ज़ीलत जान लेना एक काम है मगर उस फ़ज़ीलत को ह़ासिल करना दूसरा काम है । नेकियों में मसरूफ़ रहने का एक फ़ाइदा येह भी होगा कि गुनाह करने का मौक़अ़ ही नहीं मिलेगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम
करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स.**97**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

83 आसान नेक्यां

❁ अच्छी अच्छी निय्यतें करना ❁ हर जाइज़ काम "बिस्मिल्लाह" से शुरूअ़ करना ❁ ज़िक्रुल्लाह करना ❁ बाज़ार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना ❁ तिलावत करना ❁ कुरआने मजीद देख कर पढ़ना ❁ दुरूदे पाक पढ़ना ❁ मुख़्तलिफ़ सुन्नतों पर अ़मल करना ❁ तौबा करना ❁ इमामा शरीफ़ बांधना और खोलना ❁ अज़ान देना ❁ अज़ान का जवाब देना ❁ अज़ान के बा'द दुआ़ पढ़ना ❁ वुज़ू के शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ पढ़ना ❁ वुज़ू के बा'द कलिमए शहादत पढ़ना ❁ बा वुज़ू रहना ❁ बा वुज़ू सोना ❁ मस्जिदें आबाद करना ❁मस्जिद से महब्बत करना ❁ इमामे के साथ नमाज़ पढ़ना ❁ नमाज़ से पहले मिस्वाक करना ❁ पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना ❁ सफ़ में दाहिनी त़रफ़ खड़े होना ❁ सफ़ में ख़ाली जगह पुर करना ❁ नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठना ❁ सलाम में पहल करना ❁ सलाम के अल्फ़ाज़ बढ़ाना ❁ ख़न्दा पेशानी से सलाम करना ❁ मुसाफ़हा करना ❁ ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना ❁ दुआ़ करना ❁ क़ब्रिस्तान वालों के लिये दुआ़ करना ❁ आयत या सुन्नत सिखाना ❁ नेकी की दा'वत देना ❁ जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना ❁ सालिहीन का ज़िक्रे ख़ैर करना ❁ शआ़इरे इस्लाम की ता'ज़ीम करना ❁ ईषार करना ❁ ख़ामोश रहना ❁ मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना ❁ नर्म गुफ़्तगू करना ❁ मुसलमान भाई को तकया पेश करना ❁

मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना ۞ इक़ाला करना (या'नी बेची हुई चीज़ वापस लेना) ۞ क़िब्ला रुख़ बैठना ۞ मजलिस बरख़ास्त होने की दुआ पढ़ना ۞ मुसलमान से महब्बत रखना ۞ रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर करना ۞ जानवरों पर रहम खाना ۞ मरीज़ की इयादत करना ۞ मुसलमान की हाजत रवाई करना ۞ जाइज़ सिफ़ारिश करना ۞ झगड़े से बचना ۞ ए'तिकाफ़ करना ۞ ता'ज़िय्यत करना ۞ तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत देना या उस के क़र्ज़ में कुछ कमी करना ۞ रिश्तेदार पर सदक़ा करना ۞तंगदस्त का बक़दरे ताक़त सदक़ा करना ۞ छुपा कर सदक़ा देना ۞अहले ख़ाना पर ख़र्च करना ۞ सुवाल न करना ۞ क़र्ज़ देना ۞अदा करने की निय्यत से क़र्ज़ लेना ۞ यतीम के सर पर शफ़्क़त से हाथ फेरना ۞ तल्बिय्या पढ़ना ۞ बैतुल्लाह में दाख़िल होना ۞ आबे ज़म ज़म पीना ۞ मुसीबत छुपाना ۞सब्र करना ۞ अफ़्वो दरगुज़र करना ۞ सुल्ह करना ۞ शुक्र करना ۞ अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना ۞ मां बाप को महब्बत भरी निगाह से देखना ۞ वालिदैन की क़ब्रों पर जुमुआ के दिन हाज़िरी देना ۞ नमाज़े जनाज़ा पढ़ना ۞ आजिज़ी करना ۞ नेक मुसलमान से हुस्ने ज़न रखना ۞ ऐब पोशी करना ۞ ईसाले षवाब करना ۞ दूसरों के लिये दुआए मग़फ़िरत करना ۞ दीनी इजतिमाआत में शिर्कत करना।

याद रहे! यहां सिर्फ़ वोह नेकियां बयान की गई हैं जिन में मेहनत व मशक़्क़त न होने के बराबर है या फिर क़दरे कम है अब आसान नेकियों की तफ़्सील मुलाहज़ा कीजिये :

1 अच्छी अच्छी निय्यतें करना

बिला शुबा अच्छी निय्यत करना एक ऐसा अ़मल है जो मेह़नत के ए'तिबार से बेह़द ख़फ़ीफ़ (या'नी छोटा), लेकिन **अज्रो षवाब** के लिह़ाज़ से हद दरजा **अ़ज़ीम** है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص ۸۱ حديث ۱۲۸۴)

निय्यत, दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं ख़्वाह वोह किसी चीज़ का हो और शरीअ़त में (निय्यत) इबादत के इरादे को कहते हैं।

(نُزہۃ القاری ج ۱ ص ۱۶۹)

किसी भी नेक अ़मल को करते वक़्त अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर ली जाएं तो इस का षवाब बढ़ जाता है, आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिष देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : एक अ़मल में जितनी निय्यतें होंगी उतनी नेकियों का षवाब मिलेगा, मषलन मोह़ताज क़राबत दार की मदद करने में अगर निय्यत फ़क़त लिवजहिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये) देने की होगी तो एक निय्यत का षवाब पाएगा और अगर सिलए रेह़मी की निय्यत भी करेगा तो दोहरा षवाब पाएगा। (اشعۃ اللمعات، ج ۱، ص ۳۶)

मेरे आक़ा इमामे अहले सुन्नत शाह मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द **5** स. **673** में लिखते हैं : बेशक जो इल्मे निय्यत जानता है एक एक फे'ल को अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है। (फ़तावा रज़विय्या)

अच्छी अच्छी निय्यतें करने का त़रीक़ा

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार

क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नियत के बारे में हमारा मदनी ज़ेहन बनाते हुवे "**नेकी की दा'वत**" सफ़ह़ा **116** पर लिखते हैं : **अच्छी अच्छी नियतें** करने के लिये ज़रूरी है कि ज़ेहन ह़ाज़िर रहे, जो अच्छी नियतों का आ़दी नहीं है उसे शुरूअ़ में ब तकल्लुफ़ इस की आ़दत बनानी पड़ेगी लिहाज़ा इब्तिदाअन इस के लिये सर झुकाए, आंखें बन्द कर के ज़ेहन को मुख़्तलिफ़ ख़यालात से ख़ाली कर के यक्सू हो जाना मुफ़ीद है । इधर उधर नज़रें घुमाते हुवे, बदन सहलाते खुजाते हुवे, कोई चीज़ रखते उठाते हुवे या जल्द बाज़ी के साथ नियतें करना चाहेंगे तो शायद हो नहीं पाएंगी । **नियतों** की आ़दत बनाने के लिये इन की अहम्मिय्यत पर नज़र रखते हुवे आप को सन्जिदगी के साथ पहले अपना ज़ेहन बनाना पड़ेगा ।

एक दम से काम शुरूअ़ न कर दीजिये

जब भी कोई काम करने लगें तो एक दम शुरूअ़ मत कर दीजिये, पहले कुछ ठहर जाइये और ज़ेहन पर ज़ोर दे कर **अच्छी अच्छी नियतें** कर लीजिये । (माख़ूज़ अज़ "नेकी की दा'वत" स. 117)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी इन्आ़मात और अच्छी अच्छी नियतें

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ बनाम "**मदनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया है । इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़लबाए इल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों

(या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 मदनी इन्आमात** हैं। बेशुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और तृलबा **मदनी इन्आमात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "**फ़िक्रे मदीना करते हुवे**" या'नी अपने आ'माल का जाइज़ा ले कर **मदनी इन्आमात** के जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। इन **मदनी इन्आमात** को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से अकषर दूर हो जाती हैं और इस की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है। इन **मदनी इन्आमात** में से एक मदनी इन्आम **अच्छी अच्छी निय्यतें** करना भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ **30** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आमात**" के सफ़्ह़ा **3** पर मदनी इन्आम नम्बर **1** है : "क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले **अच्छी अच्छी निय्यतें** कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरग़ीब दिलाई ?"(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अम्मी जान सिह़ह़त याब हो गई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी

(1) निय्यत की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत की मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ "नेकी की दा'वत" सफ़्ह़ा **109** ता **129** का ज़रूर मुतालआ़ कीजिये।

माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बुरी निय्यतों से नजात और **अच्छी निय्यतों** की आ़दात नसीब होंगी। चुनान्चे, कोरंगी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, मेरी फ़ौज में मुलाज़मत थी और मैं मॉडर्न नौजवान था, अलबत्ता नमाज़ पढ़ा करता था। अम्मी जान की बीमारी के बाइ़ष सख़्त तशवीश थी, एक इस्लामी भाई ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुवे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दी, मैं ने मा'ज़िरत चाहते हुवे उन से कहा : अम्मी जान सख़्त बीमार हैं ऐसी ह़ालत में उन्हें छोड़ कर सफ़र नहीं कर सकता। उन्हों ने मश्वरा दिया : "आप सिर्फ़ मदनी क़ाफ़िले में **सफ़र की निय्यत** कर लीजिये कि जब भी मौक़अ़ मिला कर लूंगा और आज नमाज़े **तहज्जुद** अदा कर के गिड़ गिड़ा कर अम्मी जान की सिह़्ह़त याबी के लिये दुआ़ फ़रमाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर करम होगा।" उन्हों ने येह बात कुछ ऐसे दिल नशीन अन्दाज़ में कही कि दिल को लग गई और मैं ने **सफ़र की निय्यत** कर ली। रात उठ कर **तहज्जुद** अदा कर के ख़ूब रो रो कर दुआ़ मांगी, फिर नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद का रुख़ किया, वापसी पर जब घर पहुंचा तो ह़ैरत से खड़े का खड़ा ही रह गया ! क्या देखता हूं कि मेरी वोह ज़ार नज़ार (या'नी कमज़ोर) और सख़्त बीमार अम्मी जान जो ख़ुद उठ कर बैतुल ख़ला (या'नी वॉश रूम) भी नहीं जा सकती थीं बैठी इत़्मीनान से कपड़े धो रही हैं ! मैं ने अ़र्ज़ की : अम्मी जान ! आप आराम फ़रमाइये कहीं त़बीअ़त ज़ियादा न बिगड़ जाए, मैं ख़ुद कपड़े धो लूंगा। इस पर फ़रमाया : बेटा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज मुझे न कोई

दर्द है न तक्लीफ़, मैं अपने आप को बहुत हल्की फुलकी महसूस कर रही हूं। येह सुन कर मेरी आंखों में ख़ुशी के आंसू आ गए, मेरे दिल में एक इत्मीनान की कैफ़िय्यत पैदा हुई कि **सफ़र की निय्यत** की बरकत से दुआ को मक़्बूलिय्यत मिल गई है। इस्लामी भाई से मुलाक़ात पर तफ़्सील अ़र्ज़ की, तो उन्हों ने ख़ूब ह़ौसला बढ़ाया और हमदर्दाना मश्वरा दिया कि बिला ताख़ीर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर लीजिये। लिहाज़ा मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और इस दौरान आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से हमारे घर में **मदनी माह़ोल** बन गया, मुझ जैसा मॉडर्न नौजवान दाढ़ी और इमामा सजा कर सुन्नतों की ख़िदमत में लग गया, अम्मी जान और मेरे बच्चों की मां दोनों इस्लामी बहनों के इजतिमाअ़ में शिर्कत करती हैं। ग़ौर फ़रमाइये ! **मैं ने सिर्फ़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की** और इस के सबब बरकत ही बरकत हो गई तो न जाने मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की क्या क्या मदनी बहारें होंगी ! काश हर इस्लामी भाई हर माह कम अज़् कम तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र का आ़दी बन जाए। (नेकी की दा'वत, स.**119**)

अच्छी निय्यत का फल पाओगे बे बदल सब करो निय्यतें क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और नादारियां हों टलें मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

2 हर जाइज़ काम "बिस्मिल्लाह" से शुरूअ़ करना

रोज़ मर्रा के हर जाइज़ काम को (जब कि कोई मानेअ़ शरई न हो) बिस्मिल्लाह शरीफ़ से शुरूअ़ करना अपना मा'मूल बना

लिया जाए तो हज़ारों नेकियों का ख़ज़ाना इकठ्ठा किया जा सकता है, चुनान्चे, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रहत निशान है : जो بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर हर्फ़ के बदले उस के नामए आ'माल में **चार हज़ार नेकियां** दर्ज फ़रमाएगा, **चार हज़ार गुनाह** बख़्श देगा और चार हज़ार दरजात बुलन्द फ़रमाएगा।

(فردوس الأخبار، ج۲، ص۲۳۹، الحدیث ۵۵۷۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान हो जाइये !! ज़रा ह़िसाब तो लगाइये بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم में **19** हुरूफ़ हैं। यूं एक बार بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चन्द सेकन्ड्ज़ में **76** हज़ार नेकियां मिलेंगी, **76** हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे और **76** हज़ार दरजात बुलन्द होंगे।

बिस्मिल्लाह पढ़े जाइये

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह" के सफ़ह़ा **1** पर लिखते हैं : खाने खिलाने, पीने पीलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी वग़ैरा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा चलाने, दस्तरख़्वान बिछाने बढ़ाने, बिछौना लपेटने बिछाने, दुकान खोलने बढ़ाने, ताला खोलने लगाने, तेल डालने, इत्र लगाने, बयान करने, ना'त शरीफ़ सुनाने, जूती पहनने, इमामा सजाने, दरवाज़ा खोलने बन्द फ़रमाने, अल ग़रज़ हर जाइज़ काम के शुरूअ़

में (जब कि कोई मानेए शरई न हो) بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ने की आ़दत बना कर इस की बरकतें लूटना ऐन सआ़दत है।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ने में दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़ की अदाएगी लाज़िमी है। और कम अज़ कम इतनी आवाज़ भी ज़रूरी है कि रुकावट न होने की सूरत में अपने कानों से सुन सकें। जल्द बाज़ी में बा'ज़ लोग हुरूफ़ चबा जाते हैं, जान बूझ कर इस त़रह़ पढ़ना **ममनूअ़** है और मा'ना फ़ासिद होने की सूरत में **गुनाह**। लिहाज़ा जल्दी जल्दी पढ़ने की आ़दत की वजह से जो लोग ग़लत़ पढ़ डालते हैं वोह अपनी इस्लाह़ कर लें नीज़ जहां पूरी पढ़ने की कोई ख़ास वजह मौजूद न हो और जल्दी भी हो वहां सिर्फ़ "**बिस्मिल्लाह**" कह लें तब भी ह़रज नहीं।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ह्रे क़ातिल बे असर हो गया

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से कुछ मजूसियों (या'नी आग पूजने वालों) ने अ़र्ज़ की, कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ) हमें कोई ऐसी निशानी बताइये जिस से हम पर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ हो। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने **ज़हरे क़ातिल** मंगवाया और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर उसे खा लिया। "बिस्मिल्लाह" की बरकत से उस ज़ह्रे

क़ातिल ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कोई असर न किया। येह मन्ज़र देख कर मजूसी (या'नी आतश परस्त) बे साख़्ता पुकार उठे : दीने इस्लाम ह़क़ है। (तफ़्सीरे कबीर, जि. 1 स.155)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को सलाम करते हुवे घर के अन्दर आएं। अगर घर में कोई न हो तो اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ कहें। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में पहली बार घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم और قُلْ هُوَ اللّٰهُ शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है और रोज़ी में बरकत भी।(1)

(मिरआतुल मनाजीह़ जि. 6 स. 9)

करूं नामे अक़्दस से तेरे ख़ुदाया मैं आग़ाज़ हर काम का या इलाही
बना दे मुझे अपना ज़ाकिर बना दे मुझे शौक़ दे ना'त का या इलाही
तेरे नाम पर जान क़ुरबान कर दूं
तू कर ऐसा जज़्बा अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1 तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल के बाब "**फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह**" का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

3 ज़िक्रुल्लाह करना

ज़िक्रुल्लाह भी ऐसी आसान इबादत है कि इसे इन्सान थोड़ी सी तवज्जोह से किसी भी वक़्त अन्जाम दे सकता है। इस के फ़ज़ाइल और फ़वाइद बे शुमार हैं, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर एक शख़्स की झोली दिरहमों से भरी हुई हो और वोह इन्हें तक़्सीम कर रहा हो और दूसरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कर रहा हो तो ज़िक्रुल्लाह करने वाला अफ़्ज़ल होगा।" (طبرانی اوسط، من اسمہ محمد، الحدیث ۵۹۶۹، ج ۴، ص ۲۷۴)

अफ़्ज़ल दरजे में होगा

तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीषे पाक है कि हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे खुश खिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से अफ़्ज़ल दरजे वाले कौन लोग होंगे ?" इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कषरत से ज़िक्र करने वाले।"

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۵، الحدیث ۳۳۸۷، ج ۵، ص ۲۴۵ ملخصًا)

तुम्हारी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रहा करे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस्लाम के अह़कामे शरइय्या मुझ पर बहुत हैं, मुझे कोई एक बात ऐसी बता दें जिसे मैं मज़बूत थाम लूं ? इरशाद

फ़रमाया : لَايَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِّنْ ذِكْرِ اللّٰه या'नी तुम्हारी ज़बान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रहा करे।

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الذکر، الحدیث ۳۳۸۶، ج۵، ص ۲۴۵)

ज़िक्र की अक्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अकषर येही ख़याल किया जाता है कि ज़बान से سُبْحٰنَ اللّٰه, اَلْحَمْدُ لِلّٰه वग़ैरा अदा करने का नाम ही **ज़िक्र** है, इस में कोई शक नहीं कि येह भी ज़िक्र है मगर कलामे अ़रब में ज़िक्र का लफ़्ज़ बहुत से मआ़नी में इस्ति'माल होता है। चुनान्चे, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى सूरए बक़रह की आयत नम्बर 152 فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ(1) के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है :

(1) **लिसानी** (या'नी ज़बान से)

(2) **क़ल्बी** (या'नी दिल से)

(3) **बिल जवारिह़** (या'नी आ'ज़ाए जिस्म से)

❁ **ज़िक्रे लिसानी :** तस्बीह़, तक़्दीस, षना वग़ैरा बयान करना है ख़ुत़बा, तौबा, इस्तिग़फ़ार, दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं ❁ ज़िक्रे क़ल्बी : अल्लाह तआ़ला की ने'मतों का याद करना उस की अ़ज़मत व किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना, उ़-लमा का इस्तिम्बाते मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल हैं ❁ ज़िक्र बिल जवारिह़ येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना येह ज़िक्र बिल जवारिह़

❶ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। (پ۲، البقرۃ:۱۵۲)

में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है। तस्बीह़ व तक्बीर, षना व क़िराअत तो **ज़िक्रे लिसानी** है और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, इख़्लास **ज़िक्रे क़ल्बी** और क़ियाम, रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा **ज़िक्र बिल जवारिह़** है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुझ पर रह़मत की नज़र रखना

एक बार सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मील तक सफ़र कर गए मगर इस दौरान **ज़िक्रुल्लाह** न कर पाए, लिहाज़ा वापस आए और वोह मसाफ़त **ज़िक्रुल्लाह** करते हुवे दोबारा त़ै की। जब त़ै कर चुके तो अ़र्ज़ की : या इलाही عَزَّوَجَلَّ अबू फ़र्वा पर रह़मत की नज़र रखना क्यूंकि येह तुझे नहीं भूलता।

(کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)، ص۲۱۸)

मेरी गवाही दें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल मलीह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते तो (ख़ुशी से) झूम जाते और फ़रमाते : मेरा येह झूमना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की वजह से है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया है : فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ[1] और जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ किसी रास्ते पर चलते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना भूल जाते तो वापस आ कर फिर उसी रास्ते पर चलते और उस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते अगर्चे एक दिन का सफ़र हो, और फ़रमाते : मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मैं जिस ज़मीन

---

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। (پ۲، البقرۃ:۱۵۲)

से गुज़रूं वोह तमाम हिस्सए ज़मीन क़ियामत के दिन मेरे ज़िक्रुल्लाह की गवाही दे । (تنبیہ المغترین،الباب الثانی،ص۱۰۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का हम पर अ़ज़ीम एह़सान है कि उस का ज़िक्र हम हर जगह कर सकते हैं। इस के लिये कोई ख़ास मक़ाम और वक़्त मुक़र्रर नहीं फ़रमाया। जहां जाएं, जिधर जाएं, **अल्लाह अल्लाह** कर सकते हैं, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमाने अ़ज़ीम : فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ [1] से हम पर आसानी कर दी है और अपने ज़िक्र के लिये कोई जगह मख़्सूस नहीं फ़रमाई अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये ज़िक्र करने की कोई जगह मख़्सूस फ़रमा देता तो हमारा वहां जाना वाजिब हो जाता ख़्वाह वोह मक़ाम एक सदी की मुसाफ़त पर ही क्यूं न होता जैसा कि ह़ज के लिये लोगों को का'बा में बुलाया है। (تنبیہ المغترین،ص۱۰۳)

मदनी इन्आ़मात और ज़िक्रुल्लाह

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा **"मदनी इन्आ़मात"** में से एक मदनी इन्आ़म **"ज़िक्रुल्लाह"** के बारे में भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना

मदینہ

1 **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। (پ۲،البقرۃ:۱۵۲)

के मत़बूआ़ 30 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "72 **मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा 3 पर **मदनी इन्आ़म** नम्बर 3 है : "क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुरसी, सूरतुल इख़्लास और तस्बीहे फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पढ़ी ? नीज़ रात में सूरतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?" और सफ़ह़ा 4 पर मदनी इन्आ़म नम्बर 8 है : क्या आज आप ने आइन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर मा'ना पर नज़र रखते हुवे اِنْ شَآءَاللّٰہ और मिज़ाज पुर्सी पर शिकवा करने के बजाए اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال और किसी ने'मत को देख कर مَا شَآءَاللّٰہ कहा ?

रहे ज़िक्र आठों पहर मेरे लब पर

तेरा या इलाही तेरा या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स.77)

अज़्कारो अवराद और इन के षवाब पर मुश्तमिल 16 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ وسلم

1 100 ह़ज का षवाब

जिस ने सुब्ह़ो शाम सो सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पढ़ा तो वोह सो ह़ज करने वाले की त़रह़ है।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ۶۳، ج۵، ص۲۸۸، الحدیث: ۳۴۸۲)

2 बुराइयां मिटा कर नेकियां लिख दी जाती हैं

जो बन्दा दिन या रात की किसी साअ़त में لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ कहता है तो उस के नामए आ'माल में से बुराइयां मिटा कर उन की जगह उतनी ही नेकियां लिख दी जाती हैं।

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی فضل لا الہ الا اللہ، ج۱۰، ص۸۸، الحدیث: ۱۶۸۰۳)

3 100 के बदले हज़ार

दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो बन्दा इन पर हमेशगी इख़्तियार करेगा जन्नत में दाख़िल होगा, येह दोनों काम हैं तो बहुत आसान मगर इन पर अ़मल करने वाले लोग बहुत कम हैं। तुम में से कोई हर नमाज़ के बा'द दस मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه दस मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰه और दस मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़ लिया करे तो येह ज़बान पर डेढ़ सो हैं जब कि मीज़ान में पन्दरह सो हैं। फिर जब वोह अपने बिस्तर की त़रफ़ आए तो तैंतीस मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه तैंतीस मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰه और चौंतीस मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَر कहे, येह ज़बान पर तो सो हैं जब कि मीज़ान में एक हज़ार हैं। (سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، ج۱، ص۴۹۷، الحدیث:۹۲۶)

4 जन्नत में खजूर का दरख़्त

जो سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है। (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، ج۱۰، ص۱۱۱، الحدیث:۱۶۸۷۵)

5 गुनाहों की मुआ़फ़ी

जो सो मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समन्दर की झाग के बराबर हों।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب۶۱، ج۵، ص۲۸۷، الحدیث:۳۴۷۷)

6 अफ़्ज़ल अ़मल

जिस ने सुब्ह़ और शाम के वक़्त सो सो मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ा क़ियामत के दिन इस से अफ़्ज़ल अ़मल ले कर आने वाला कोई न होगा मगर वोह जो इस की मिस्ल कहे या इस से ज़ियादा पढ़े।

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل التہلیل والتسبیح، ص۱۴۴۵، الحدیث:۲۶۹۲)

7 ज़बान पर हल्के मीज़ान पर भारी

दो कलिमे سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ ज़बान पर हल्के, मीज़ान पर भारी और रह़मान عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं।

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعا، باب فضل التہلیل والتسبیح، ص۱۴۴۶، الحدیث: ۲۶۹۴)

8 हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करूंगा

जो सुब्ह़ के वक़्त येह पढ़े : "رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا"[1] तो मैं उसे अपने हाथ से पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करने की ज़मानत देता हूं।

9 जन्नती पौदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे तो मैं पौदे लगा रहा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! तुम क्या लगा रहे हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "पौदे लगा रहा हूं।" फ़रमाया : "क्या मैं तुझे इन से बेहतर पौदों के बारे में न बताऊं ?" फिर फ़रमाया : वोह سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر हैं, इन में से हर एक के बदले जन्नत में एक पौदा लगा दिया जाता है।

(ابن ماجہ، کتاب الادب، ج۴، ص۲۵۲، الحدیث: ۳۸۰۷)

---

[1] **तर्जमा :** मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने और इस्लाम के दीन होने और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं।

10 बीस लाख नेकियों का षवाब

जो इन कलिमात को पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये बीस लाख नेकियां लिखेगा :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۔

11 नेकियां ही नेकियां

बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में से चार कलिमात سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر को चुन लिया है । चुनान्चे, जो سُبْحٰنَ اللّٰه कहता है उस के लिये बीस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के बीस गुनाह मिटा दिये जाते हैं और जो اَللّٰهُ اَكْبَر कहता है उसे भी येही फ़ज़ीलत ह़ासिल होती है और जो لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहता है उस की भी येही फ़ज़ीलत है और जो दिल से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहता है उस के लिये तीस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के तीस गुनाह मिटा दिये जाते हैं ।

(المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر ...الخ، باب فضیلۃ التسبیح، ج ۲، ص ۱۹۲، الحدیث: ۱۹۲۹)

12 रोज़ाना एक हज़ार नेकियां कमाने का त़रीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने

❶ **तर्जमा :** **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, यक्ता व बे नियाज़ न उस की कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई ।

की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि आप ने फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई रोज़ाना एक हज़ार नेकियां कमाने से आ़जिज़ है?" ह़ाज़िरीन में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "हम में से कोई एक हज़ार नेकियां कैसे कमा सकता है?" फ़रमाया : अगर वोह सो मरतबा तस्बीह़ (या'नी سُبْحٰنَ اللّٰه) कहे तो उस के लिये एक हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं या एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जाते हैं।

(صحیح مسلم کتاب الذکر والدعاء، باب فضل التھلیل والتسبیح، ص ۱۴۴۷، الحدیث: ۲۶۹۸)

13 गुनाह झड़ते हैं

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه

पढ़ा करो क्यूंकि येह बाक़ियाते सालिह़ात (या'नी बाक़ी रहने वाली नेकियां) हैं और गुनाहों को इस त़रह़ झाड़ देती हैं जिस त़रह़ दरख़्त अपने पत्ते झाड़ता है और येह जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं।

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، ج ۱۰، ص ۱۰۴، الحدیث: ۱۶۸۵۵)

14 जन्नती ख़ज़ाना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बताऊं? मैं ने अ़र्ज़ की : "ज़रूर बताइये।" इरशाद फ़रमाया : वोह لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه है।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، ج ۴، ص ۲۶۰، الحدیث: ۳۸۲۵)

15 दस नेकियों का इज़ाफ़ा और दस गुनाहों की मुआफ़ी

जिस ने सुब्ह के वक़्त :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

पढ़ा तो येह उस के लिये अवलादे इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام से एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा और उस के लिये इस के इवज़ दस नेकियां लिखी जाएंगी और उस के दस गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस के दस दरजात बुलन्द कर दिये जाएंगे और वोह शाम तक शैतान से हिफ़ाज़त में रहेगा और अगर शाम के वक़्त पढ़ा तो उसे सुब्ह तक येही फ़ज़ीलत हासिल होगी ।

(سنن ابی داؤد، کتاب الأدب، باب مایقول اذا اصبح، ج ۴، ص ۴۱۴، الحدیث: ۵۰۷۷)

16 एक हज़ार दिन की नेकियां

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّا هُوَ اَهْلُهٗ'' पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।[1] (مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج ۱۰، ص ۲۵۴، حدیث: ۱۷۳۰۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 मुख़्तलिफ़ अज़कार, और अवरादो वज़ाइफ़ वग़ैरा पढ़ने के लिये अमीरे अहले सुन्नत की 419 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **मदनी पंज सूरह** मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन हासिल कीजिये ।

4 बाज़ार में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना

बाज़ार ग़फ़्लत की जगह है लेकिन अगर ज़रा सी तवज्जोह कर के हम बाज़ार में ज़िक्रुल्लाह कर लिया करें तो हमें दस लाख नेकियों का षवाब मिलेगा और दस लाख गुनाह मुआ़फ़ होंगे, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने बाज़ार में दाख़िल हो कर कहा :

(1) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस लाख नेकियां लिखेगा और उस के दस लाख गुनाह मिटा देगा और उस के दस लाख दरजात बुलन्द फ़रमाएगा। (الترمذی، کتاب الدعوات، ج۵، ص۲۷۰، الحدیث:۳۴۳۹)

ताजिर इस्लामी भाइयों बल्कि बाज़ार में आमदो रफ़्त रखने वाले हर इस्लामी भाई को चाहिये कि इस को याद कर लें और वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ते रहा करें।

5 तिलावत करना

कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद **अल्लाह** तआ़ला का अ़ता कर्दा ऐसा अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़म है जिस को देखना, पढ़ना, सुनना, समझना, इस पर अ़मल करना और अपने पास रखना सब नेक

---

1 **तर्जमा :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस की बादशाही है और उसी के लिये तमाम ख़ूबियां हैं वोह ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ख़ुद ज़िन्दा है कभी न मरेगा उसी के हाथ में तमाम भलाइयां हैं और वोह हर शै पर क़ादिर है।

काम हैं। कुरआने पाक का एक हर्फ़ पढ़ने पर **10** नेकियों का षवाब मिलता है, चुनान्चे, ख़ातमुल मुर्सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि اَلِف एक ह़र्फ़, لام एक ह़र्फ़ और میم एक ह़र्फ़ है।"

(سنن الترمذی ج ۴ ص ۴۱۷ حدیث ۲۹۱۹)

ज़रा ग़ौर कीजिये कि जो ख़ुश नसीब सिर्फ़ الٓمٓ की तिलावत करे तो उस के नामए आ'माल में चन्द सेकन्ड में **30** नेकियों का इज़ाफ़ा हो जाता है तो कुरआने पाक की एक सूरत या एक रुकूअ़ पढ़ने का कितना षवाब मिलेगा ! हर इस्लामी भाई को चाहिये कि रोज़ाना कुछ न कुछ मिक़दार में तिलावते कुरआन ज़रुर करे, ज़ियादा न सही रोज़ाना कुरआने पाक की कम अज़ कम तीन आयात मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पढ़ने का ही मा'मूल बना ले तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर रोज़ उस के नामए आ'माल में सेंकड़ों नेकियों का इज़ाफ़ा होता रहेगा।

वाह ! क्या बात है आ़शिके़ कुरआन की

ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی रोज़ाना एक बार **ख़त्मे कुरआने पाक** फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **हमेशा दिन को रोज़ा** रखते और सारी रात क़ियाम (इबादत) फ़रमाते,

जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तहिय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते। तह़दीषे ने'मत के त़ौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास **कुरआने पाक** का ख़त्म और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिर्या किया है। नमाज़ और **तिलावते कुरआन** से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को खुसूसी मह़ब्बत थी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है चुनान्चे, वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन **अचानक एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट उठाने के लिये जब झूके तो येह देख कर हैरान रह गए कि आप** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं!** आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साहिबा ने बताया : वालिदे मोहतरम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم रोज़ाना येह दुआ किया करते थे : "या **अल्लाह**! अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की सआदत अ़ता फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से **तिलावते कुरआन** की आवाज़ आ रही होती। (حِلْيَةُ الاولياء ج۲ ص۳۶۲-۳۶۶ مُلتَقطاً)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

6 कु़रआने मजीद देख कर पढ़ना

कु़रआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है कि येह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी और येह सब काम इबादत हैं। (बहारे शरीअ़त जि.1 स.550 وغنیۃ المتملی،ص۴۹۵)

एक मिनट में कु़रआन पढ़ने का षवाब कमाइये

यूं तो कु़रआने पाक की तिलावत जिस मक़ाम से भी की जाए बाइषे षवाब है लेकिन बा'ज़ सूरतों के खुसूसी फ़ज़ाइल अहादीषे मुबारका में बयान किये गए हैं जिन में सूरए इख़्लास भी है, इस के पढ़ने पर तिहाई कु़रआन पढ़ने का षवाब मिलता है, चुनान्चे, एक मिनट से भी कम वक़्त में तीन मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ कर एक कु़रआने पाक पढ़ने का षवाब कमाया जा सकता है अगर्चे लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ मुकम्मल कु़रआने पाक की तिलावत की फ़ज़ीलत व बरकत ज़ियादा है। येही वजह है कि ईसाले षवाब की महफ़िलों में दुरूदे पाक, ना'त शरीफ़, ज़िक्रुल्लाह और दीगर नेकियों के साथ साथ तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ कर इस का षवाब मय्यित को पहुंचाया जाता है।

सूरए इख़्लास तिहाई कु़रआन के बराबर है

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई शख़्स रात में तिहाई कु़रआन क्यूं नहीं पढ़ता ! सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "आक़ा ! कोई शख़्स तिहाई कु़रआन कैसे पढ़ सकता है ?" इरशाद फ़रमाया : قُلْ ہُوَ اللہُ اَحَدٌ ۚ तिहाई कु़रआन के बराबर है। (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین،ص۴۰۵،الحدیث:۸۱۱)

मैं तिहाई क़ुरआन पढ़ूंगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक मरतबा सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इकठ्ठे हो जाओ क्यूंकि अभी मैं तुम्हारे सामने तिहाई कुरआन पढ़ूंगा। चुनान्चे, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से जिन्हें जम्अ़ होना था वहां जम्अ़ हो गए। फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ (या'नी सूरए इख़्लास) पढ़ी और वापस तशरीफ़ ले गए। हम एक दूसरे से कहने लगे : शायद आस्मान से कोई ख़बर आई है जिस की वजह से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए हैं। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : मैं ने तुम्हारे सामने तिहाई कुरआन पढ़ने का कहा था तो सुन लो कि येही सूरत तिहाई कुरआन के बराबर है।

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین...الخ، باب فضل قراءۃ قل ھو اللّٰہ احد، ص۴۰۵، الحدیث:۸۱۲)

तिलावत का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा "**मदनी इन्आ़मात**" में से दो **मदनी इन्आ़मात कुरआने पाक की तिलावत** के बारे में भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा **8** पर मदनी इन्आ़म नम्बर

21 है : "क्या आज आप ने **कन्ज़ुल ईमान** से कम अज़ कम तीन आयात (मअ तर्जमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ?" और सफ़ह़ा 3 पर **मदनी इन्आ़म** नम्बर 3 है : "क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुरसी, सूरतुल इख़्लास और **तस्बीहे फ़ातिमा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) पढ़ी ? नीज़ रात में सूरतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?"

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही
बस शौक़ मुझे ना'त व तिलावत का ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश, स.102)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

7 दुरूदे पाक पढ़ना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले बरकत, तरक़्क़िये मा'रिफ़त और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ुर्बत के लिये दुरूदो सलाम से बेहतर कोई ज़रीआ़ नहीं है। उठते बैठते, चलते फिरते, दिन हो या रात हमें अपने मोह़सिन व ग़म गुसार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम के फूल निछावर करते ही रहना चाहिये। यक़ीनन सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजने के बेशुमार फ़ज़ाइल व बरकात हैं जिन का इह़ाता करना मुमकिन नहीं, हुसूले षवाब की निय्यत से दुरूदे पाक की एक फ़ज़ीलत अ़र्ज़ करता हूं :

क़ियामत की दहशतों से नजात पाने का नुस्ख़ा

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कषरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।

(اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطاب ج ۲ ص ۴۷۱ حديث ۸۲۱۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उम्र में एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : उम्र में एक मरतबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ना फ़र्ज़ है और जल्सए ज़िक्र में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब, ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने । अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए तो हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये । अगर नामे अक़्दस लिया या सुना और **दुरूद शरीफ़** उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में इस के बदले का पढ़ ले । (बहारे शरीअ़त, जि.1 हिस्सा.3 स.533)

हर दम मेरी ज़बां पे दुरूदो सलाम हो

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَاسَیِّدَ الْمُرْسَلِیْنَ"

के तीस हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 30 मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 419 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मदनी पन्ज सूरह**" के सफ़ह़ा 165 पर है : (दुरूद शरीफ़ पढ़ने से) (1) अल्लाह तआ़ला के हुक्म की ता'मील होती है (2) एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर दस रह़मतें नाज़िल होती हैं (3) उस के दस दरजात बुलन्द होते हैं (4) उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं (5) उस के दस गुनाह मिटाए जाते हैं (6) दुआ़ से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना दुआ़ की क़बूलिय्यत का बाइ़ष है (7) दुरूद शरीफ़ पढ़ना नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का सबब है (8) दुरूद शरीफ़ पढ़ना गुनाहों की बख़्शिश का बाइ़ष है (9) दुरूद शरीफ़ के ज़रीए अल्लाह तआ़ला बन्दे के ग़मों को दूर करता है (10) दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाइ़ष बन्दा क़ियामत के दिन रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब ह़ासिल करेगा (11) दुरूद शरीफ़ तंग दस्त के लिये सदक़े के क़ाइम मक़ाम है (12) दुरूद शरीफ़ क़ज़ाए ह़ाजात का ज़रीआ़ है (13) दुरूद शरीफ़ की वजह से इस के पढ़ने वाले पर अल्लाह तआ़ला की रह़मतें नाज़िल होती हैं और फ़िरिश्ते उस के लिये (मग़फ़िरत की) दुआ़ करते हैं (14) दुरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वाले के लिये पाकीज़गी

और तहारत का बाइष है (15) दुरूद शरीफ़ से बन्दे को मौत से पहले जन्नत की खुश ख़बरी मिल जाती है (16) दुरूद शरीफ़ पढ़ना क़ियामत के ख़तरात से नजात का सबब है (17) दुरूद शरीफ़ पढ़ने से बन्दे को भूली हुई बात याद आ जाती है (18) दुरूद शरीफ़ मजलिस की पाकीज़गी का बाइष है और क़ियामत के दिन येह मजलिस बाइषे हसरत नहीं होगी (19) दुरूद शरीफ़ पढ़ने से फ़क्र दूर होता है (20) येह अमल बन्दे को जन्नत के रास्ते पर डाल देता है (21) दुरूद शरीफ़ पुल सिरात पर बन्दे की रोशनी में इज़ाफ़े का बाइष है (22) दुरूद शरीफ़ के ज़रीए बन्दा ज़ुल्मो जफ़ा से निकल जाता है (23) दुरूद शरीफ़ पढ़ने की वजह से बन्दा आस्मान और ज़मीन में क़ाबिले ता'रीफ़ हो जाता है (24) दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले की ज़ात, अमल, उम्र और बेहतरी के अस्बाब में बरकत होती है (25) दुरूद शरीफ़ रहमते खुदावन्दी के हुसूल का ज़रीआ है (26) दुरूद शरीफ़ महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दाइमी महब्बत और इस में ज़ियादत का सबब है और येह (महब्बत) ईमानी उक़ूद में से है जिस के बिग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं होता (27) दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم महब्बत फ़रमाते हैं (28) दुरूद शरीफ़ पढ़ना, बन्दे की हिदायत और उस की ज़िन्दा दिली का सबब है क्यूंकि जब वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता है और आप का ज़िक्र करता है तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है (29) दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का येह ए'ज़ाज़ भी है कि

सुलत़ाने अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में उस का नाम पेश किया जाता है और उस का ज़िक्र होता है (30) दुरूद शरीफ़ पुल सिरात़ पर षाबित क़दमी और (सलामती के साथ) गुज़र जाने का बाइष है। (جلاء الافہام ص ۲۴۶ تا ۲۵۳ ملتقطا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दम बदम सल्ले अ़ला

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बहुत ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता हूं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बता दीजिये कि कितना ह़िस्सा दुरूद ख़्वानी (خانی) के लिये मुक़र्रर कर दूं ? तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो। ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं अपने अवरादो वज़ाइफ़ का चौथाई ह़िस्सा दुरूद ख़्वानी (خانی) के लिये मुक़र्रर कर लूं ? तो सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो, अगर तुम चौथाई से ज़ियादा मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर ही होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं अपने अवरादो वज़ाइफ़ का निस्फ़ ह़िस्सा दुरूद ख़्वानी के लिये मुक़र्रर कर लूं ? फ़रमाया : तुम जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो और अगर तुम इस से भी ज़ियादा वक़्त मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर ही होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा :

मैं अपने अवरादो वज़ाइफ़ का दो तिहाई मुक़र्रर कर लूं ? फ़रमाया : तुम जितना चाहो वक़्त मुक़र्रर कर लो और अगर तुम इस से ज़ियादा वक़्त मुक़र्रर करोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर ही होगा । तो ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं अपने अवरादो वज़ाइफ़ का कुल ह़िस्सा दुरूद ख़्वानी ही में ख़र्च करूंगा ।" तो रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर ऐसा करोगे तो दुरूद शरीफ़ तुम्हारे तमाम फ़िक्रों और ग़मों को दूर करने के लिये काफ़ी हो जाएगा और तुम्हारे तमाम गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा ।

(جامع الترمذی ج ۴ کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع ص ۲۰۷ حدیث ۲۴۶۵ ملتقطا)

ह़दीषे पाक के इस ह़िस्से "**मैं कुल ह़िस्सा दुरूद ख़्वानी ही में ख़र्च करूंगा**" के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस का मत़लब येह है कि सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआ़एं छोड़ दूंगा, सब के बजाए दुरूद ही पढ़ूंगा क्यूंकि अपने लिये दुआ़एं मांगने से बेहतर येह है कि हर वक़्त आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को दुआ़एं दिया करूं । "**अगर ऐसा करोगे तो दुरूद शरीफ़ तुम्हारी तमाम फ़िक्रों और ग़मों को दूर करने के लिये काफ़ी हो जाएगा और तुम्हारे तमाम गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा**" या'नी अगर तुम ने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी दीनो दुन्या दोनों संभल जाएंगी, दुन्या में रंजो ग़म दफ़्अ़ होंगे, आख़िरत में गुनाहों की मुआ़फ़ी होगी । इसी बिना पर उ़-लमा फ़रमाते हैं कि जो तमाम दुआ़एं वज़ीफ़े छोड़ कर

हमेशा कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करे तो उसे बिग़ैर मांगे सब कुछ मिलेगा और दीनो दुन्या की मुश्किले ख़ुद ब ख़ुद ह़ल होंगी । आगे चल कर फ़रमाते हैं : शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फरमाते हैं कि मुझे अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) जब भी मदीने से वदाअ़ करते तो फ़रमाते कि सफ़रे ह़ज़ में फ़राइज़ के बा'द दुरूद से बढ़ कर कोई दुआ नहीं । अपने सारे अवक़ात दुरूद में घेरो और अपने को दुरूद के रंग में रंग लो ।

(मिरआतुल मनाजीह़ जि.2 स.103, 104)

दुरूदे पाक का आ़शिक़ मदनी मुन्ना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नूरुद्दीन शूनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने मुझे बताया कि मैं बचपन में शूनी (एक शहर का नाम है) में जानवर चराया करता था । मुझे रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने से इस क़दर मह़ब्बत थी कि मैं अपना खाना बच्चों को दे कर उन से कहता कि येह खा लो फिर हम सब मिल कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ेंगे । चुनान्चे, हम दिन का अकषर ह़िस्सा रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हुवे गुज़ार देते ।

(الطبقات الکبری للشعرانی، جز ۲، ص ۲۳۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुरूद शरीफ़ का सदक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने और शौक़े दुरूद बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने केलिये **मदनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कीजिये और हर मदनी माह की **10** तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये । तरगीब व तहरीस के लिये एक ईमान अफ़रोज़ **मदनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **505** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब (फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम के बाब) **"ग़ीबत की तबाहकारियां"** सफ़हा **61** पर है : **लत़ीफ़ाबाद** हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया : बा'ज़ लोगों की सोह़बत में बैठने की बिना पर मेरा ज़ेह्न ख़राब हो गया और मैं तीन साल तक **नियाज़ शरीफ़** और मीलाद शरीफ़ वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करता रहा। मुझे पहले **दुरूद शरीफ़** से बहुत शग़फ़ था (या'नी बेह़द दिल चस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत़ सोह़बत के सबब **दुरूदे पाक** पढ़ने का जज़्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार मैं ने **दुरूद**

शरीफ़ की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह जज़्बा दोबारा जागा और मैं ने कषरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सो गया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में **सब्ज़ गुम्बद** का दीदार हो गया और बे साख़्ता मेरी ज़बान से اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله जारी हो गया। सुब्ह़ जब उठा तो मेरे दिल के अन्दर हल चल मची हुई थी, मैं इस सोच में पड़ गया कि आख़िर ह़क़ का रास्ता कौन सा है? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तर्बिय्यत का **मदनी क़ाफ़िला** हमारे घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी, मैं चूंकि मुतज़बज़िब (Confused) था इस लिये तलाशे ह़क़ के जज़्बे के तह़्त **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफिर बन गया। मैं ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज़ इमामे वाले मदनी क़ाफ़िले वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी क़िस्म की तन्क़ीद की न ही त़न्ज़ किया बल्कि अजनबिय्यत ही महसूस न होने दी। **अमीरे क़ाफ़िला** ने **मदनी इन्आ़मात** का तआ़रुफ़ करवाया और इस के मुत़ाबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। मैं ने **मदनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ालआ़ किया तो चोंक उठा क्यूंकि मैं ने इतने ज़बरदस्त तर्बिय्यती मदनी फूल ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और **मदनी इन्आ़मात** की बरकत से मुझ पर रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल हो गया। मैं ने मदनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ़ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अ़क़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से **तौबा**

करता हूं और **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रहत व मसर्रत का इज़्हार किया। दूसरे दिन **30** रूपे की **नुक्ती** (**बूंदी** या'नी बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की त़रह़ होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौषे आ'ज़म शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़्सीम की। मैं **35** साल से **सांस के मरज़** में मुब्तला था, कोई रात बिग़ैर तक्लीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ मेरी सीधी दाढ़ में तक्लीफ़ थी जिस के बाइ़ष सह़ीह़ त़रह़ खा भी नहीं सकता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तक्लीफ़ न हुई और मैं सीधी दाढ़ से बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के खाना भी खा रहा हूं। मेरा दिल गवाही देता है कि **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** ह़क़ हैं और मेरा ह़ुस्ने ज़न है कि **दा'वते इस्लामी** का मदनी माहोल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

छाए गर शैत़नत, तो करें देर मत — क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
सोह़बते बद में पड़ कर अ़क़ीदा बिगड़ — गर गया हो चले, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

18 दुरूदो सलाम और इन के फ़ज़ाइल

1 शबे जुमुआ़ का दुरूद

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ
الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات علٰی سَیِّدِ السّادات،ص ۱۵۱ ملخصًا)

2 तमाम गुनाह मुआ़फ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (المرجع السابق،ص ۶۵)

3 रह़मत के सत्तर दरवाज़े

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع،ص ۲۷۷)

4 छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ
عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का षवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص ۱۴۹)

5 क़ुर्बे मुस्त़फ़ा

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع، ص ۱۲۵)

6 सब से अफ़्ज़ल दुरूदे पाक

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मुझे ह़ज़रते का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिले। कहने लगे : क्या तुम्हें वोह तोह़फ़ा न दूं जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है ! मैं ने कहा : क्यूं नहीं ! आप ने फ़रमाया कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें (आप पर) सलाम भेजना सिखा दिया लेकिन हम आप पर और अहले बैत पर दुरूद कैसे भेजें तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : यूं कहो !

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ
عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ
اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی
اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

(صحیح البخاری، ج۲، ص۴۲۹، حدیث ۳۳۷۰)

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अ़ल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सब दुरूदों से अफ़्ज़ल दुरूद वोह है जो सब आ'माल से अफ़्ज़ल (अ़मल) या'नी नमाज़ में मुक़र्रर किया गया है (या'नी दुरूदे इब्राहीमी)। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि.6, स.183)

7 बख़्शिश व मग़फ़िरत

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کُلَّمَا ذَکَرَہُ الذَّاکِرُوْنَ
وَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِکْرِہِ الْغَافِلُوْنَ

किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा और ह़ाल दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस दुरूदे पाक की बरकत से मेरी बख़्शिश फ़रमा दी। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص۸۱ ملخصًا)

8 माल में ख़ैरो बरकत

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ وَعَلَی
الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

साहिबे रूहुल बयान फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा उस का मालो दौलत बढ़ता रहेगा ।

(تفسیر رُوْحُ الْبَیَان، الاحزاب تحت الآیۃ: ۵۶، ج۷، ص ۲۳۳)

9 क़ुव्वते हाफ़िज़ा मज़बूत हो

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِیِّ
الْکَامِلِ وَعَلٰی اٰلِہٖ کَمَا لَانِھَایَۃَ لِکَمَالِکَ وَعَدَدَ کَمَالِہٖ

अगर किसी शख़्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़रिब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कषरत से पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा ।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص ۱۹۱، ۱۹۲ ملتقطاً)

10 दीनो दुन्या की ने'मतें हासिल कीजिये

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰہِ وَاَفْضَالِہٖ

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीनो दुन्या की बे शुमार ने'मतें हासिल होंगी ।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص ۱۵۱)

11 दुरूदे शफ़ाअ़त

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है । (اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب، ج٢،ص٣٢٩،حديث:٣٠)

12 आबे कौषर से भरा प्याला

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَ اَوْلَادِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَصْهَارِهٖ وَاَنْصَارِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ وَمُحِبِّيْهِ وَاُمَّتِهٖ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हौज़े कौषर से भरा पियाला पीना चाहे वोह इस दुरूदे पाक को पढ़े । (الشفاء،الجزء الثانی ص٧٢)

13 ग्यारह हज़ार दुरूद का षवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ صَلٰوةً اَنْتَ لَهَا اَهْلٌ وَّهُوَ لَهَا اَهْلٌ

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक का एक मरतबा पढ़ना ग्यारह हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है ।

(اَفْضَلُ الصَّلَوَات عَلٰى سَيِّدِ السَّادَات،ص١٥٣)

14 हर क़िस्म के फ़ित्ने से नजात के लिये

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ قَدْ ضَاقَتْ حِیْلَتِیْ اَدْرِکْنِیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ

सय्यिद इब्ने आ़बिदीन عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِین फ़रमाते हैं कि मैं ने इसे एक फ़ितनए अ़ज़ीम में पढ़ा जो दिमश्क़ में वाक़ेअ़ हुवा, इसे अभी दो सो मरतबा भी नहीं पढ़ा था कि मुझे एक शख़्स ने आ कर इत्तिलाअ़ दी कि फ़ितना ख़त्म हो गया। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص ۱۵۴)

15 एक लाख दुरूदे पाक का षवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ النُّوْرِ الذَّاتِیِّ وَالسِّرِّ السَّارِیْ فِیْ سَائِرِ الْاَسْمَآءِ وَالصِّفَاتِ

इस दुरूदे पाक को एक बार पढ़ा जाए तो एक लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का षवाब मिलता है नीज़ अगर किसी को कोई ह़ाजत दरपेश हो तो येह दुरूदे पाक पांच सो बार पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ाजत पूरी होगी। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص ۱۱۳)

16 दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़रूई

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ مَا فِیْ جَمِیْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ کُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

कुरआने करीम की तिलावत के बा'द जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़रू रहेगा। (تفسیر رُوحُ البَیان، الاحزاب تحت الآیۃ:۵۶، ج۷، ص ۲۳۴)

17 चौदह हज़ार दुरूदे पाक का षवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ كَمَالِ اللّٰهِ وَكَمَا يَلِيْقُ بِكَمَالِهٖ

इस दुरूद शरीफ़ को सिर्फ़ एक मरतबा पढ़ने से चौदह हज़ार दुरूदे पाक का षवाब मिलता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات، ص ۱۵۰)

18 दुरूदे तुनज्जीना

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ
جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِيْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ
الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا
بِهَا اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى الْغَايَاتِ
مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِي الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

शैख़ मजदुद्दीन फ़ीरोज़ाबादी साहिबे क़ामूस ने शैख़ हसन बिन अ़ली अस्वानी के ह़वाले से बयान किया कि जो शख़्स येह दुरूदे पाक (**दुरूदे तुनज्जीना**) किसी भी मुश्किल, आफ़त या मुसीबत में एक हज़ार मरतबा पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस मुश्किल को आसान फ़रमा देगा और उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा।

(مَطَالِعُ الْمَسَرَّات، ص ۴۷۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

8 मुख़्तलिफ़ सुन्नतों पर अ़मल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कितने ही काम ऐसे हैं जो हम रोज़ाना और बार बार करते हैं मषलन कपड़े पहनना, चलना फिरना, सोना जागना, खाना खाना वग़ैरा, ज़रा सोचिये ! अगर हम इन कामों को सुन्नत के मुताबिक़ करें तो हमें सुन्नत पर अ़मल का षवाब भी मिलेगा और हमारे काम भी मुकम्मल हो जाएंगे। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (مشکاۃ المصابیح، ج۱ص۵۵حدیث۱۷۵)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**नेकी की दा'वत**" के सफ़ह़ा 113 पर लिखते हैं : जब भी किसी सुन्नत वग़ैरा पर अ़मल करने का मौक़अ़ हो उस वक़्त दिल में निय्यत ह़ाज़िर होनी ज़रूरी है। मषलन कपड़े पहनते वक़्त पहले सीधी आस्तीन में हाथ डाला, या उतारते वक़्त उल्टी आस्तीन से पहल की, इसी त़रह़ जूते पहनने उतारने में ह़स्बे आ़दत येही तरकीब बनी येह सब सुन्नतें हैं मगर अ़मल करते वक़्त **सुन्नत** पर अ़मल की बिल्कुल ही **निय्यत** दिल में नहीं थी तो येह अ़मल "**इ़बादत**" नहीं "**आ़दत**" कहलाएगा, सुन्नत का षवाब नहीं मिलेगा। **दा'वते इस्लामी** के मातह़त चलने वाले "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" का **निय्यत** के मुतअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती **फ़तवा** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

बेशक **बिग़ैर निय्यत** के किसी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता बल्कि इस त़रह़ येह (बिला निय्यत की जाने वाली) इ़बादतें "आ़दतें" बन जाती हैं। किसी **अ़मले ख़ैर में निय्यत** का मत़लब येह है कि **जो अ़मल किया जा रहा है दिल उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और वोह अ़मल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये किया जा रहा हो**, इस निय्यत से **इ़बादत** और आ़दत में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है। इस से पता चला कि दिल का मुतवज्जेह होना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पेशे नज़र होना ही **निय्यत** है और इसी से **इ़बादत** और **आ़दत** में फ़र्क़ होता है। लिहाज़ा अगर **इ़बादत** में **निय्यत** कर ली जाए तो षवाब मिलता है और अगर **निय्यत** न की जाए तो अ़मल आ़दत बन जाता है और इस पर षवाब भी नहीं मिलता जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं :

اَلنِّيَّةُ لُغَةً:اَلْقَصْدُ وَشَرْعاً تَوَجُّهُ الْقَلْبِ نَحْوَالْفِعْلِ اِبْتِغَاءَ لِوَجْهِ اللّٰهِ وَالْقَصْدُ بِهَا تَمْيِيْزُالْعِبَادَةِ عَنِ الْعَادَةِ

या'नी निय्यत के लुग़वी मा'ना हैं : "क़स्दो इरादा" और शरई मा'ना हैं : जो अ़मल करने लगे हैं, दिल को उस की त़रफ़ मुतवज्जेह करना और वोह अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जा रहा हो और निय्यत से "**इ़बादत**" और **आ़दत**" में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है। (مرقاۃ المفاتیح، ج۱، ص۹۴) लेकिन इस के साथ येह याद रहे कि बहुत से आ'माल ऐसे हैं कि जिन में हम मह़सूस करते हैं कि येह मह़ज़ आ़दत के त़ौर पर कर रहे हैं ह़ालांकि इस में भी "**इ़बादत की निय्यत**" मौजूद होती है और इस का एह़सास इस लिये कम होता है कि इब्तिदाअन या बत़ौरे ख़ास जिस क़दर तवज्जोह दी जाती है वोह बारहा अ़मल करने की वजह से बरक़रार नहीं रहती। हां अगर अस्लन (या'नी बिल्कुल) ही निय्यत कुछ न हो तो इस पर वाक़ेई कोई षवाब नहीं। وَاللّٰهُ تَعالٰی وَرَسُوْلُهٗ اَعلَم صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सुन्नत पर अ़मल का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़्दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दीनार और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी ह़ैषिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया कि "तू ने मेरे प्यारे ह़बीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" तो क्या जवाब दूंगा !

(مُلَخَّص از لواقح الانوار ص ۳۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे अस्लाफ़ सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने एक दीनार (या'नी सोने की अशरफ़ी) प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत मिस्वाक पर क़ुरबान कर दिया और आह ! आज हम अपने आप को अगर्चे बढ़ चढ़ कर आ़शिक़े रसूल कहलवाते तो हैं मगर ह़ाल येह है कि हम में सुन्नतों पर अ़मल का कोई जज़्बा नहीं होता।

मदनी इन्आ़मात और सुन्नतों पर अ़मल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा "**मदनी इन्आ़मात**" में सुन्नतो पर अ़मल के बारे में भी सुवालात शामिल हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा **5** पर **मदनी इन्आ़म नम्बर 11** है : "क्या आज आप ने सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर मअ़ पर्दे में पर्दा, खाने पीने के दौरान मिट्टी के बरतन इस्ति'माल फ़रमाए ? नीज़ पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाने (या'नी भूक से कम खाने) की कोशिश फ़रमाई ? (ज़ह़े नसीब ! रोज़ाना कम अज़ कम **12** मिनट पेट पर पथ्थर बांधने की सआ़दत नसीब हो जाए) और सफ़ह़ा **7** पर **मदनी इन्आ़म नम्बर 17** है : क्या आज आप ने (प्लास्टिक की नहीं) खजूरी चटाई पर या न होने की सूरत में ज़मीन पर सोते वक़्त सिरहाने (और सफ़र में भी) सुन्नत के मुत़ाबिक़ आईना, सुर्मा, कंघा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल की शीशी और क़ैंची साथ रखी ? नीज़ फ़राग़त के बा'द बिस्तर और लिबास तह कर के रखा ?" और सफ़ह़ा **16** पर **मदनी इन्आ़म** नम्बर **50** है : "क्या आज आप का सारा दिन (नोकरी या दुकान वग़ैरा पर नीज़ घर के अन्दर भी) इमामा शरीफ़ (और तेल लगाने की सूरत में सरबन्द भी) ज़ुल्फ़ें (अगर बढ़ती हो तो) एक मुश्त दाढ़ी सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिन्डली तक (सफ़ेद) कुर्ता सामने जेब में नुमायां मिस्वाक और टख़नों से ऊंचे पाईंचे रखने का मा'मूल रहा ?"

सुन्नतें सीखिये

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ **“101 मदनी फूल”**, **“163 मदनी फूल”**, **बहारे शरीअ़त”** हिस्सा **16** (सफ़्ह़ात **312**) नीज़ **120** सफ़्ह़ात की किताब **“सुन्नते और आदाब”** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सुन्नत के मुताबिक़ मैं हर एक काम करूं काश
तू पैकरे सुन्नत मुझे अल्लाह बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स.106)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

9 इमामा शरीफ़ बांधना और खोलना

मर्दों को सर पर इमामा शरीफ़ बांधना सुन्नत है और इस के बहुत से तिब्बी फ़वाइद भी हैं लेकिन बंधा बंधाया इमामा शरीफ़ सर पर रख लेने और उतार कर रख देने के बजाए अगर बांधते वक़्त सुन्नत के मुताबिक़ एक एक पेच कर के बांधा जाए और इसी त़रह़ खोला जाए तो ब हुक्मे अह़ादीष हर बार बांधते हुवे हर पेच पर एक नेकी और एक नूर मिलेगा और हर बार उतारने में एक एक गुनाह उतरेगा । (ماخوذ از کنز العمال ج۱۵، ص۱۳۲، الحدیث ۴۱۱۲۶،۴۱۱۳۸) और बार बार हवा लगने की वजह से اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बदबू भी दूर होगी।

लिबास सुन्नतों से हो आरास्ता और
इमामा हो सर पर सजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.86)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

10 तौबा करना

सच्ची तौबा ऐसी आसान नेकी है जो हर क़िस्म के गुनाह को इन्सान के नामए आ'माल से धो डालती है, चुनान्चे, सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जिस के ज़िम्मे कोई गुनाह न हो।

(السنن الکبریٰ للبیہقی، الحدیث: ۲۰۵۶۱، ج۱۰، ص۲۵۹)

जन्नत में दाख़िला

तौबा करने वाला ख़ुश नसीब, गुनाहों की मुआ़फ़ी के साथ साथ दीगर फ़ज़ाइल मषलन इन्आ़माते जन्नत का भी मुस्तह़िक़ हो जाता है, पारह 28 सूरए तह़रीम की आयत 8 में है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(پ۲۸، التحریم: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें बहें।

तौबा करना मुश्किल काम नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सच्ची तौबा की सिर्फ़ तीन शराइत़ हैं : (1) गुनाह को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी समझ कर इस पर नादिम हो (2) इसे आइन्दा न करने का पुख़्ता इरादा करे और (3) इस गुनाह की तलाफ़ी करे (मषलन नमाज़ें क़ज़ा की थीं

तो अब हिसाब लगा कर अदा करे, किसी मुसलमान को बिला इजाज़ते शरई अज़िय्यत दी थी तो उस से मुआ़फ़ी मांगे और किसी का क़र्ज़ दबा लिया था तो वापस करे और मुआ़फ़ी भी मांगे)

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या जि.21 स.121)

मा'लूम हुवा कि सच्ची तौबा करना कोई मुश्किल काम नहीं बस निय्यत साफ़ होनी चाहिये, मगर हमारी बहुत बड़ी ता'दाद तौबा जैसी आसान नेकी में सुस्ती व ग़फ़्लत का शिकार है ह़ालांकि इस में गुनाहों की मुआ़फ़ी और जन्नत की ह़क़दारी जैसे फ़वाइद मौजूद हैं। तौबा में ताख़ीर का एक सबब येह भी होता है कि नफ़्सो शैत़ान इस त़रह़ इन्सान का ज़ेह्न बनाते हैं कि अभी तो बड़ी उ़म्र पड़ी है बा'द में तौबा कर लेना..या.. अभी तुम जवान हो बुढ़ापे में तौबा कर लेना..या.. नोकरी से रिटायर्ड होने के बाद तौबा कर लेना। चुनान्चे, येह "नादान" नफ़्सो शैत़ान के मश्वरे पर अ़मल करते हुवे तौबा से महरूम रहता है। ऐसे इस्लामी भाई को इस त़रह़ ग़ौर करना चाहिये कि जब मौत का आना यक़ीनी है और मुझे अपनी मौत के आने का वक़्त भी मा'लूम नहीं तो तौबा जैसी सआ़दत को कल पर मौक़ूफ़ करना नादानी नहीं तो और क्या है? जिस गुनाह को छोड़ने पर आज मेरा नफ़्स तय्यार नहीं हो रहा कल इस की आ़दत पुख़्ता हो जाने पर मैं इस से अपना दामन किस त़रह़ बचाऊंगा? और इस बात की भी क्या ज़मानत है कि मैं बुढ़ापे में पहुंच पाऊंगा या नोकरी से रीटायर्ड होने तक मैं ज़िन्दा रहूंगा? ह़दीषे पाक में है कि "तौबा में ताख़ीर करने से बचो क्यूंकि मौत अचानक आ जाती है।" (الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، الحدیث ۸۱، ج ۴، ص ۸۴)

फिर मौत तो किसी ख़ास उ़म्र की पाबन्द नहीं है, बच्चा हो या बुढ्ढा, जवान हो या अधेड़ उ़म्र येह बिला इम्तियाज़ सब को ज़िन्दगी की रौनक़ों के बीच से उठा कर क़ब्र के गढ़े में पहुंचा देती है, येह वोह है कि जब इस के आने का वक़्त आ जाए तो कोई ख़ुशी या ग़म, कोई मसरूफ़िय्यत या किसी क़िस्म के अधूरे काम इस की राह में रुकावट नहीं बन सकते, एक दिन मुझे भी मौत आएगी और मुझे ज़ेरे ज़मीन दफ़्न होना पड़ेगा, अगर मैं बिग़ैर तौबा के मर गया तो मुझे कितनी ह़सरत व नदामत का सामना करना पड़ेगा, अभी मोहलत मयस्सर है लिहाज़ा मुझे फ़ौरन **तौबा** कर लेनी चाहिये ।

गुलूकार की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक रोज़ कूफ़ा के क़रीब किसी मक़ाम से गुज़र रहे थे, एक घर के पास **ज़ाज़ान** नामी मश्हूर गवय्या (या'नी गुलूकार) निहायत ही सुरीली आवाज़ में गा रहा था और कुछ औबाश लोग शराब के नशे में मस्त गाने बाजे की धूनों पर झूम रहे थे । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : कितनी प्यारी आवाज़ है ! अगर येह आवाज़ क़िराअते क़ुरआने करीम के लिये इस्ति'माल होती तो कुछ और बात होती ! येह फ़रमा कर अपनी मुबारक चादर उस गवय्ये (Singer) के सर पर डाली और तशरीफ़ ले गए । **ज़ाज़ान** ने लोगों से पूछा : येह कौन साह़िब थे ? लोगों ने बताया : मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । पूछा : उन्हों ने क्या फ़रमाया ? कहा : फ़रमा रहे थे : कितनी प्यारी आवाज़ है ! अगर ये आवाज़ क़िराअते

कुरआने करीम के लिये इस्ति'माल होती तो कुछ और बात होती ! येह सुन कर उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, वोह उठा और उठ कर उस ने अपना बाजा ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा, बाजे के परखचे उड़ गए, फिर रोता हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को गले से लगा लिया और ख़ुद भी रोने लगे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की मैं उस से क्यूं मह़ब्बत न करूं ! ज़ाज़ान ने गाने बाजे से तौबा कर के ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत इख़्तियार कर ली और कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल की और उ़लूमे इस्लामिय्या में ऐसा कमाल ह़ासिल किया कि बहुत बड़े इमाम बन गए। (مرقاۃ المفاتیح ج ۴ ص ۷۰۰ تحت الحدیث ۲۱۹۹، غنیۃ الطالبین ج ۱ ص ۲۶۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तौबा का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा "**मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म तौबा के बारे में भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा **6** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **16** है : "क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से क़ब्ल) सलातुत्तौबा

पढ़ कर दिन भर के बल्कि साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ ख़ुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ौरन तौबा कर के आइन्दा वोह गुनाह न करने का अ़हद किया ?"

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
पए ताजदारे हरम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

11 अज़ान देना

अज़ान शआ़इरे इस्लाम में से है और अज़ान देने की बड़ी फ़ज़ीलत है, हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुअज़्ज़िन की आवाज़ की इन्तिहा तक उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है, उस की आवाज़ जो ख़ुश्को तर चीज़ सुनती है उस की तस्दीक़ करती है और उसे अपने साथ नमाज़ पढ़ने वालों की मिष्ल षवाब मिलता है।

(سنن نسائی، کتاب الاذان، باب رفع الصوت بالاذان، ج۲، ص۱۳)

मोती के गुम्बद

रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : मैं जन्नत में गया, उस में **मोती के गुम्बद** देखे उस की ख़ाक मुश्क की है। पूछा : ऐ जिब्रईल ! येह किस के वासिते हैं ? अ़र्ज़ की : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के मुअज़्ज़िनों और इमामों के लिये। (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص۲۵۵ حدیث۴۱۷۹)

आज कल अकषर मसाजिद में मुअज़्ज़िन मुक़र्रर होते हैं वहां पर मुअज़्ज़िन से अज़ान देने की इजाज़त मांग कर उसे आज़माइश में न डाला जाए अगर वोह ख़ुद पेशकश करे तो जुदा बात है, बहर ह़ाल जो अज़ान दे सकता हो उसे चाहिये कि जब जब मौक़अ़ मिले इस फ़ज़ीलत के हुसूल में कोताही न करे मषलन अगर कोई शख़्स शहर के अन्दर घर में नमाज़ पढ़े तो वहां की मस्जिद की अज़ान उस के लिये काफ़ी है मगर अज़ान कह लेना मुस्तह़ब है। (رَدُّالْمُحتار ج۲ ص ۷۸،۶۲) इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स शहर के बाहर या गाऊं, बाग़ या खेत वग़ैरा में है और वोह जगह क़रीब है तो गाऊं या शहर की अज़ान काफ़ी है फिर भी अज़ान कह लेना बेहतर है और जो क़रीब न हो तो काफ़ी नहीं। क़रीब की ह़द येह है कि यहां की अज़ान की आवाज़ वहां पहुंचती हो। (عالمگیری ج۱ ص ۵۴)

मदनी इन्आ़मात और अज़ान

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े "**मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म अज़ान के बारे में भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 30 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा 21 पर मदनी इन्आ़म नम्बर 64 है : क्या आप ने अज़ान और इस के बा'द की दुआ़, क़ुरआन शरीफ़ की आख़िरी दस सूरतें, दुआ़ए क़ुनूत, अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और कोई एक दुआ़ए माषूरा येह सब मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ को (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये हैं?

12 अज़ान का जवाब देना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**फ़ैज़ाने अज़ान**" के सफ़ह़ा 4 पर **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार फ़रमाया : ऐ औ़रतो ! जब तुम बिलाल को अज़ान व इक़ामत कहते सुनो तो जिस त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर कलिमे के बदले **एक लाख** नेकियां लिखेगा और **एक हज़ार** दरजात बुलन्द फ़रमाएगा और एक हज़ार गुनाह मिटाएगा। ख़वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : येह तो औ़रतों के लिये है, मर्दों के लिये क्या है ? फ़रमाया : मर्दों के लिये दुगना।

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۵، ص ۷۵)

3 करोड़ 24 लाख नेकियां कमाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर कुरबान ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, अपने दरजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है। मगर अफ़्सोस ! इतनी आसानियों के बा वुजूद भी हम ग़फ़्लत का शिकार रहते हैं। पेश कर्दा ह़दीषे मुबारक में **जवाबे अज़ान** की जो फ़ज़ीलत बयान हुई है उस की तफ़्सील मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

"اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر" येह दो कलिमात हैं इस त़रह़ पूरी अज़ान में **15 कलिमात** हैं। अगर कोई इस्लामी बहन एक अज़ान का जवाब दे या'नी मुअज़्ज़िन जो कहता जाए इस्लामी बहन भी

दोहराती जाए तो उस को 15 लाख नेकियां मिलेंगी, 15 हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और 15 **हज़ार गुनाह** मुआ़फ़ होंगे और इस्लामी भाइयों के लिये येह सब दुगना है। फ़ज्र की अज़ान में दो मरतबा اَلصَّلٰوۃُ خَیۡرٌ مِّنَ النَّوۡم है तो फ़ज्र की अज़ान में 17 **कलिमात** हुवे और यूं फ़ज्र की अज़ान के जवाब में 17 लाख नेकियां, 17 हज़ार दरजात की बुलन्दी और 17 हज़ार गुनाहों की मुआ़फ़ी मिली और इस्लामी भाइयों के लिये दुगना। इक़ामत में दो मरतबा قَدۡ قَامَتِ الصَّلٰوۃ भी है यूं इक़ामत में भी 17 कलिमात हुवे तो इक़ामत के जवाब का षवाब भी फ़ज्र की अज़ान के जवाब जितना हुवा।

अल ह़ासिल अगर कोई इस्लामी बहन एहतिमाम के साथ रोज़ाना पांचों नमाज़ों की अज़ानों और पांचों इक़ामतों का जवाब देने में कामयाब हो जाए तो उसे रोज़ाना एक करोड़ बासठ लाख नेकियां मिलेंगी, एक लाख बासठ हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और एक लाख बासठ हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे और इस्लामी भाई को दुगना या'नी 3 करोड़ 24 लाख नेकियां मिलेंगी, 3 लाख 24 हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और 3 लाख 24 हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि एक साह़िब जिन का बज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की मौजूदगी में फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि

अल्लाह तआ़ला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग **मुतअ़ज्जिब** हुवे। क्यूंकि बज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे, एक सहा़बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के घर गए और उन की बेवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये? उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे। (تاریخ دِمشق لابن عَساکِر، ج ۴۰، ص ۴۱۲، ۴۱۳ ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गुनहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़्व तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा

मुअज़्ज़िन साहि़ब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें। اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر दोनों मिल कर (बिग़ैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से) एक कलिमा हैं दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ते की मिक़्दार येह है कि जवाब देने वाला जवाब दे ले, सक्ते का तर्क मकरूह है और ऐसी अज़ान का इआ़दा मुस्तह़ब है। (دُرِّمختار ورَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۶۶)

जवाब देने वाले को चाहिये कि जब मुअज़्ज़िन साहिब اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर सक्ता करें (या'नी ख़ामोश हों) उस वक़्त اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कहे। इसी त़रह़ दीगर कलिमात का जवाब दे। जब मुअज़्ज़िन पहली बार

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे तो सुनने वाला येह कहे :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه ***तर्जमा :*** *आप पर दुरूद हो या रसूलल्लाह* (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) (رَدُّالْمُحتار، ج۲، ص۸۴)

जब दोबारा कहे तो सुनने वाला येह कहे :

قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه *या रसूलल्लाह ! आप से मेरी आंखों की ठन्डक है*

और हर बार अंगूठों के नाख़ुन आंखों से लगाए, आख़िर में कहे :

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ (اَيْضًا) *ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी सुनने और देखने की कुव्वत से मुझे नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमा।*

जो ऐसा करे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे।

حَیَّ عَلَی الْفَلَاح और حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ के जवाब में (चारों बार) لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे और बहेतर येह है कि दोनों कहे (या'नी मुअज़्ज़िन ने जो कहा वोह भी कहे और لَاحَوْل भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :

مَاشَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَالَمْ يَشَأْلَمْ يَكُنْ *तर्जमा : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा।*

(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۲، عالمگیری ج۱ ص۵۷)

اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم के जवाब में कहे :

صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ

तर्जमा : तू सच्चा और नेकूकार है और तू ने ह़क़ कहा है।

(دُرِّمُختار وردُّالمحتار ج ۲ ص ۸۳)

इक़ामत का जवाब मुस्तह़ब है। इस का जवाब भी इसी त़रह़ है फ़र्क़ इतना है कि قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃ के जवाब में कहे :

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को क़ाइम रखे जब तक आस्मान और ज़मीन हैं

(बहारे शरीअ़त. जि.1 स.473 عالمگیری ج ۱ ص ۵۷)

जवाबे अज़ान का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े **"मदनी इन्आ़मात"** में एक मदनी इन्आ़म अज़ान का जवाब देने के बारे में भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"72 मदनी इन्आ़मात"** के सफ़ह़ा **3** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **4** है : क्या आज आप ने बात चीत, चलत फिरत (چلت پھرت), उठाना रखना, फ़ोन पर गुफ़्तगू, स्कूटर कार चलाना वग़ैरा तमाम काम काज मौक़ूफ़ कर के अज़ान व इक़ामत का जवाब दिया? (अगर पहले से खा पी रहे हों और अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो खाना पीना जारी रख सकते हैं)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

13 अज़ान के बा'द की दुआ पढ़ना

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुअज़्ज़िन की अज़ान सुन कर येह कहा :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

وَ رَسُوْلُهٗ رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا (1)

तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول...الخ، ص ۲۰۴، الحدیث: ۳۸۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

14 वुज़ू के शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ पढ़ना

अगर हम वुज़ू के शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ पढ़ लें तो इस काम में चन्द सेकन्ड्ज़ लगेंगे लेकिन जब तक हमारा वुज़ू रहेगा हमारे नामए आ'माल में नेकियां लिखी जाती रहेंगी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

(1) **तर्जमा :** मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और बेशक मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब होने, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रसूल होने और इस्लाम के दीन होने से राज़ी हूं।

ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जब तुम वुज़ू करो तो بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ कह लिया करो जब तक तुम्हारा वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे फ़िरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे। (المعجم الصغیر، جزء۱، ص ۷۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

15 वुज़ू के बा'द कलिमए शहादत पढ़ना

वुज़ू करने के बा'द अगर हम आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर कलिमए शहादत اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ पढ़ लें तो हमारे लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाएंगे, ह़दीषे पाक में है : जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये **जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं** जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो। (سُنَنِ دارمی، ج۱، ص۱۹۶، حدیث ۷۱۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

16 बा वुज़ू रहना

हर वक़्त बा वुज़ू रहना बड़ी सआ़दत की बात है और येह ज़ियादा मुश्किल भी नहीं, सिर्फ़ येह करना होगा कि जब भी वुज़ू टूट जाए दोबारा कर लिया जाए, रफ़्ता रफ़्ता आ़दत बन ही जाएगी लेकिन हर बार निय्यत करना न भूलियेगा। **मदीने** के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया :

बेटा ! अगर तुम हमेशा बा वुज़ू रहने की इस्तिताअ़त रखो तो ऐसा ही करो क्यूंकि मलकुल मौत जिस बन्दे की रूह़ ह़ालते वुज़ू में क़ब्ज़ करता है उस के लिये शहादत लिख दी जाती है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۲۹ حدیث ۲۷۸۳)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमेशा बा वुज़ू रहना मुस्तह़ब है।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि.1 स.702)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"अह़मद रज़ा" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़र वक़्त बा वुज़ू रहने के सात फ़ज़ाइल

इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बा'ज़ आ़रिफ़ीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : जो हमेशा बा वुज़ू रहे **अल्लाह** तआ़ला उस को सात फ़ज़ीलतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए (1) मलाइका उस की सोह़बत में रग़बत करें (2) क़लम उस की नेकियां लिखता रहे (3) उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करें (4) उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो (5) जब सोए **अल्लाह** तआ़ला कुछ फ़िरिश्ते भेजे कि जिन्न व इन्स के शर से उस की ह़िफ़ाज़त करें (6) सकराते मौत उस पर आसान हो (7) जब तक बा वुज़ू हो अमाने इलाही में रहे। (اَیْضاً ص۷۰۲، ۷۰۳)

बा वुज़ू रहने का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े "**मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म बा वुज़ू रहने के बारे में भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल

मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा **13** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **39** है : क्या आज आप ह़त्तल इम्कान दिन का अकषर ह़िस्सा बा वुज़ू रहें ?

दे शौक़े तिलावत दे ज़ोके़ इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.**84**)

17 बा वुज़ू सोना

अगर सोने से पहले वुज़ू कर लिया जाए तो रात भर एक फ़िरिश्ता हमारे लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करता रहेगा और हमें रोज़ेदार की सी इ़बादत का षवाब भी मिलेगा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने अजसाम को ख़ूब पाक रखा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें पाक फ़रमा देगा क्यूंकि जो शख़्स पाक रहते हुवे रात गुज़ारता है तो उस के पहलू में एक फ़िरिश्ता भी रात गुज़ारता है और रात की कोई घड़ी ऐसी नहीं गुज़रती जिस में वोह येह दुआ़ न करता हो : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की मग़फ़िरत फ़रमा दे क्यूंकि येह बा वुज़ू सो रहा है। (طبرانی اوسط، الحدیث ۵۰۵۷، ج۴، ص۶۲)

एक और **ह़दीषे पाक** में है : बा वुज़ू सोने वाला रोज़ा रख कर इ़बादत करने वाले की त़रह़ है। (کنز العمال ج۹ ص۱۲۳ حدیث ۲۵۹۹۴)

18 मस्जिदें आबाद करना

मस्जिद में नमाज़ पढ़ना, तिलावत करना, अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना, इल्मे दीन और मुस्तफ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सीखना सिखाना, येह सब मस्जिद को आबाद करने वाले काम हैं, बड़े ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो मस्जिदों को आबाद रखते हैं और इस बिशारते नबवी के हक़दार बनते हैं कि मस्जिद हर परहेज़गार का घर है और जिस का घर मस्जिद हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रहमत, रिज़ा और पुल सिरात से बा हिफ़ाज़त गुज़ार कर अपनी रिज़ा वाले घर जन्नत की ज़मानत देता है। (مجمع الزوائد، کتاب الصلوٰۃ، باب لزوم المسجد، ج ۲، ص ۱۳۴، الحدیث: ۲۰۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! "दा'वते इस्लामी" मस्जिदों से दूर हो जाने वाले इस्लामी भाइयों को फिर से मस्जिद का रुख़ करवाने के लिये भी कोशां है ताकि हमारी मसाजिद आबाद रह सकें, आइये! आप भी दा'वते इस्लामी की "**मस्जिद भरो तहरीक**" का हिस्सा बन जाइये और मस्जिद को आबाद रखने के लिये अपना हिस्सा डालिये। मस्जिद आबाद रखने वालों से **अल्लाह** तआला कितना राज़ी होता है इस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाइये कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई बन्दा ज़िक्र व नमाज़ के लिये मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ऐसे ख़ुश होता है जैसे लोग अपने गुमशुदा शख़्स की अपने हां आमद पर ख़ुश होते हैं। (سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب لزوم المساجد...الخ، ج ۱، ص ۴۳۸، الحدیث: ۸۰۰)

मस्जिद भरो तहरीक जारी रहेगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

19 मस्जिद से महब्बत करना

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मस्जिद से महब्बत करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपना महबूब बना लेता है।

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوٰۃ، ج۲، ص۱۳۵، الحدیث:۲۰۳۱)

क्या मस्जिद से बेहतर भी कोई जगह है ?

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن को मस्जिद से कितनी महब्बत होती थी और वोह मस्जिद को आबाद रखने की कैसी कोशिशें फ़रमाया करते थे इस की एक झलक मुलाहज़ा कीजिये चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الاکبر फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन अबू ज़ियाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد को देखा कि वोह मस्जिद में बैठे इस तरह अपने नफ़्स का मुहासबा फ़रमा रहे थे कि बैठ जा ! तू कहां जाना चाहता है, क्यूं जाना चाहता है ? क्या मस्जिद से भी बेहतर कोई जगह है जहां तू जाना चाहता है ? देख तो सही ! यहां रहमतों की कैसी बरसात है ? जब कि तू चाहता है कि बाहर जा कर कभी किसी के घर को देखे, कभी किसी के घर को। (ذم الھوٰی، الباب الثالث، ص۵۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

20 इमामे के साथ नमाज़ पढ़ना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सर पर इमामा शरीफ़ बांध कर नमाज़ पढ़ने से इस का षवाब कई गुना बढ़ जाता है। इमामे की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल **तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा कीजिये :

- इमामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बिग़ैर इमामे की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं। (الفردوس بمأ ثور الخطاب ج۱ ص۱۰۴، الحدیث ۳۰۵۳)
- इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है।
(ایضاً، ج۲ ص۱۳، الحدیث:۲۶۳، ۱۲۶۳، فتاوٰی رضویہ مخرجہ، ج۶ ص۲۱۲)
- इमामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इमामे के 70 जुमुओं के बराबर है।
(ابن عساکر، ج۳۷ ص۳۵۴)

मुहक़्क़िक़े अ़लल इत़लाक़, ख़ातिमुल मुहद्दिषीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी** عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

دَستارِ مُبارَک آنحضرَت (صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم) دَر اکثَر سَفَید بُوَد وَ گاہے سِیاہ اَحیاناً سَبز

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इमामा शरीफ़ अकषर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी सब्ज़ होता था। (کشف الالتباس فی استحباب اللباس للشیخ عبدالحق الدھلوی، ص۳۸)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सब्ज़ रंग का इमामा शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर पर सजाया है, **दा 'वते इस्लामी** ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे को अपना शिआ़र बनाया है, **सब्ज़ सब्ज़ इमामे** की भी क्या बात है ! मेरे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर बना हुवा जगमग जगमग करता गुम्बद शरीफ़ भी सब्ज़

सब्ज़ है ! **आशिक़ाने रसूल** को चाहिये कि सब्ज़ सब्ज़ रंग के इमामे से हर वक़्त अपने सर को "सर सब्ज़" रखें और सब्ज़ रंग भी "गहरा" होने के बजाए ऐसा प्यारा प्यारा और निखरा निखरा सब्ज़ हो कि दूर दूर से बल्कि रात के अन्धेरे में भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के सब्ज़ सब्ज़ जल्वों के तुफ़ैल जगमगाता नूर बरसाता नज़र आए।

(**163** मदनी फूल, स.**27**)

नहीं है चांद सूरज की मदीने को कोई ह़ाजत
वहां दिन रात उन का सब्ज़ गुम्बद जमगमगाता है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

21 नमाज़ से पहले मिस्वाक करना

मिस्वाक करना बड़ी पाकीज़ा सुन्नते मुबारका है, लेकिन अगर नमाज़ से पहले मिस्वाक कर ली जाए तो नमाज़ का षवाब मज़ीद बढ़ जाता है। चुनान्चे, अत्तरग़ीब वत्तरहीब में है : दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की **70** रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है।

(الترغیب والترہیب، ج۱، ص۱۰۲، الحدیث:۱۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

22 पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना

जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का षवाब अकेले नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में **27** गुना ज़ियादा है लेकिन जमाअ़त की पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने की मज़ीद फ़ज़ीलत है, **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान

है : पहली सफ़ मलाइका की सफ़ की मिष्ल है, और अगर तुम पहली सफ़ की फ़ज़ीलत जान लेते तो इसे ह़ासिल करने के लिये जल्दी जल्दी आगे बढ़ते। (مسند احمد، الحدیث ۳۲۳۱۲، ج۸، ص۷۵) एक और मक़ाम पर पहली सफ़ की रग़बत दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाया : अगर लोग जानते कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है? फिर बिग़ैर कुरआ़ डाले न पाते, तो इस पर कुरआ़ अन्दाज़ी करते।

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، الحدیث ۶۱۵، ج۱، ص۲۲۴)

बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल ह़िस्सा सिवुम सफ़ह़ा **586** पर फ़तावा आ़लमगीरी के ह़वाले से लिखा है : मर्दों की पहली सफ़ कि इमाम से क़रीब है, दूसरी से अफ़ज़ल है और दूसरी तीसरी से **وعلی هذا القیاس**

(बहारे शरीअ़त)

लिहाज़ा हमें हर नमाज़ पहली सफ़ में अदा करने की कोशिश करनी चाहिये लेकिन **पहली सफ़** में इस त़रह़ न घुसा जाए कि दूसरों को तक्लीफ़ हो, फंस कर खड़े होने से भी बचिये कि सफ़ टेढ़ी होने का ख़दशा होता है।

पहली सफ़ का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े **"मदनी इन्आ़मात"** में से एक मदनी इन्आ़म पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के ह़वाले से भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"72 मदनी इन्आ़मात"** के सफ़ह़ा **3** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **2** है : क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़

में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाई ? नीज़ हर बार किसी एक को अपने साथ मस्जिद ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

23 सफ़ में दाहिनी त़रफ़ खड़े होना

अगर कोशिश कर के इमाम साहिब के सीधे हाथ की त़रफ़ खड़े हो जाएं तो हम एक और फ़ज़ीलत को पाने में कामयाब हो जाएंगे, चुनान्चे, उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते सफ़ों की दाहिनी जानिब नमाज़ पढ़ने वालों पर रह़मत भेजते हैं। (سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب ما یستحب ان یلی الامام فی الصف، الحدیث ۶۷۶، ج۱، ص۲۶۸)

बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल ह़िस्सा सिवुम सफ़ह़ा **586** पर फ़तावा आ़लमगीरी के ह़वाले से लिखा है : मुक़्तदी (या'नी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले) के लिये अफ़्ज़ल जगह येह है कि इमाम से क़रीब हो और दोनों त़रफ़ बराबर हों, तो दाहिनी त़रफ़ अफ़्ज़ल है। (बहारे शरीअ़त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

24 सफ़ में ख़ाली जगह पुर करना

जमाअ़त के दौरान सफ़ में ख़ाली जगह पुर करना भी बेह़द आसान नेकी है और इस की भी बड़ी फ़ज़ीलत है, चुनान्चे, शहनशाहे

मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो सफ़ के ख़ला को पुर करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक दर्जा बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा। (طبرانی اوسط، الحدیث ۵۷۹۷، ج ۴، ص ۲۲۵)

मग़फ़िरत कर दी जाएगी

हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो सफ़ के ख़ला को पुर करेगा उस की मग़फ़िरत कर दी जाएगी। (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب صلۃ الصفوف وسد الفرج، الحدیث ۲۵۰۳، ج ۲، ص ۲۵۱)

बहारे शरीअ़त में है : पहली सफ़ में जगह हो और पिछली सफ़ भर गई हो तो उस को चीर कर जाए और उस ख़ाली जगह में खड़ा हो, और येह वहां है जहां फ़ितना व फ़साद का एह़तिमाल न हो।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा.3, जि.1, स.586 मुलतक़त़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

25 नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठना

नमाज़ ऐसी इबादत है जिस का इन्तिज़ार करने वाला भी षवाब का ह़क़दार हो जाता है, रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठने वाला क़ियाम करने वाले की त़रह़ है और अपने घर से निकलने के वक़्त से लौटने तक नमाज़ियों में लिखा जाता है।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب الامامۃ والجماعۃ، الحدیث ۲۰۳۶، ج ۳، ص ۲۴۳)

गुनाहों को मिटाने वाला अ़मल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक जगह वुज़ू फ़रमाया फिर अपने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ रुख़ कर के फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें गुनाहों को मिटाने वाले अ़मल के बारे में न बताऊं ? सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ज़रूर बताइये । इरशाद फ़रमाया : मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कषरत से आमदो रफ़्त रखना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना ।

(مسند احمد، مسند الانصار، الحدیث ۲۲۳۸۹، ج۸، ص۳۱۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

26 रोज़ा इफ़्त़ार करवाना

किसी का रोज़ा इफ़्तार करवाना भी बहुत बड़ी मगर आसान नेकी है, इस के लिये समोसों, पकोड़ों, फलों और त़रह़ त़रह़ की डिशों का होना ज़रूरी नहीं बल्कि सिर्फ़ पानी से रोज़ा इफ़्त़ार करवा के भी षवाब कमाया जा सकता है, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो ह़लाल कमाई से किसी रोज़ेदार को इफ़्त़ार करवाए तो फ़िरिश्ते पूरा रमज़ान उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं और शबे क़द्र में ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام उस से मुसाफ़ह़ा फ़रमाएंगे और जिस

शख़्स से ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मुसाफ़ह़ा फ़रमाते हैं उस का दिल नर्म और आंसू कषीर हो जाते हैं।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर किसी के पास इतना न हो तो ?" इरशाद फ़रमाया : "चाहे एक लुक़्मा या रोटी का टुकड़ा ही हो।" एक और शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर किसी के पास इतना भी न हो तो ?" इरशाद फ़रमाया : "चाहे पानी मिला हुवा थोड़ा सा दूध ही हो।" एक और शख़्स ने अ़र्ज़ की : "अगर इतना भी न हो तो ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पानी के एक घूंट से ही इफ़्त़ार करवा दे (तब भी येह षवाब पाएगा)।

(مکارم الاخلاق للطبرانی، باب فضل من اعان حاجا...الخ، ص ۳۶۶، الحدیث: ۱۴۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

27 सलाम में पहल करना

एक दूसरे को सलाम करने से षवाब भी मिलता है और आपस में मह़ब्बत बढ़ती है लेकिन सलाम में पहल करने वाला ज़ियादा फ़ाइदा पाता है। सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है, सलाम (में पहल) करने वाले पर **90** रह़मतें और जवाब देने वाले पर **10** रह़मतें नाज़िल होती हैं।

(الجامع الصغیر، ص ۶۳، الحدیث ۷۸۴)

सिर्फ़ सलाम करने के लिये बाज़ार जाया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मैं सुब्ह़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास जाता तो वोह मुझे अपने साथ बाज़ार ले जाते जहां वोह मा'मूली चीज़ें बेचने वाले, दुकानदार और मिस्कीन या किसी और के सामने से गुज़रते तो सब को सलाम करते। एक दिन जब उन्हों ने मुझे बाज़ार चलने को कहा तो मैं ने पूछा : आप बाज़ार जा कर क्या करेंगे ! आप वहां खड़े होते हैं न सौदे के मुतअ़ल्लिक़ कुछ दरयाफ़्त करते हैं, किसी चीज़ का नर्ख़ चुकाते हैं न बाज़ार की मजलिसों में बैठते हैं। आप यहीं बैठे बैठे हमें ह़दीषें सुना दिया करें। उन्हों ने फ़रमाया : हम सलाम करने के लिये ही बाज़ार जाते हैं कि जो मिलेगा, उसे सलाम करेंगे।

(المؤطا للامام مالک، ج۲، ص۴۴۴۔۴۴۵ حدیث: ۱۸۴۴)

सलाम करने का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **नेक बनने के नुस्ख़े "मदनी इन्आ़मात"** में से एक मदनी इन्आ़म सलाम करने के बारे में भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा **5** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **6** है : क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस, ट्रेन वग़ैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुवे राह में खड़े या बैठे हुवे मुसलमानों को सलाम किया ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

28 सलाम के अल्फ़ाज़ बढ़ाना

अगर्चे सलाम की सुन्नत सिर्फ़ "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" कहने से अदा तो हो जाएगी लेकिन अगर इस के साथ وَرَحمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ बढ़ा लिया जाए तो ज़ियादा षवाब है, चुनान्चे, "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" कहने से **10** नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحمَةُ اللّٰهِ भी कहेंगे तो **20** नेकियां हो जाएंगी और وَبَرَكَاتُهٗ शामिल करेंगे तो **30** नेकियां हो जाएंगी। इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कह कर **30** नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं। एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब इरशाद फ़रमाया। फिर वोह शख़्स बैठ गया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दस नेकियां हैं।" फिर एक दूसरा शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحمَةُ اللّٰهِ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे भी सलाम का जवाब दिया। फिर वोह बैठ गया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बीस नेकियां हैं।" फिर एक और शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : وَرَحمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर वोह बैठ गया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم ने फ़रमाया : "तीस नेकियां हैं।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب کیف السلام، ج۴، ص۴۴۹، الحدیث: ۵۱۹۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

29 ख़न्दा पेशानी से सलाम करना

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा लोगों को ख़न्दा पेशानी से सलाम करना भी सदक़ा है। (شعب الایمان، ج۶، ص۲۵۳، الحدیث ۸۰۵۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

30 मुसाफ़हा करना

दो मुसलमानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से मुसाफ़हा करना या'नी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है। नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुअ़ज़्ज़म है : जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हुवे मुसाफ़हा करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निनानवे रह़मतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।

(المعجم الاوسط للطبرانی، ج۵، ص۳۷۹، الحدیث: ۷۶۷۲)

गुनाह झड़ते हैं

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई मुसलमान अपने भाई से मुलाक़ात करते हुवे उस का हाथ पकड़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे तेज़ आंधी में ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं और इन दोनों की मग़फ़िरत कर दी जाती है अगर्चे इन के गुनाह समन्दर की झाग के बराबर हों। (المعجم الکبیر، مسند سلمان فارسی، ج۶، ص۲۵۶، الحدیث: ۶۱۵۰)

जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ?

ह़ज़रते सय्यिदुना नुफ़ैअ़ आ'मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो इन्हों ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से मुसाफ़ह़ा फ़रमाया और मुस्कुराने लगे फिर पूछा : "क्या तुम जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं" । तो फ़रमाने लगे कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे शरफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो मेरे साथ ऐसे ही किया फिर मुझ से पूछा : "जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ?" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं" । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते वक़्त मुसाफ़ह़ा करते हैं और दोनों एक दूसरे के सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुस्कुराते हैं तो उन के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है ।

(المعجم الاوسط، ج۵، ص۳۶۶، الحدیث: ۷۶۳۰)

अमीरे अहले सुन्नत की ख़ामोश इनफ़िरादी कोशिश

मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये ।

(बहारे शरीअ़त, जि.3, ह़िस्सा.16, स.471 मुलख़्ख़सन)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार

क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुसाफ़हा करते वक़्त न सिर्फ़ ख़ुद इस बात का ख़ास ख़याल रखते हैं बल्कि मुलाक़ात करने वाले इस्लामी भाइयों की तवज्जोह इस सुन्नत की त़रफ़ दिलाते रहते हैं, चुनान्चे, एक मदनी इस्लामी भाई का बयान है कि एक मरतबा जब मुझे **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुसाफ़हा करने का शरफ़ मिला तो ख़िलाफ़े मा'मूल आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه काफ़ी देर तक मेरे हाथ को थामे रहे, मैं ने ग़ौर किया तो मेरे हाथ ख़ाली न थे बल्कि मैं ने कोई चीज़ पकड़ रखी थी, मैं सारा मुआ़मला समझ गया लिहाज़ा मैं ने वोह चीज़ फ़ौरन जेब में डाली और ख़ाली हाथ दोबारा मुसाफ़हा किया । इस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बहुत ख़ुश हुवे और फ़रमाया : ख़ामोश इल्तिजा समझने का शुक्रिया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

31 ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना

जब भी किसी इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो तो आ़जिज़ी का बाज़ू बिछाते हुवे ख़न्दा पेशानी से मिलने की कोशिश कीजिये, नेकियों के ख़ज़ाने में इज़ाफ़ा हो जाएगा । ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर नेकी सदक़ा है और तुम्हारा किसी से ख़न्दा पेशानी से मिलना भी नेकी है और अपने डोल से अपने भाई के बरतन में पानी डालना भी नेकी है । (مستدرک، کتاب الدعاوالتکبیر، الحدیث ۱۸۵۵، ج۲، ص۱۶۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

32

दुआ करना

दुन्या के बड़े से बड़े अमीर शख़्स से जब बार बार कुछ मांगा जाता है तो वोह उक्ता कर नाराज़ हो जाता है लेकिन इस दुन्या का ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा जव्वाद और करीम है कि उसे अपने बन्दों का मांगना बहुत पसन्द है, इन में से जो जितना ज़ियादा दुआ मांगेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से उतना ही खुश होगा। हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कषरत से दुआ मांगा करते थे ह़त्ता कि सोने जागने, खाने पीने, कपड़े पहनने उतारने, बैतुल ख़ला जाने और आने के वक़्त और वुज़ू करने के दौरान भी दुआ मांगा करते थे। दुआ किसी भी वक़्त किसी भी जाइज़ व मुमकिन चीज़ के लिये मांगी जा सकती है अलबत्ता दुआ के आदाब का ख़याल रखना ज़रूरी है। बहर ह़ाल दुआ दुन्यावी मक़ासिद के लिये मांगी जाए या उख़रवी, इबादात में शुमार होती हैं और इस पर षवाब मिलता है बल्कि दुआ तो इबादत का मग़्ज़ है, चुनान्चे, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुआ इबादत का मग़्ज़ है।"

(جامع ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث ۳۳۸۲، ج۵، ص۲۴۳)

दुआ मोमिन का हथयार है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुआ मोमिन का हथयार, दीन का सुतून और ज़मीनो आस्मान का नूर है। (مستدرک، کتاب الدعاوالتکبیر، الحدیث ۱۸۵۵، ج۲، ص۱۶۲)

दुआ के तीन फ़ाइदे

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसलमान कोई ऐसी दुआ मांगता है जिस में कोई गुनाह या क़त्ए रह्मी न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तीन में से एक ख़स्लत अ़ता फ़रमाता है : (1) या तो उस की दुआ जल्द क़बूल कर ली जाती है (2) या उसे आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर दिया जाता है (3) या फिर उस से इसी की मिष्ल कोई बुराई दूर कर दी जाती है। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "फिर तो हम बहुत ज़ियादा दुआएं मांगा करेंगे ।" फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा दुआएं क़बूल फ़रमाने वाला है। (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث ۱۱۱۳۳، ج۴، ص ۳۷)

मदनी इन्आ़मात और आदाबे दुआ

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े "**मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म आदाबे दुआ के ह़वाले से भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ 30 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़्ह़ा 15 पर मदनी इन्आ़म नम्बर 44 है : क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ के दौरान ख़ुशूअ़ और ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन में आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिल में गिड़ गिड़ाने की कैफ़िय्यत) पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ में हाथ उठाने के आदाब का लिह़ाज़ रखा ?

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर
करूं ख़ाशिआ़ना दुआ़ या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.84)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

33 क़ब्रिस्तान वालों के लिये दुआ़ करना

जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह कहे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِىْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِىَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ اُدْخِلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا (1)

तो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर इस वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुवे सब उस (या'नी दुआ़ पढ़ने वाले) के लिये दुआ़एं मग़्फ़िरत करेंगे । (مصنف ابن ابی شیبہ، ج۸ ص۲۵۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

34 आयत या सुन्नत सिखाना

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस शख़्स ने क़ुरआने मजीद की एक आयत या दीन की कोई सुन्नत सिखाई क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये ऐसा षवाब तय्यार फ़रमाएगा कि उस से बेहतर षवाब किसी के

(1) **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुवे तू उन पर अपनी रह़मत और मेरा सलाम पहुंचा दे।

लिये भी नहीं होगा। जब कि जुन्नूरैन, जामेउ़ल कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़षमान इब्ने अ़फ़्फ़ान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने **कुरआने मुबीन** की एक आयत सिखाई उस के लिये सीखने वाले से दुगना षवाब है।

(جمع الجوامع، ج۷، ص۲۰۹، الحدیث: ۲۲۴۵۴_۲۲۴۵۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियों के ह़रीस बन जाइये, उ़मूमन इ़शा के बा'द कमो बेश **40** मिनट चलने वाले दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में दाख़िला ले लीजिये, इस में ख़ुद भी कुरआने करीम सीखिये और दूसरों को भी सिखाइये। आप को सीखने वाले की निस्बत दुगना षवाब मिलेगा नीज़ वोह जब जब तिलावत करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को भी उस की तिलावत का षवाब मिलता रहेगा। आप भी सुन्नतों पर अ़मल कीजिये और दूसरों को भी अ़मल पर आमादा कीजिये। अगर आप ने किसी को एक सुन्नत सिखा दी तो अब वोह जब जब इस सुन्नत पर अ़मल करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को भी इस सुन्नत पर अ़मल करने वाले की त़रह़ षवाब मिलता रहेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

35 नेकी की दा'वत देना

किसी को नेकी की दा'वत देना और बुराई से रोकना अहम तरीन नेकियों में से एक है मगर क़दरे आसान है और इस के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं, चुनान्चे, **नबिय्ये ह़ाशिर**, रसूले साबिरो शाकिर, मह़बूबे

रब्बे क़ादिर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊट** हों। (مُسلِم ص ۱۳۱۱ حدیث ۲۴۰۶) ह़ज़रते अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीषे नबवी की शर्ह़ में लिखते हैं : सुर्ख़ ऊट अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल समझा जाता था, इस लिये ज़रबुल मषल (या'नी कहावत) के त़ौर पर सुर्ख़ ऊंटों का ज़िक्र किया गया। उख़रवी उमूर को दुन्यवी चीज़ों से तशबीह (या'नी मिषाल) देना सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना ह़क़ीक़त येही है कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है। (شرح مسلم للنووی ج ۸، جزء ۱۵، ص ۱۷۸)

तमाम अ़मल करने वालों का षवाब मिलेगा

सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलनशीन है : जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए उस को तमाम आ़मिलीन (या'नी अ़मल करने वालों) की त़रह़ षवाब मिलेगा और इस से उन (अ़मल करने वालों) के अपने षवाब से कुछ कम न होगा। और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए तो उस पर तमाम पैरवी करने वाले गुमराहों के बराबर गुनाह होगा और येह उन के गुनाहों से कुछ कम न करेगा। (مسلم ص ۱۴۳۸ حدیث ۲۶۷۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह ह़ुक्म (आ़म है या'नी) नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े से तमाम सह़ाबा, अइम्मए मुज्तहिदीन,

उ़–लमाए मुतक़द्दिमीन व मुतअख़्ख़िरीन सब को शामिल है मषलन अगर किसी की तब्लीग़ से एक लाख नमाज़ी बनें तो उस मुबल्लिग़ को हर वक़्त एक लाख नमाज़ों का षवाब होगा और उन नमाज़ियों को अपनी अपनी नमाज़ों का षवाब, इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का षवाब मख़्लूक़ के अन्दाज़े से वरा है। रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾ (پ۲۹، القلم:۳)
*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़रूर तुम्हारे लिये बे इन्तिहा षवाब है)* ऐसे ही वोह मुसन्निफ़ीन जिन की किताबों से लोग हिदायत पा रहे हैं क़ियामत तक लाखों का षवाब उन्हें पहुंचता रहेगा, येह ह़दीष इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं :

لَيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ (پ۲۷، النجم:۳۹)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश) क्यूंकि येह षवाबों की ज़ियादती उस के अ़मले तब्लीग़ का नतीजा है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में गुमराहों के मूजिदीन मुबल्लिग़ीन (या'नी गुमराही ईजाद करने और गुमराही दूसरों को पहुंचाने वाले) सब शामिल हैं ता क़ियामत उन को हर वक़्त **लाखों गुनाह** पहुंचते रहेंगे। (मिरआतुल मनाजीह़. जि.1, स.160)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत देने की ह़िर्स अपना लीजिये, दूसरों को नमाज़ी बनाने की मुहिम तेज़ से तेज़ तर कर दीजिये, जब भी नमाज़े बा जमाअ़त के लिये सूए मस्जिद जाने लगें, दूसरों को तरग़ीब दे कर साथ लेते जाइये, जिन्हें नमाज़ नहीं आती उन्हें नमाज़ सिखाइये। अगर आप के सबब एक भी मुसलमान नमाज़ी बन गया तो जब तक वोह नमाज़ें पढ़ता रहेगा उस की हर

हर नमाज़ का आप को भी षवाब मिलता रहेगा । अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** और मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की ज़ोरदार मुहिम चला कर मुसलमानों को "नेक बनाने की मशीन" बन जाइये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ षवाब का अम्बार लग जाएगा और दोनों जहानों में बेड़ा पार हो जाएगा ।

फ़ाइदा आख़िरत के बनाने में है सब मुबल्लिग़ कहें क़ाफ़िले में चलो
दीन फैलाइये, सब चले आइये कहते अ़त्तार हैं, क़ाफ़िलें में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक साल की इबादत का षवाब

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : मैं उस के हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का षवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है ।** (مکاشفۃ القلوب ص ۴۸)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अगर आप किसी को **नेकी की दा'वत** देंगे तो एक एक कलिमे (लफ़्ज़, क़ौल या बात) के बदले एक एक साल की इबादत का षवाब पाएंगे । फ़र्ज़ कीजिये ! आप ने किसी दिन मस्जिद में सिर्फ़ एक इस्लामी भाई के सामने "फ़ैज़ाने सुन्नत" से दर्स दिया और इस में दो सफ़ह़ात पढ़ कर सुनाए, अब अगर इन में बीस बातें नेकी व भलाई की बयान हुईं तो दर्स सुनने वाला वोह इस्लामी भाई इन पर अ़मल करे या न करे आप के नामए आ'माल

में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बीस साल की इबादत का षवाब** लिखा जाएगा और अगर आप से दर्स सुन कर उस इस्लामी भाई ने अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया तो वोह जब तक अ़मल करता रहेगा आप को भी बराबर उस अ़मल करने वाले जितना षवाब मिलता रहेगा और अगर उस ने आप के दर्स से सीखी हुई कोई सुन्नत किसी और तक पहुंचाई तो इस का षवाब उस पहुंचाने वाले को भी मिलेगा और आप को भी। इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का षवाब बढ़ता ही चला जाएगा। **नेकी की दा'वत** का आख़िरत में मिलने वाला षवाब बन्दा अगर दुन्या ही में देख ले तो कोई लम्ह़ा बेकार न जाने दे, हर वक़्त ही **नेकी की दा'वत** की धूमे मचाता रहे।

(माख़ूज़ अज़ नेकी की दा'वत, स.**231**)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं
तू कर ऐसा जज़्बा अ़त़ा या इलाही

समझाना कब वाजिब है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **80** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "ज़लज़ला और इस के अस्बाब" के सफ़ह़ा **5** पर **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : आ़म ह़ालात में अगर्चे नेकी की दा'वत देना मुस्तह़ब है मगर बा'ज़ सूरतों में येह वाजिब हो जाती है। वाजिब होने की सूरत येह है कि जब कोई शख़्स गुनाह कर रहा हो और हमारा ज़न्ने ग़ालिब हो कि इस को मन्अ़ करेंगे तो येह मान जाएगा तो **अब इस को बताना, समझाना, मन्अ़ करना वाजिब है**। अब हम को ग़ौर करना चाहिये कि **येह वाजिब कौन अदा कर रहा ?**

मषलन आप देख रहे हैं कि फुलां बिला उ़ज़्रे शरई़ नमाज़ की जमाअ़त तर्क करने का गुनाह कर रहा है और वोह आप से छोटा भी है बल्कि आप का मातह़्त, मुलाज़िम या बेटा भी है और आप का ज़न्ने ग़ालिब भी है कि समझाऊंगा तो मान जाएगा मगर आप उस की इस्लाह़ की कोशिश नहीं फ़रमाते तो आप गुनहगार होंगे।[1]

(ज़लज़ला और उस के अस्बाब, स.5)

अ़ता हो "नेकी की दा'वत" का ख़ूब जज़्बा कि
दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स.97)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ाइदा ही फ़ाइदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! नेकी की बात बताने, गुनाह से नफ़रत दिलाने और इन कामों के लिये किसी पर **इनफ़िरादी कोशिश** का षवाब कमाने के लिये ज़रूरी नहीं कि जिस को समझाया वोह मान जाए तो ही षवाब मिलेगा बल्कि अगर वोह न माने तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ षवाब ही षवाब है, आइये और सारी दुन्या में नेकी की दा'वत आ़म करने का दर्द रखने वाली **"मदनी तह़रीक"** या'नी तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश"**

1.....नेकी की दा'वत की ज़रूरत, अहम्मिय्यत और मज़ीद फ़ज़ाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़े बा बरकत **"नेकी की दा'वत"** का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

में लग जाइये। अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मुश्कबार ''मदनी बहार'' आप के गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे,

इस्यां का मरीज़ "आ़लिम" बन गया

ह़ाफ़िज़ाबाद (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है सि. **1414** हि. ब मुत़ाबिक़ सि. **1993** ई. की बात है कि जब मैं आठवीं क्लास का त़ालिबे इ़ल्म था। टी वी और वी सी आर पर फ़िल्में देखना, गाने बाजे सुनना, बद निगाही करना, वालिदैन की नाफ़रमानी करना, **बात बात पर हर किसी को झाड़ देना और दिन भर आवारा गर्दी करते रहना मेरा पसन्दीदा मश्ग़ला था।** एक रोज़ मेरे एक क्लास फ़ैलो ने मुझे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ पेश किया और मुझे दा'वत दी कि हर जुमा'रात को मग़रिब की नमाज़ के बा'द दा'वते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ होता है आप भी सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये इस इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाया करें। मैं ने सोचा एक बार शिर्कत करने में क्या ह़रज है ! लिहाज़ा एक दिन मैं भी इजतिमाअ़ में शरीक हो गया। जब वहां के रूह़ परवर मनाज़िर देखे तो दिल को बड़ी फ़रह़त मिली ख़ुसूसन **इजतिमाअ़ के बा'द इस्लामी भाइयों की आपस में मुलाक़ात के अन्दाज़ ने तो मुझे ह़ैरान कर दिया कि न तो आपस में कोई जान पहचान, न ही**

कोई रिश्तेदारी इस के बा वुजूद एक दूसरे से कैसे पुर जोश अन्दाज़ में मुस्कुरा कर मुसाफ़हा व मुआनक़ा कर रहे हैं ! ! ! इस का मुझ पर गहरा असर पड़ा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं पाबन्दी से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक होने लगा और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर आप की निगाहे फ़ैज़ असर से न सिर्फ़ गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो गया बल्कि सि. **1419** हि. ब मुताबिक़ सि. **1999** ई. में अपने वालिदैन से इजाज़त ले कर पंजाब से बाबुल मदीना (कराची) आ गया और दा'वते इस्लामी के ता'लीमी इदारे "**जामिअ़तुल मदीना**" में दाख़िला ले कर हुसूले इ़ल्मे दीन में मश्ग़ूल हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शव्वालुल मुकर्रम सि. **1427** हि. ब मुताबिक़ नवम्बर सि **2006** ई. में आ़लिम कोर्स मुकम्मल कर लिया और **मेरी ख़ुश नसीबी कि अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने अपने मुबारक हाथों से मेरे सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत सजाई ।** इस वक़्त मैं दीगर मदनी कामों के साथ साथ जामिअ़तुल मदीना में तदरीसी ख़िदमात भी सर अन्जाम दे रहा हूं ।

इसी माहोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अन्धेरा ही अन्धेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

36 जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना

जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना मुस्तह़ब है । हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये (درمختار، ج۹، ص۶۶۸) सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : जो **जुमुआ़** के रोज़ नाख़ुन

तरशवाए (काटे) **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक । एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाखु़न तरशवाए (काटे) तो **रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे** ।

(درمختار، ردالمحتار ج۹ ص ۶۶۸، بہارِ شریعت، ج ۳، حصہ ۱۶ ص ۵۸۴)

नाखु़न काटने का त़रीक़ा

हाथों के नाखु़न काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का खु़लासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाखु़न काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये । अब उल्टे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखु़न काट लीजिये । अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखु़न काटा जाए । (درمختار ج۹ ص ۶۷۰، احیاء العلوم ج ۱ ص ۱۹۳) पाउं के नाखु़न काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलियां (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखु़न काट लीजिये फिर उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलियां समेत नाखु़न काट लीजिये । (ایضاً)

(माखू़ज़ अज़ 101 मदनी फूल, स.17)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

37 सालिह़ीन का ज़िक्रे ख़ैर करना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है :

اِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِّنَ السُّكُوْتِ وَالسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِّنْ اِمْلَاءِ الشَّرِّ

या'नी अच्छी बात कहना ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोश रहना बुरी बात कहने से बेहतर है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۴ص۲۵۶حدیث۴۹۹۳) कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो सिर्फ़ अच्छी बात कहने के लिये ज़बान को ह़रकत में लाते हैं, नेक लोगों का तज़किरा भी अच्छी गुफ़्तगू में शामिल है और बाइ़षे रह़मत भी, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **सुफ़्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान है : "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حلیۃ الاولیاء، ج۷، ص۵۳۳، الحدیث۱۰۵۷۰) जामेए सग़ीर में है : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का ज़िक्र करना इ़बादत है और सालिह़ीन का ज़िक्र (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा है।

(جامع صغیر، ص۲۶۴، الحدیث۴۳۳۱ ملخصًا)

हमें बुज़ुर्गों की बातें सुनाइये

मुह़द्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना सरदार अह़मद क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى को बचपन ही से अपने बुज़ुर्गों से वालिहाना अ़क़ीदत थी, चुनान्चे, आप स्कूल की ता'लीम के दौरान अपने उस्ताज़ से अ़र्ज़ किया करते : मास्टर जी ! हमें बुज़ुर्गों की बातें सुनाइये और हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़यातें त़य्यिबा पर ज़रूर रोशनी डाला कीजिये। (ह़याते मुह़द्दिषे आ'ज़म رضی اللہ عنہ, स.32)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

38 शआ़इरे इस्लाम की ता'ज़ीम करना

शआ़इरे इस्लाम मषलन क़ुरआन शरीफ़, ख़ानए का'बा सफ़ा मरवा, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा, मदीनए मुनव्वरा, बैतुल मुक़द्दस,

तूरे सीना और मुख़्तलिफ़ मक़ामाते मुक़द्दसा नीज़ अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام व औलियाए उज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام के मज़ारात और आबे ज़म ज़म वग़ैरा की ता'ज़ीम करना भी बहुत बड़ी नेकी है, सूरए ह़ज की आयत 32 में इरशाद होता है :

وَمَنۡ یُّعَظِّمۡ شَعَآئِرَ اللّٰہِ فَاِنَّہَا مِنۡ تَقۡوَی الۡقُلُوۡبِ ﴿۳۲﴾ (پ۱۷، الحج ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़गारी से है।

क़ुरआने पाक को चूमा करते

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ रोज़ाना सुब्ह़ क़ुरआने मजीद को चूम कर फ़रमाते : येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़हद और उस की किताब है। (دُرِّمُختار، ج۹، ص۶۳۴)

हाथ चेहरे पर फेर लिया करते

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर शरीफ़ पर जिस जगह बैठते थे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ख़ास उस जगह पर अपना हाथ फिरा कर अपने चेहरे पर फेर लिया करते थे। (الشفاء، ج۲، ص۵۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

39 ईषार करना

ईषार का मा'ना है : "दूसरों की ख़्वाहिश और ह़ाजत को अपनी ख़्वाहिश व ह़ाजत पर तरजीह़ देना।" इस का भी बड़ा

षवाब है, नफ़्स को दबा लिया जाए तो ज़ियादा मुश्किल भी नहीं, इस की फ़ज़ीलत मुलाहज़ा हो, सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (दूसरे को) तरजीह दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है। (اِتحاف السّادۃ للزّبیدی ج۹ ص۷۷۹)

अनोखा दस्तर ख़्वान

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल ह़सन अनत़ाकी علیہ رحمۃ اللہ الباقی के पास एक बार बहुत से मेहमान तशरीफ़ ले आए। रात जब खाने का वक़्त आया तो रोटियां कम थीं, चुनान्चे, रोटियों के टुकडे कर के दस्तरख़्वान पर डाल दिये गए और वहां से चराग़ उठा दिया गया, सब के सब मेहमान अन्धेरे ही में दस्तरख़्वान पर बैठ गए, जब कुछ देर बा'द येह सोच कर कि सब खा चुके होंगे चराग़ लाया गया तो तमाम टुकड़े जूं के तूं मौजूद थे। ईषार के जज़्बे के तह़त एक लुक़्मा भी किसी ने न खाया था क्यूंकि हर एक की येही **मदनी सोच** थी कि मैं न खाऊं ताकि साथ वाले इस्लामी भाई का पेट भर जाए। (اِتحاف السّادۃ ج۹ ص۷۸۳)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : **अल्लाह** ! **अल्लाह** ! हमारे अस्लाफ़ का जज़्बए ईषार किस क़दर ह़ैरत नाक था और आह ! आज हमारा जज़्बए ह़िर्स व त़म्अ़ कि जब किसी दा'वत में हों और खाना शुरूअ़ किया जाए तो "खाऊं खाऊं" करते खाने पर ऐसे टूट पड़ें कि "खाना और चबाना" भूल कर "निगलना और पेट में लुढ़काना" शुरूअ़ कर दें कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा दूसरा

इस्लामी भाई तो खाने में कामयाब हो जाए और हम रह जाएं ! हमारी हिर्स की कैफ़िय्यत कुछ ऐसी होती है कि हम से बन पड़े तो शायद दूसरे के मुंह से निवाला भी छीन कर निगल जाएं !

ईषार का षवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े

काश ! हमें भी ईषार का जज़्बा नसीब हो, अगर ख़र्च करने को जी नहीं चाहता बिग़ैर ख़र्च के भी ईषार के कई मवाक़ेअ़ मिल सकते हैं । मषलन कहीं दा'वत पर पहुंचे, सब के लिये खाना लगाया गया तो हम उ़म्दा बोटियां वग़ैरा इस निय्यत से न उठाएं कि हमारा दूसरा भाई उस को खा ले । गर्मी है कमरे के अन्दर या सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में मस्जिद के अन्दर कई इस्लामी भाई सोना चाहते हैं, ख़ुद पंखे के नीचे क़ब्ज़ा जमाने के बजाए दूसरे इस्लामी भाई को मौक़अ़ दे कर ईषार का षवाब कमा सकते हैं । इसी त़रह़ बस या रेलगाड़ी के अन्दर भीड़ की सूरत में दूसरे इस्लामी भाई को ब इसरार अपनी निशस्त पर बिठा कर और ख़ुद खड़े रह कर, कार में सफ़र का मौक़अ़ मुयस्सर होने के बा वुजूद दूसरे इस्लामी भाई के लिये क़ुरबानी दे कर उसे कार में बिठा कर और ख़ुद पैदल या बस वग़ैरा में सफ़र कर के, सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ वग़ैरा में आराम देह जगह मिल जाए तो दूसरे इस्लामी भाई पर जगह कुशादा कर के या उसे वोह जगह पेश कर के, खाना कम हो और खाने वाले ज़ियादा हों तो ख़ुद कम खा कर या बिल्कुल न खा कर नीज़ इसी त़रह़ के बेशुमार मवाक़ेअ़ पर अपने नफ़्स को थोड़ी सी तक्लीफ़ दे कर मुफ़्त में ईषार का षवाब कमाया जा सकता है ।

(माख़ूज़ अज़ मदीने की मछली, स.27)

दे जज़्बा तू ऐसा तेरे नाम पर दूं

पसन्दीदा चीज़ें लुटा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

40 ख़ामोश रहना

ज़बान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ऐसी अ़ज़ीम ने'मत है जिस की ह़क़ीक़ी क़द्र वोही शख़्स जान सकता है जो कुव्वते गोयाई से मह़रूम हो। ज़बान के ज़रीए़ अपनी आख़िरत संवारने के लिये नेकियों का ख़ज़ाना भी इकठ्ठा किया जा सकता है और इस के ग़लत़ इस्ति'माल की वजह से दुन्या व आख़िरत बरबाद भी हो सकती है। ख़ामोश रहना भी एक त़रह़ की इ़बादत है और बाइ़षे षवाब है, अह़ादीषे मुबारका में ज़बान पर क़ाबू पाने के लिये ख़ामोशी की बहुत सी फ़ज़ीलतें बयान हुई हैं, सरे दस्त चार यार की निस्बत से चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) اَلصَّمْتُ اَرْفَعُ الْعِبَادَةِ ख़ामोशी आ'ला दर्जे की इ़बादत है। (اَلفِردوس بماثور الخطاب ج۲ ص۳۶، الحدیث ۳۲۶۵) (2) مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْ لِيَصْمُتْ जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।" (بخاری ج ۴ ص ۱۰۵ حدیث ۶۰۱۸)

(3) اَلصَّمْتُ سَيِّدُ الْاَخْلَاقِ ख़ामोशी अख़्लाक़ की सरदार है। (اَلفِردوس بماثور الخطاب ج۲ ص۶۳، الحدیث ۲۲۶۳) (4) आदमी का ख़ामोशी पर क़ाइम रहना 60 साल की इ़बादत से बेहतर है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۴ ص۲۴۵ الحدیث ۴۹۵۳)

मीज़ाने अ़मल पर बहुत भारी है

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे दो अ़मल न बताऊं जो करने में बहुत हल्के लेकिन मीज़ाने अ़मल में बहुत भारी हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर बताइये। इरशाद फ़रमाया : طُوْلُ الصَّمْتِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ या'नी कषरत से ख़ामोश रहना और ख़ुश अख़्लाक़ी, फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मख़्लूक़ का कोई अ़मल इन दोनों जैसा नहीं है।

(شعب الایمان للبیہقی ج۶ ص۲۳۹ حدیث۸۰۰۶)

बोलने की चार अक़्साम

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی के फ़रमाने वाला शान का ख़ुलासा है : गुफ़्तगू की चार क़िस्में हैं : (1) मुकम्मल नुक़्सान देह बात (2) मुकम्मल फ़ाइदे मन्द बात (3) ऐसी बात जो नुक़्सान देह भी हो और फ़ाइदे मन्द भी और (4) ऐसी बात जिस में न फ़ाइदा हो न नुक़्सान। पस **पहली क़िस्म** की बात जो कि मुकम्मल नुक़्सान देह है उस से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है। और इसी त़रह़ **तीसरी क़िस्म** वाली बात कि जिस में नुक़्सान और फ़ाइदा दोनों हैं, इस से भी बचना लाज़िम है। और जो **चौथी क़िस्म** है वोह फ़ुज़ूलिय्यात में शामिल है कि उस का न कोई फ़ाइदा है और न ही कोई नुक़्सान, लिहाज़ा ऐसी बात में वक़्त ज़ाएअ़ करना भी एक

त़रह़ का नुक़्सान ही है। इस के बा'द सिर्फ़ **दूसरी ही क़िस्म** की बात रह जाती है या'नी बातों में से तीन चौथाई (या'नी 75%) तो क़ाबिले इस्ति'माल नहीं और सिर्फ़ एक चौथाई (या'नी 25%) बात जो कि फ़ाइदे मन्द है बस वोही क़ाबिले इस्ति'माल है मगर इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के अन्दर भी बारीक क़िस्म की रियाकारी, बनावट, ग़ीबत, झूटे मुबालग़े ''मैं मैं करने की आफ़त'' या'नी अपनी फ़ज़ीलत व पाकीज़गी बयान कर बैठने वग़ैरा वग़ैरा अन्देशे हैं। नीज़ फ़ाइदे मन्द गुफ़्तगू करते करते फ़ुज़ूल बातों में जा पड़ने फिर इस के ज़रीए़ मज़ीद आगे बढ़ते हुवे इस में गुनाह का इर्तिकाब हो जाने वग़ैरा वग़ैरा ख़दशात शामिल हैं और येह शुमूलिय्यत ऐसी बारीक है जिस का इल्म नहीं होता, लिहाज़ा इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के ज़रीए़ भी इन्सान ख़त़रात में घिरा रहता है।

(مُلَخَّص از اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۱۳۸)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : ख़ामोशी के त़लबगार को चाहिये कि ज़बान से करने के बजाए रोज़ाना थोड़ी बहुत बातें लिख कर या इशारे से भी कर लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ ख़ामोशी की आ़दत शुरूअ़ हो जाएगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ''दा'वते इस्लामी'' की त़रफ़ से नेक बनने के अ़ज़ीम नुस्ख़े ''**मदनी इन्आ़मात**'' का एक मदनी इन्आ़म येह भी है : **क्या आज आप ने ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाते हुवे फ़ुज़ूल गोई से बचने की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ इशारे से और कम अज़ कम चार बार लिख कर गुफ़्तगू की ?**

घर में मदनी माहोल बनाने में ख़ामोशी का किरदार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे ज़रूरत बात, हंसी मज़ाक़ और तू तड़ाक़ की आ़दात निकाल देने से घर में भी आप का वक़ार बुलन्द होगा और जब घर के अफ़राद आप के सन्जीदा पन से मुतअष्सिर होंगे तो उन पर आप की "**नेकी की दा'वत**" बहुत जल्द अषर करेगी और घर में मदनी माहोल न हुवा तो बनाने में आसानी हो जाएगी। चुनान्चे, "**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ख़ामोशी की अहम्मिय्यत पर किया हुवा एक सुन्नतों भरा बयान सुन कर एक इस्लामी भाई ने जो तह़रीर दी उस का ख़ुलासा है : सुन्नतों भरे बयान में दी गई हिदायत के मुत़ाबिक़ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ जैसे बातूनी आदमी ने ख़ामोशी की आ़दत डालनी शुरूअ़ कर दी है, سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस का मुझे बेह़द फ़ाइदा पहुंच रहा है, मेरे **अबुल फ़ुज़ूल** होने की वजह से घर के अफ़राद मुझ से बदज़न थे मगर जब से चुप रहना शुरूअ़ किया है, घर में मेरी "**पोज़ीशन**" बन गई है और ख़ुसूसन मेरी प्यारी प्यारी मां जो कि मुझ से ख़ूब बेज़ार रहा करती थीं अब बेह़द ख़ुश हो गई हैं, चूंकि पहले मैं बहुत "**बक्की**" था लिहाज़ा मेरी अच्छी बातें भी बे अषर हो जाती थीं मगर अब मैं अम्मीजान को जब कोई सुन्नत वग़ैरा बताता हूं तो वोह न सिर्फ़ दिलचस्पी से सुनती हैं बल्कि अ़मल करने की भी कोशिश करती हैं। (माख़ूज़ अज़ ख़ामोश शहज़ादा, स.**38**)

बढ़ता है ख़मोशी से वक़ार ऐ मेरे प्यारे
ऐ भाई ! ज़बां पर तु लगा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश. स.**66**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

41 मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना

किसी के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना बहुत आसान मगर इस का इन्आ़म कितना शानदार है, इस का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल रिवायत से लगाइये : चुनान्चे,

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और ज़िक्र में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : "क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है : "तू कौन है ?" तो वोह फ़िरिश्ता जवाब देता है : "मैं वोह ख़ुशी हूं जिसे तू ने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था, आज मैं तेरी वह़शत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में षाबित क़दम रखूंगा और तुझे रोज़े क़ियामत के मनाज़िर दिखाऊंगा और तेरे लिये तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، الحدیث ۲۳، ج ۳، ص ۲۶۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह फ़ज़ीलत उसी वक़्त ह़ासिल हो सकेगी जब वोह ख़ुशी ऐन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो चुनान्चे, अगर औ़रत ने शोहर को ख़ुश करने के लिये बे पर्दगी की या बेटे ने बाप को ख़ुश करने के लिये दाढ़ी मुन्डा दी या एक मुठ्ठी से घटा दी तो वोह इस फ़ज़ीलत का हरगिज़ ह़क़दार नहीं होगा बल्कि मुब्तलाए अ़ज़ाबे नार होगा। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं और उस से रह़मत का सुवाल करते हैं।

किसी के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने वाले चन्द काम

❁ किसी प्यासे को पानी पिला देना ❁ किसी भूके को खाना खिला देना ❁ कोई दुआ के लिये कहे तो हाथों हाथ उस के लिये दुआ कर देना ❁ किसी की बात तवज्जोह से सुन लेना ❁ किसी का मश्वरा मान लेना ❁ किसी की जानिब से की गई इस्लाह़ को क़बूल कर लेना ❁ ज़रूरत मन्द की मदद करना ❁ ह़ाजत मन्द को क़र्ज़ दे देना ❁ पसन्दीदा चीज़ खिलाना ❁ अहम मवाक़ेअ़ पर तोह़फ़ा देना ❁ मज़लूम की मदद करना ❁ दौराने सफ़र बैठने के लिये जगह दे देना।

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम
करें न रुख मेरे पाउं गुनाह का या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

42 नर्म गुफ़्तगू करना

दूसरों से नर्म अल्फ़ाज़ और नर्म लबो लह्जे में गुफ़्तगू करने की आ़दत रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की बहुत ही बड़ी ने'मत है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उस शख़्स के बारे में ख़बर न दूं जो जहन्नम पर ह़राम है, (या येह फ़रमाया कि) जिस पर जहन्नम ह़राम है? जहन्नम हर नर्म ख़ू, नर्म दिल और अच्छी ख़ू वाले शख़्स पर ह़राम है।

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، الحدیث ۲۴۹۶، ج ۴، ص ۲۲۰)

गुस्से से मग़लूब हो कर सख़्त अल्फ़ाज़ या सख़्त रविय्या इख़्तियार कर के ख़ुद को इस फ़ज़ीलत से महरूम न कीजिये, अगर किसी को कुछ समझाना हो या इख़्तिलाफ़े राए का इज़हार करना हो तो इस के लिये भी वोह अन्दाज़ इख़्तियार किया जाए जिस में रूखे पन या सख़्ती के बजाए ख़ैर ख़्वाही और दिल सोज़ी का पहलू नुमायां हो।

मीठे बोल की बरकत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **48** सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "**मीठे बोल**" के सफ़हा **3** पर है : ख़ुरासान के एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में हुक्म हुवा : "तातारी क़ौम में इस्लाम की दा'वत पेश करो ! " उस वक़्त हलाकू ख़ान का बेटा तगूदार ख़ान बर सरे इक़्तिदार था। वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सफ़र कर के तगूदार ख़ान के पास तशरीफ़ ले आए। सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसलमान मुबल्लिग़ को देख कर उसे मस्ख़री सूझी और कहने लगा : "मियां ! येह तो बताओ कि तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे हैं या मेरे कुत्ते की दुम ?" बात अगर्चे गुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा निहायत नर्मी के साथ फ़रमाने लगे : "मैं भी अपने ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुत्ता हूं अगर जां निषारी और वफ़ादारी से उसे ख़ुश करने में कामयाब हो जाऊं तो मैं अच्छा वरना आप के कुत्ते की दुम मुझ से अच्छी है जब कि वोह आप का फ़रमां बरदार व वफ़ादार रहे।" चूंकि वोह एक बा अ़मल मुबल्लिग़ थे। ग़ीबत व चुग़ली, ऐब जूई और बद कलामी नीज़ फ़ुज़ूल गोई वग़ैरा

से दूर रहते हुवे अपनी ज़बान ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हमेशा तर रखते थे लिहाज़ा उन की ज़बान से निकले हुवे **मीठे बोल** ताषीर का तीर बन कर तगूदार ख़ान के दिल में पैवस्त हो गए। जब उस ने अपने "ज़हरीले कांटे" के जवाब में उस बा अ़मल मुबल्लिग़ की त़रफ़ से "ख़ुश्बूदार मदनी फूल" पाया तो पानी पानी हो गया और नर्मी से बोला : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां क़ियाम फ़रमाइये। चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के पास मुक़ीम हो गए। तगूदार ख़ान रोज़ाना रात आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे **नेकी की दा'वत** पेश करते। आप की सअ़्ये पैहम ने तगूदार ख़ान के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया ! वोही तगूदार ख़ान जो कल तक इस्लाम को सफ़्हए हस्ती से मिटाने के दरपे था आज इस्लाम का शैदाई बन चुका था। उसी बा अ़मल मुबल्लिग़ के हाथों तगूदार ख़ान अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसलमान हो गया। उस का इस्लामी नाम "**अह़मद**" रखा गया। तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग़ के मीठे बोल की बरकत से वस्त़े ऐशिया की ख़ूंख़्वार तातारी सल्त़नत इस्लामी ह़ुकूमत से बदल गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस वाक़िए़ को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? मुबल्लिग़ हो तो ऐसा ! अगर तगूदार के तीखे जुम्ले

पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ गुस्से में आ जाते तो हरगिज़ येह मदनी नताइज बर आमद न होते। लिहाज़ा कोई कितना ही गुस्सा दिलाए हमें अपनी ज़बान को क़ाबू में ही रखना चाहिये कि जब येह बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए खेल भी बिगाड़ कर रख देती है। मीठी ज़बान ही तो थी कि जिस की शीरीनी और चाश्नी ने तगूदार ख़ान जैसे वह्शी और ख़ूंख़्वार इन्साने बदतर अज़ हैवान को इन्सानिय्यत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाइज़ कर दिया।

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नर्मी का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े "**मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म नर्मी करने के बारे में भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़्ह़ा **10** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **28** है : आज आप ने (घर में या बाहर) किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर गुस्से का इ़लाज फ़रमाया या बोल पड़े? नीज़ दरगुज़र से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ़ ढूंडते रहे?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

43 मुसलमान भाई को तकया पेश करना

मजलिस में आने वाले मुसलमान को तकया पेश करना बाइषे मग़्फ़िरत है, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे, उस वक़्त अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तकये पर टेक लगाए बैठे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह तकया ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दिया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाहु अकबर** ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हमें भी बताओ कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या फ़रमाया था ?" अ़र्ज़ की : मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तकये से टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह तकये मुझे अ़ता फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया : कोई मुसलमान अपने भाई के पास जाए और वोह उस की तकरीम करते हुवे अपना तकये उसे दे दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।

(المستدرک للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب تکریم المسلم بالقیام...الخ، ج۴، ص۷۸۳، الحدیث:۶۶۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

44 मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हादिये राहे नजात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : अपने भाई से

मुस्कुरा कर मिलना तुम्हारे लिये सदक़ा है और नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना सदक़ा है। (سُنَنِ ترمذی ج ۳ ص ۳۸۴ حدیث ۱۹۶۳)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द "**नेकी की दा'वत**" सफ़ह़ा **254** पर लिखते हैं : बयान कर्दा ह़दीषे मुबारका में मुस्कुरा कर मिलने, नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने को सदक़ा कहा गया। سُبْحٰنَ اللّٰه मुस्कुरा कर मिलने की तो क्या बात है ! मुस्कुरा कर मिलना, मुस्कुरा कर किसी को समझाना उ़मूमन नेकी की दा'वत के मदनी काम को निहायत सह्ल व आसान बना देता और ह़ैरत अंगेज़ नताइज का सबब बनता है। जी हां, आप की मा'मूली सी **मुस्कुराहट** किसी का दिल जीत कर उस की गुनाहों भरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर सकती है और मिलते वक़्त बे रुख़ी और ला परवाही से इधर उधर देखते हुवे हाथ मिलाना किसी का दिल तोड़ कर उस को مَعَاذَاللّٰه गुमराही के गहरे गढ़े में गिरा सकता है, लिहाज़ा जब भी किसी से मिलें, गुफ़्तगू करें उस वक़्त ह़त्तल इम्कान मुस्कुराते रहिये। अगर ख़ुश्क मिज़ाजी या बे तवज्जोगी से मिलने की ख़स्लत है तो मिलनसारी और मुस्कुरा कर मिलने की आ़दत बनाने के लिये ख़ूब कोशिश कीजिये, बल्कि मुस्कुराने की आ़दत पक्की करने के लिये ज़रूरतन किसी की ज़िम्मेदारी भी लगाइये कि वोह दूसरों से बात करते हुवे आप का मुंह फूला हुवा या सपाट महसूस करे तो गाहे ब गाहे याद दिहानी करवाते हुवे कहता रहे या आप को इस त़रह़ की तह़रीर दिखा दिया करे : "**बात करते हुवे मुस्कुराना सुन्नत है।**" जी हां वाक़ेई येह सुन्नत है। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 73 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**हुस्ने अख़्लाक़**" सफ़्ह़ा 15 पर है : ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाती हैं कि वोह हर बात मुस्कुरा कर किया करते, जब मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया : "मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मिलनसारों के रहबर, ग़मज़दों के यावर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौराने गुफ़्त्गू मुस्कुराते रहते थे।"

(مکارِمُ الاخلاق للطَّبرانی،ص۳۱۹،الحدیث۲۱)

जिस की तस्कीं से रोते हुवे हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मग़्फ़िरत कर दी जाती है

ह़ज़रते सय्यिदुना नुफ़ैअ़ आ'मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से मुसाफ़ह़ा फ़रमाया (या'नी हाथ मिलाए) और मुस्कुराने लगे, फिर पूछा : जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। तो फ़रमाने लगे कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे शरफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो मेरे साथ ऐसे ही किया फिर मुझ से पूछा : जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते वक़्त मुसाफ़ह़ा

करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं और दोनों एक दूसरे के सामने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुस्कुराते हैं तो उन के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।

(اَلْمُعْجَم الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی، ج۵، ص۳۶۶، حدیث ۷۶۳۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मज़्कूरा ह़दीषे पाक में लफ़्ज़ "अल्लाह के लिये" अच्छी निय्यत की सराह़त करता है। बहर ह़ाल किसी मुसलमान से हाथ मिलाना और दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराना सिर्फ़ इसी सूरत में बाइ़षे षवाबे आख़िरत व मग़्फ़िरत है जब कि येह हाथ मिलाना और मुस्कुराना सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने की निय्यत से हो। अपनी मिलनसारी का सिक्का जमाने, किसी मालदार या सियासी "शख़्सिय्यत" की ख़ुशनूदी पाने, दुन्यवी मज़्मूम मफ़ाद परस्ती वाली "ज़ाती दोस्ती" बढ़ाने और مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ अम्रद के हाथों के मसास (या'नी छूने) और उस की जवाबी मुस्कुराहट के ज़रीए गुनाहों भरी लज़्ज़त पाने वग़ैरा बुरी निय्यतों के साथ न हो। (माख़ूज़ अज़ "नेकी की दा'वत" स.248)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

45 बेची हुई चीज़ वापस लेना

बा'ज़ अवक़ात एक इस्लामी भाई कोई चीज़ ख़रीदने के बा'द किसी मजबूरी से वापस करना चाहता है ह़ालांकि उस शै में कोई ऐ़ब भी नहीं होता और न ही कोई और शरई वजह होती है जिस से बेचने वाले पर उस चीज़ का वापस लेना वाजिब हो, लेकिन ऐसी सूरत में अगर वोह ख़रीदार की परेशानी ख़त्म करने की निय्यत से वोह चीज़ वापस ले ले (जिसे फ़िक़्ही ज़बान में "इक़ालह"

कहते हैं) तो उसे ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ेगा लेकिन फ़ज़ीलत बहुत बड़ी मिलेगी। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी मुसलमान को बेची हुई चीज़ उस के वापस करने पर वापस ले ली अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की परेशानी को उठा देगा। (سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، ج۳، ص۳۶، الحدیث:۲۱۹۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

46 क़िब्ला रुख़ बैठना

बिल ख़ुसूस तिलावत, दीनी मुताले आ, फ़तावा नवेसी, तस्नीफ़ व तालीफ़, दुआ व अज़्कार और दूरुदो सलाम वग़ैरा के मवाक़ेअ पर और बिल उ़मूम जब जब बैठें या खड़े हों और कोई रुकावट न हो तो अपना चेहरा क़िब्ला रुख़ करने की आ़दत बना कर आख़िरत के लिये षवाब का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कीजिये। (क़िब्ले की दाईं या बाईं जानिब 45 डिगरी के ज़ाविये (या'नी एंगल) के अन्दर अन्दर हों तो क़िब्ला रुख़ ही शुमार होगा) सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उ़मूमन क़िब्ला रू हो कर बैठते थे। (احیاء العلوم، ج۲، ص۴۴۹)

तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) मजालिस में सब से मुकर्रम (या'नी इ़ज़्ज़त वाली) मजलिस (या'नी बैठक) वोह है जिस में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह किया जाए। (المعجم الاوسط، ج۶، ص۱۶۱، الحدیث:۸۳۶۱)

(2) हर शै के लिये शरफ़ (या'नी बुज़ुर्गी) है और मजलिस (या'नी बैठने) का शरफ़ येह है कि इस में क़िब्ले को मुंह किया जाए। (المعجم الکبیر، ج۱۰، ص۳۲۰، الحدیث:۱۰۷۸۱)

(3) हर शै के लिये सरदारी है और मजालिस की सरदारी इस में है कि क़िब्ले को मुंह करना। (المعجم الاوسط، ج۲، ص۲۰، الحدیث: ۲۳۵۴)

मुबल्लिग़ और मुदर्रिस के लिये सुन्नत

मुबल्लिग़ और मुदर्रिस के लिये दौराने बयान व तदरीस सुन्नत येह है कि पीठ क़िब्ले की त़रफ़ रखें ताकि इन से इल्म की बातें सुनने वालों का रुख़ जानिबे क़िब्ला हो सके चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ सख़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़िब्ले को इस लिये पीठ फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन्हें इल्म सिखा रहे हैं या वा'ज़ फ़रमा रहे हैं उन का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ रहे। (المقاصد الحسنۃ، ص۸۸ دار الکتاب العربی بیروت) मुमकिन हो तो मेज़ कुर्सी वग़ैरा इस त़रह़ रखिये कि जब भी बैठें आप का मुंह जानिबे क़िब्ला रहे।

हुसूले षवाब की निय्यत ज़रूर कर लीजिये

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं : अगर इत्तिफ़ाक़ से का'बा रुख बैठ गए और हुसूले षवाब की निय्यत न हो तो अज्र नहीं मिलेगा लिहाज़ा अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिये मषलन येह निय्यतें : (1) षवाबे आख़िरत (2) अदाए सुन्नत और (3) ता'ज़ीमे का'बा शरीफ़ की निय्यत से क़िब्ला रू बैठता हूं। दीनी कुतुब और इस्लामी अस्बाक़ पढ़ते वक़्त येह भी निय्यत शामिल की जा सकती है कि क़िब्ला रू बैठने की सुन्नत के ज़रीए इल्मे दीन की बरकत ह़ासिल करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मदीने शरीफ़ की निय्यत भी शामिल कर लीजिये

पाक व हिन्द नीज़ नेपाल, बंगाल और सीलंका वग़ैरा में जब का'बे की त़रफ़ मुंह किया जाए तो ज़िम्मन मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ भी रुख़ हो ही जाता है लिहाज़ा येह निय्यत भी बढ़ा दीजिये कि ता'ज़ीमन मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ रुख़ करता हूं।

(माख़ूज़ अज़ जिन्नात का बादशाह, स.17)

बैठने का इसीं क़रीना है रुख़ उधर है जिधर मदीना है
दोनों आ़लम का जो नगीना है मेरे आक़ा का वोह मदीना है
रू बरू मेरे ख़ानए का'बा और अफ़कार में मदीना है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

47 मजलिस बरख़ास्त होने की दुआ़ पढ़ना

मजलिस (या'नी बैठक) से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ तीन बार पढ़ लें तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर (या'नी अच्छाई) पर मुहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ

(**तर्जमा :** तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिये तमाम ख़ूबिया हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।) (سنن ابوداؤد ج ۴ ص ۳۴۷، الحدیث: ۴۸۵۷)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस दुआ़ के पढ़ने वालों को अपनी दुआ़ से नवाज़ते हुवे लिखते हैं : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ जो कोई इजतिमाअ़, दर्स, मदनी क़ाफ़िलों के ह़ल्क़े और दीनी व दुन्यवी बैठक के इख़्तिताम पर ह़स्बे ह़ाल येह दुआ़

पढ़े और मौक़अ़ पा कर पढ़वाने की आ़दत बनाए उस को जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस इ़नायत कर और मुझ पापी व बदकार गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में भी येह दुआ़ क़बूल फ़रमा। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

48 मुसलमान से मह़ब्बत रखना

रिज़ाए इलाही पाने के लिये किसी मुसलमान से मह़ब्बत रखना भी कारे षवाब है, चुनान्चे, हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं :

اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ اَلْحُبُّ فِى اللّٰهِ وَالْبُغْضُ فِى اللّٰهِ

या'नी सब से बेहतर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये दुश्मनी करना है।"

(سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب مجانبۃ اھل الأھواء، الحدیث ۴۵۹۹، ج۴، ص۲۶۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत का मत़लब येह है कि किसी से इस लिये मह़ब्बत की जाए कि वोह दीनदार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़दावत का मत़लब येह है कि किसी से अ़दावत हो तो इस बिना पर हो कि वोह दीन का दुश्मन है या दीनदार नहीं। (نزھۃ القاری، ج۱، ص۵۹۲)

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स बावर्ची से इस लिये मह़ब्बत करता है कि इस से अच्छा खाना पकवा कर फ़ुक़रा को बांटे तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत है और अगर आ़लिमे दीन से इस लिये मह़ब्बत करता है कि इस से इ़ल्मे दीन सीख कर दुन्या कमाए तो येह दुन्या के लिये मह़ब्बत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि.1, स.54)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी तुझ से महब्बत फ़रमाता है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक शख़्स किसी शहर में अपने किसी भाई से मिलने गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता उस के रास्ते में भेजा जब वोह फ़िरिश्ता उस के पास पहुंचा तो उस से पूछा : कहां का इरादा है ? उस ने कहा : उस शहर में मेरा एक भाई रहता है उस से मिलने जा रहा हूं। उस फ़िरिश्ते ने पूछा : क्या उस का तुझ पर कोई एहसान है जिसे उतारने जा रहा है ? तो उस ने कहा : नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से महब्बत करता हूं। फिरिश्ते ने कहा : मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे पास भेजा है ताकि तुझे बता दूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी तुझ से इसी तरह महब्बत फ़रमाता है जिस तरह तू उस के लिये दूसरों से महब्बत करता है।

(صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ، باب فضل الحب فی اللہ، الحدیث ۲۵۶۷، ص ۱۳۸۸)

मुझे आप से महब्बत है

हज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मैं ने चमकदार दांतों वाले एक नौजवान को देखा, उस के साथ और लोग भी थे। जब उन में किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हो जाता तो वोह उस की तरफ़ रुजूअ़ करते और उस के क़ौल को फ़ैसल (या'नी फ़ैसला कुन) मानते। मैं ने उन के बारे में किसी से पूछा तो मा'लूम हुवा कि येह हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। अगले दिन मैं

सुब्ह़ सवेरे मस्जिद में पहुंचा तो मैं ने उन्हें पहले से नमाज़ पढ़ते हुवे पाया, मैं ने उन की नमाज़ मुकम्मल होने का इन्तिज़ार किया। जब वोह नमाज़ पढ़ चुके तो मैं उन के सामने से उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और बा'दे सलाम अ़र्ज़ की : "**ख़ुदा की क़सम** ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आप से मह़ब्बत करता हूं।" उन्हों ने मुझ से पूछा : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुझ से मह़ब्बत करते हो ?" अ़र्ज़ की : "जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये।" उन्हों ने फिर पूछा : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुझ से मह़ब्बत करते हो ?" मैं ने दोबारा अ़र्ज़ की : "जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये।" तो उन्हों ने मेरी चादर का किनारा खींच कर मुझे अपने साथ चिमटा लिया और फ़रमाया : तुम्हें मुबारक हो कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मेरे लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले और मेरे लिये इकठ्ठे हो कर बैठने वाले और मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वाले और मेरे लिये ख़र्च करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए।

(موطاامام مالک، کتاب الشعر، باب ماجاء فی المتحابین فی اللہ، الحدیث ۱۸۲۸، ج ۲، ص ۴۳۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

49 रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाना

अगर रास्ते में कोई ऐसी चीज़ पड़ी हो जिस से गुज़रने वालों को तक्लीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो मषलन कोई कांटा या छिलका या पथ्थर वग़ैरा तो ज़रा सी मेह़नत से उसे वहां से हटा दीजिये और अ़ज़ीमुश्शान षवाब के ह़क़दार बनिये, चुनान्चे, ह़ज़रते

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस ने मुसलमानों के रास्ते से ईज़ा पहुंचाने वाली चीज़ हटा दी उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास एक नेकी लिखी जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस नेकी के सबब उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। (المعجم الاوسط، الحدیث ۳۲، ج۱، ص۱۹)

जन्नत में दाख़िला मिल गया

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहा था, उस ने उस रास्ते पर एक कांटेदार शाख़ को पाया तो उसे रास्ते से हटा दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस शख़्स का येह अमल पसन्द आया और उस बन्दे की मग़फ़िरत फ़रमा दी। एक रिवायत में है कि एक शख़्स रास्ते के बीच में पड़ी हुई दरख़्त की शाख़ के क़रीब से गुज़रा तो उस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं मुसलमानों के रास्ते से इसे ज़रूर हटा दूंगा ताकि येह उन्हें तक्लीफ़ न पहुंचाए तो उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। एक रिवायत में है कि मैं ने एक शख़्स को जन्नत में फिरते हुवे देखा क्यूंकि उस ने रास्ते में गिरे हुवे एक दरख़्त को काट दिया था जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचा रहा था। (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، الحدیث ۱۹۱۴، ص۱۴۱۰)

एक नेकी ने जादू नाकाम कर दिया

हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स हद्दाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد पहले पहल एक ख़ूब सूरत कनीज़ पर आशिक़ हो कर अपना सुख चैन खो बैठे। किसी ने आप को बताया कि फ़ुलां अलाक़े में एक यहूदी रहता है

जो जादू का माहिर है, वोह यक़ीनन तुम को तुम्हारी मह़बूबा से मिला देगा। आप फ़ौरन उस यहूदी के पास पहुंचे और उस से अपना तमाम ह़ाल बयान किया। उस यहूदी ने कहा कि तुम्हारा काम हो जाएगा लेकिन इस की शर्त़ येह है कि तुम चालीस दिन तक किसी भी क़िस्म की नेकी नहीं करोगे, पहले इस पर अ़मल करो फिर मेरे पास आना। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस शर्त़ को क़बूल कर लिया और चालीस दिन ह़स्बे शर्त़ गुज़ारने के बा'द आप उस के पास पहुंच गए। उस ने जादू करना शुरूअ़ किया, लेकिन उस का कोई अषर ज़ाहिर न हुवा। कई मरतबा कोशिश करने के बा'द उस ने कहा कि हो न हो, तुम ने इन चालीस दिनों में कोई न कोई नेकी ज़रूर की है, वरना मेरा जादू कभी नाकाम न जाता ! ज़रा सोच कर बताओ ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : मैं ने कोई नेकी नहीं की, हां ! एक दिन रास्ते में पड़े हुवे पथ्थर को इस ख़याल से एक त़रफ़ कर दिया था कि कोई मुसलमान उस से टकरा कर ज़ख़्मी न हो जाए। येह सुन कर उस जादूगर ने कहा : अफ़्सोस है तुम पर कि तुम ने चालीस दिन तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की नाफ़रमानी की और उसे फ़रामोश किये रखा लेकिन उस ने तुम्हारे एक अ़मल को भी ज़ाएअ़ नहीं जाने दिया और इस छोटी सी नेकी को वोह शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शा कि मेरा जादू मुकम्मल त़ौर पर नाकाम हो गया ? इस बात से आप के दिल में एक आग सी लग गई, फ़ौरन तौबा की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए, आख़िरे कार दरजए विलायत पर फ़ाइज़ हुवे। (تذکرۃ الاولیاء، باب سی و ھشتم، ذکر ابو حفص حداد، ج ۱، ص ۲۸۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मुसलमान को तक्लीफ़ से बचाने की मदनी सोच की बदौलत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स ह़द्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد को तौबा नसीब हो गई, मगर अफ़्सोस कि आज कल के मुसलमान इस अ़ज़ीम नेकी से क़दरे ग़ाफ़िल हैं बल्कि उल्टा रास्तों में तक्लीफ़ देह चीज़ें डाल देते हैं मषलन रेल्वे स्टेशन या बस स्टेन्ड पर केले के छिलके फेंक देते हैं फिर जब लोग ट्रेन या बस में सुवार होने के लिये दौड़ते हैं तो इस छिलके से फिसल कर गिर कर ज़ख़्मी हो जाते हैं और बा'ज़ तो ट्रेन या बस के नीचे कुचल कर हलाक भी हो जाते है। इसी त़रह़ बाज़ लोग शादियों या नियाज़ वग़ैरा के मौक़अ़ पर गली में गढ़े खोद कर देगें पकाते हैं और बा'द में इन गढ़ों को खुला ही छोड़ देते हैं जिस की वजह से कई गाड़ियां ह़ादिषे का शिकार होती हैं और कई बुढ्ढे ह़ज़रात इन में गिर कर हड्डियां तुड़वा बैठते हैं। तमाम इस्लामी भाइयों को इस क़िस्म की ह़रकतों से बचना चाहिये बल्कि रास्तों में मौजूद किसी तक्लीफ़ देह चीज़ पर नज़र पड़ जाए तो उस को अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हटा कर षवाब कमाना चाहिये।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स.**195**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

50 जानवरों पर रह़्म खाना

इस्लाम इतना प्यारा मज़हब है कि इस में इन्सान तो इन्सान जानवरों के भी हुक़ूक़ मौजूद हैं, चुनान्चे, जो जानवर सांप, बिच्छू

वग़ैरा की त़रह़ मूज़ी (या'नी अज़िय्यत पहुंचाने वाले) न हो उन को बिला वजह तक्लीफ़ पहुंचाना मन्अ़ है, यहां तक कि जिन जानवरों को खाने के लिये ज़ब्ह़ किया जाता है उन्हें भी ऐसे त़रीक़े से ज़ब्ह़ करने की ताकीद है जिस में उन्हें कम से कम तक्लीफ़ हो, चुनान्चे, मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि जब तुम ज़ब्ह़ करो तो अह़सन (या'नी ख़ूब उ़म्दा) त़रीक़े से ज़ब्ह़ करो और तुम अपनी छुरी को अच्छी त़रह़ तेज़ कर लिया करो और ज़बीह़ा को आराम दिया करो। (صحیح مسلم ص ۱۰۸۰ حدیث ۱۹۵۵) ब वक़्ते ज़ब्ह़ रिज़ाए इलाही की निय्यत से जानवर पर रह़्म खाना कारे षवाब है जैसा कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे बकरी ज़ब्ह़ करने पर रह़्म आता है। फ़रमाया : अगर उस पर रह़्म करोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी तुम रह़्म फ़रमाएगा। (مُسندِ امام احمد بن حنبل ج ۵ ص ۳۰۴ حدیث ۱۵۵۹۲)

जानवरों पर रह़्म की अपील

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**अब्लक़ घोड़े सुवार**" के सफ़ह़ा **15** पर लिखते हैं : **गाए** वग़ैरा को गिराने से पहले ही **क़िब्ले का तअ़य्युन** कर लिया जाए, लिटाने के बा'द बिल ख़ुसूस पथरीली ज़मीन पर घसीट कर क़िब्ला रुख़ करना बे ज़बान जानवर के लिये सख़्त अज़िय्यत का बाइ़ष है। ज़ब्ह़ करने में इतना न काटें कि छुरी गर्दन के मुहर (हड्डी) तक पहुंच जाए कि येह बे वजह की तक्लीफ़ है फिर जब तक जानवर मुकम्मल त़ौर पर ठन्डा न हो जाए न उस के पाउं काटें न खाल उतारें, ज़ब्ह़ कर लेने के बा'द जब तक रूह़ न निकल जाए

छुरी कटे हुवे गले पर मस (TOUCH) करें न ही हाथ। बा'ज़ क़स्साब जल्द "**ठन्डी**" करने के लिये ज़ब्ह़ के बा'द तड़पती गाए की गर्दन की ज़िन्दा खाल उधेड़ कर छुरी घोंप कर दिल की रगें काटते हैं, इसी त़रह़ बकरी को ज़ब्ह़ करने के फ़ौरन बा'द बेचारे की गर्दन चटख़ा देते हैं, बे ज़बानों पर इस त़रह़ के मज़ालिम न किये जाएं। जिस से बन पड़े उस के लिये ज़रूरी है कि जानवर को बिला वजह ईज़ा पहुंचाने वाले को रोके। अगर बा वुजूदे क़ुदरत नहीं रोकेगा तो ख़ुद भी गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार होगा। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3, सफ़ह़ा 660 पर है : "जानवर पर ज़ुल्म करना ज़िम्मी काफ़िर पर (अब दुन्या में सब काफ़िर ह़र्बी हैं) ज़ुल्म करने से ज़ियादा बुरा है और ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना मुसलमान पर ज़ुल्म करने से भी बुरा है क्यूंकि जानवर का कोई मुईनो मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं इस ग़रीब को इस ज़ुल्म से कौन बचाए !" (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتارج ۹ ص ۶۶۳)

मरने के बा'द मज़लूम जानवर मुसल्लत़ हो सकता है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द 2 सफ़ह़ा 323 ता 324 पर है : इन्सान ने नाह़क़ किसी चोपाए को मारा या उसे भूका प्यासा रखा या उस से त़ाक़त से ज़ियादा काम लिया तो क़ियामत के दिन इस से इसी की मिष्ल बदला लिया जाएगा जो इस ने जानवर पर ज़ुल्म किया या उसे भूका रखा। इस पर दर्जे ज़ैल ह़दीषे पाक दलालत करती है।

चुनान्चे, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में एक औ़रत को इस ह़ाल में देखा कि वोह लटकी हुई है और एक बिल्ली उस के चेहरे और सीने को नोच रही है और इसे वैसे ही अ़ज़ाब दे रही है जैसे इस (औ़रत) ने दुन्या में क़ैद कर के और भूका रख कर उसे तक्लीफ़ दी थी। इस रिवायत का हुक्म तमाम जानवरों के ह़क़ में आ़म है। (اَلزَّواجِر ج ۲ ص ۱۷۴)

कुत्ते को पानी पिलाने वाले की बख़्शिश हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक रोज़ एक शख़्स किसी रस्ते से जा रहा था कि उसे सख़्त गर्मी महसूस हुई, उसे एक कुंवां मिल गया वोह कुंवें में उतरा और पानी पिया, जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता हांप रहा है और प्यास की शिद्दत से कीचड़ चाट रहा है। उस शख़्स ने सोचा इस कुत्ते को भी मेरी ही त़रह़ प्यास लगी है, वोह दोबारा कुंवें में उतरा अपने (चमड़े के) मोज़े को पानी से भरा, और मोज़ा अपने मुंह में दबा कर बाहर आया फिर उस प्यासे कुत्ते को पानी पिला दिया। उस का येह अ़मल **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द आया और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी। सह़ाबा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या हमारे लिये चोपयों में भी अज्र है? फ़रमाया : فِیْ كُلِّ كَبِدٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ हर तर जिगर (या'नी ज़ी रूह़) में षवाब है। (صحیح البخاری، کتاب الأدب، باب رحمۃ الناس والبھائم، ج ۴، ص ۱۰۳، الحدیث: ۶۰۰۹)

मख्खी पर रहम करना बाइसे मग़फ़िरत हो गया

किसी ने ख़्वाब में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی को देख कर पूछा : ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, पूछा : मग़फ़िरत का क्या सबब बना ? फ़रमाया : एक मख्खी सियाही (INK) पीने के लिये मेरे क़लम पर बैठ गई, मैं लिखने से रुक गया यहां तक कि वोह फ़ारिग़ हो कर उड़ गई ।

(لطائفُ الْمِنَن وَالْاَخلاق لِلشّعرانی ص٣٠٥)

मख्खी को मारना कैसा ?

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : **याद रहे** ! मख्खियां तंग करती हों तो इन को मारना जाइज़ है ता हम जब भी हुसूले नफ़्अ़ या दफ़्ए़ ज़रर (या'नी फ़ाइदा ह़ासिल करने या नुक़्सान ज़ाइल करने) के लिये मख्खी या किसी भी बे ज़बान जानवर की जान लेनी पड़े तो उस को आसान से आसान त़रीक़े पर मारा जाए ख़्वा मख़्वाह उस को बार बार ज़िन्दा कुचलते रहने या एक वार में मार सकते हों फिर भी ज़ख़्म खा कर पड़े हुवे पर बिला ज़रूरत ज़र्बें लगाते रहने या उस के बदन के टुकडे टुकडे कर के उस को तड़पाने वग़ैरा से गुरेज़ किया जाए। अकषर बच्चे नादानी के सबब च्यूंटियों को कुचलते रहते हैं उन को इस से रोका जाए। च्यूंटी बहुत कमज़ोर होती है चुटकी में उठाने या हाथ या झाड़ू से हटाने से

उ़मूमन ज़ख़्मी हो जाती है, मौक़अ़ की मुनासबत से इस पर फूंक मार कर भी काम चलाया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

51 मरीज़ की इ़यादत करना

बीमार की इ़यादत करना भी बड़े अज्रो षवाब का काम है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मरीज़ की इ़यादत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाइका के ज़रीए़ साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दरजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी।

(الترغیب والترھیب حدیث ۱۳، ج ۴، ص ۱۶۵)

फ़िरिश्ते इ़यादत करेंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ की, कि "मरीज़ की इ़यादत करने वाले को क्या अज्र मिलेगा?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "उस के लिये दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर किये जाएंगे जो क़ियामत तक उस की क़ब्र में रोज़ाना उस की इ़यादत करेंगे।"

(شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور، ص ۱۵۹)

इयादत के सात मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द **3** ह़िस्सा **16** सफ़ह़ा **505** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ۞ मरीज़ (बीमार) की इयादत करना सुन्नत है। ۞ अगर मा'लूम है कि इयादत को जाएगा तो उस बीमार पर गिरां गुज़रेगा ऐसी ह़ालत में इयादत न करे ۞ इयादत को जाए और मरज़ (बीमारी) की सख़्ती देखे तो मरीज़ के सामने येह ज़ाहिर न करे कि तुम्हारी ह़ालत ख़राब है और न सर हिलाए जिस से ह़ालत का ख़राब होना समझा जाता है ۞ उस के सामने ऐसी बातें करनी चाहियें जो उस के दिल को भली मा'लूम हों ۞ उस की मिज़ाज पुर्सी करे ۞ उस के सर पर हाथ न रखे मगर जबकि वोह ख़ुद इस की ख़्वाहिश करे। ۞ फ़ासिक़ की इयादत भी जाइज़ है क्यूंकि इयादत ह़ुक़ूक़े इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है। (बहारे शरीअ़त, जि.**3** स.**505**)

मरीज़ के लिये एक दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त करीब न आया हो और सात मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाएगा :

اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ

मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ، الحدیث ۳۱۰۶، ج ۳، ص ۲۵۱)

इयादत का मदनी इन्आ़म

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े **"मदनी इन्आ़मात"** में से एक मदनी इन्आ़म मरीज़ की इ़यादत का भी है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"72 मदनी इन्आ़मात"** के सफ़्ह़ा **19** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **53** है : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़मख़्वारी की और उस को तोह़फ़ा (ख़्वाह मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़्लेट) पेश करने के साथ साथ **ता'वीज़ाते अ़त्तारिया** के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

उतार दे मेरी नस नस में "मदनी इन्आ़मात"
नसीब होता रहे "मदनी क़ाफ़िला" या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

52 मुसलमान की ह़ाजत रवाई करना

मुसलमान की ह़ाजत रवाई करना कारे षवाब है मषलन उस को रास्ता बता देना, सामान उठाने में उस की मदद कर देना या उस की कोई ज़रूरत पूरी कर देना, अल ग़रज़ किसी भी त़रह़ से उस के

काम आने की बड़ी फ़ज़ीलत है, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने किसी मुसलमान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाइका के ज़रीए साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ौता ज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक ह़ज और एक उ़मरे का षवाब लिखता है। (الترغیب والترھیب حدیث ۱۳، ج ۴، ص ۱۶۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़मख़्वारी व ग़मगुसारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए। लेकिन आह ! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है, आज मुसलमान की इ़ज़्ज़त व आबरू और उस के जानो माल मुसलमान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

परेशानी दूर फ़रमाएगा

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसलमान मुसलमान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न ही उसे रुस्वा करता है और जो कोई अपने भाई की ह़ाजत पूरी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाता है और जो किसी मुसलमान की एक परेशानी दूर करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، ص ۱۳۹۴، الحدیث: ۲۵۸۰)

मैं ने तुम्हारी ह़ाजत पूरी की थी

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूब रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन लोगों को सफ़ों में खड़ा किया जाएगा। फिर जब अहले जन्नत वहां से गुज़रेंगे तो इन में से एक शख़्स एक जहन्नमी के पास से गुज़रेगा तो वोह जहन्नमी कहेगा : "ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद नहीं जब तू ने मुझ से पानी मांगा था और मैं ने तुझे एक घूंट पानी पिलाया था ?" फिर वोह उस शख़्स के लिये शफ़ाअ़त करेगा। फिर उस शख़्स का गुज़र दूसरे जहन्नमी के क़रीब से होगा तो वोह उस से कहेगा : "क्या तुझे वोह दिन याद नहीं कि जब मैं ने तुझे वुज़ू के लिये पानी दिया था ?" तो वोह उस के लिये भी शफ़ाअ़त करेगा। फिर उस का गुज़र तीसरे शख़्स के क़रीब से होगा तो वोह उस से कहेगा : "ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद नहीं जब तू ने मुझे फ़ुलां की ह़ाजत रवाई के लिये भेजा था तो मैं तेरी वजह से चला गया था।" तो वोह उस की भी शफ़ाअ़त करेगा। (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل صدقۃ الماء، ج ۴، ص ۱۹۶، الحدیث: ۳۶۸۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

53 जाइज़ सिफ़ारिश करना

किसी मुसलमान की जाइज़ सिफ़ारिश करना भी बड़े षवाब का काम है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जब कोई साइल आता या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कोई ज़रूरत बयान की जाती तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (हमें साइल के बारे में) इरशाद फ़रमाते :

सिफ़ारिश करो षवाब दिये जाओगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नबी की ज़बान पर जो चाहे फ़ैसला फ़रमाए।

(صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، الحدیث ۱۴۳۲، ج۱، ص ۴۸۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बात का ख़याल रखना बेहद ज़रूरी है कि सिफ़ारिश जाइज़ मक़्सद के लिये हो, कोई नाजाइज़ या नाहक़ काम निकलवाना मक़्सूद न हो नीज़ सिफ़ारिश ह़तमी अन्दाज़ के बजाए लचक वाले अल्फ़ाज़ में होनी चाहिये मषलन अगर आप मुनासिब समझें तो फ़ुलां का येह काम कर दीजिये, चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीषे पाक के इस जुज़ "सिफ़ारिश करो षवाब दिये जाओगे" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी उस साइल या ह़ाजत मन्द की ह़ाजत रवाई के लिये हम से सिफ़ारिश करो तुम को सिफ़ारिश करने का षवाब मिलेगा। मा'लूम हुवा कि ह़ाकिम से ह़क़ और अहले ह़क़ की सिफ़ारिश करना षवाब है कि नेकी करना, नेकी कराना, नेकी का मश्वरा देना सब ही षवाब है। बात़िल की सिफ़ारिश गुनाह है, फ़ुक़्हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि शरई ह़ुदूद (या'नी **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा सज़ा) में सिफ़ारिश ह़राम है और ता'ज़ीरात (या'नी क़ाज़ी की त़रफ़ से बग़र्ज़े मस्लेह़त दी जाने वाली सज़ा) में सिफ़ारिश जाइज़। (मिरआतुल मनाजीह़, जि.6 स.550)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

54 झगड़े से बचना

लड़ाई झगड़ा अच्छी बात नहीं, इस से बचने वाले को अ़ज़ीम बिशारत से नवाज़ा गया है,

चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये अत़राफ़े जन्नत में घर का ज़ामिन हूं। (سُنَن ابی داود، ج ۴ ص ۳۳۲، الحدیث ۴۸۰۰ ملخصًا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि उस की ज़ात से किसी मुसलमान को किसी त़रह़ की भी नाह़क़ तक्लीफ़ न पहुंचे, न उस का माल लूटे, न इ़ज़्ज़त ख़राब करे, न उसे झाड़े न उसे मारे नीज़ मुसलमानों को आपस में झगड़ने से क्या वासित़ा ! येह तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ होते हैं, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से किसी मुसलमान को तक्लीफ़ न पहुंचे। (صحیح بخاری ج ۱ ص ۱۵ حدیث ۱۰)

इस ह़दीषे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि कामिल मुसलमान वोह है जो लुग़तन (या'नी लुग़वी ए'तिबार से) और शरअ़न (भी) हर त़रह़ मुसलमान हो। (और) वोह मोमिन है जो किसी मुसलमान की ग़ीबत न करे, गाली, त़ा'ना, चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ तह़रीर करे।

(मिरआतुल मनाजीह़ जि.1, स.29)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

55 ए'तिकाफ़ करना

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे अब्दे क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है :

مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّ اِحْتِسَابًا غُفِرَلَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ

या'नी जिस शख़्स ने ईमान के साथ षवाब ह़ासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ किया उस के तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (جامع صغیر ص ۵۱۶، الحدیث ۸۴۸۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ब निय्यते ए'तिकाफ़ ठहरने को ए'तिकाफ़ कहते हैं। इस की तीन क़िस्में हैं :

(1) **ए'तिकाफ़े वाजिब :** ए'तिकाफ़ की नज़्र (या'नी मन्नत) मानी या'नी ज़बान से कहा : मैं **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के लिये फ़ुलां दिन या इतने दिन का ए'तिकाफ़ करूंगा तो अब जितने भी दिन का कहा है उतने दिन का ए'तिकाफ़ करना **वाजिब** हो गया।

(2) **ए'तिकाफ़े सुन्नत :** रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ **सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया** है।

(3) **ए'तिकाफ़े नफ़्ल :** नज़्र और सुन्नते मुअक्कदा के इलावा जो ए'तिकाफ़ किया जाए वोह **मुस्तह़ब** (या'नी नफ़्ली) व सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है।

नफ़्ली ए'तिकाफ़ करना निस्बतन आसान है क्यूंकि इस के लिये न रोज़ा शर्त़ है न कोई वक़्त की क़ैद, येह चन्द लम्ह़ात के लिये भी किया जा सकता है, लिहाज़ा जब भी मस्जिद में दाख़िल हों ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये। ए'तिकाफ़ की निय्यत करना कोई मुश्किल काम नहीं, निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, अगर दिल ही में आप ने इरादा कर लिया कि मैं सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत करता हूं तो येही काफ़ी है और अगर दिल में निय्यत

हाज़िर है और ज़बान से भी येही अल्फ़ाज़ अदा कर लें तो ज़ियादा बेहतर है। मादरी ज़बान में निय्यत याद कर लें तो ज़ियादा मुनासिब है । हो सके तो आप येह अ़रबी निय्यत याद कर लीजिये : نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف **तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की। जब तक मस्जिद में रहेंगे कुछ पढ़ें या न पढ़ें ए'तिकाफ़ का षवाब मिलता रहेगा, जब मस्जिद से बाहर निकलेंगे ए'तिकाफ़ ख़त्म हो जाएगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़हबे मुफ़्ताबेही पर (नफ़्ली) ए'तिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त नहीं और एक साअ़त का भी हो सकता है जब से दाख़िल हो बाहर आने तक (के लिये) ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, इन्तिज़ारे नमाज़ व अदाए नमाज़ के साथ ए'तिकाफ़ का भी षवाब पाएगा। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि.5, स.674) एक और जगह फ़रमाते हैं : जब मस्जिद में जाए ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, जब तक मस्जिद ही में रहेगा ए'तिकाफ़ का भी षवाब पाएगा।[1] (ایضاً ج۸ ص۹۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

56 ता'ज़ियत करना

जब किसी का बच्चा बीमार हो जाए, कोई बे रोज़गार या क़र्ज़दार हो जाए, ह़ादिषे का शिकार हो जाए, चोर या डाकू माल ले कर फ़िरार हो जाए, कारोबार में नुक़्सान से हमकिनार हो जाए कोई

مدینہ

1 ए'तिकाफ़ के मज़ीद फ़ज़ाइल जानने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़ज़ीमुश्शान तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल बाब "फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़" का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

चीज़ गुम हो जाने के सबब बे क़रार हो जाए, अल ग़रज़ किसी त़रह़ की भी परेशानी से दो चार हो जाए उस की दिलजूई करना, उसे तसल्ली देना बहुत बड़े षवाब का काम है चुनान्चे, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे रूह़ परवर है : जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती। (المعجم الاوسط، ج٦، ص٤٢٩، الحدیث ٩٢٩٢)

या ख़ुदा सदक़ा नबी का बख़्श मुझ को बे ह़िसाब

नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र में मुझ को न देना कुछ अ़ज़ाब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी इन्आ़मात और ग़म ख़्वारी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा नेक बनने के नुस्ख़े "**मदनी इन्आ़मात**" में से एक मदनी इन्आ़म ग़म ख़्वारी के बारे में भी हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **30** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**72 मदनी इन्आ़मात**" के सफ़ह़ा **19** पर मदनी इन्आ़म नम्बर **53** है : क्या

आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुताबिक़ ग़म ख़्वारी की ? और उस को तोहफ़ा (ख़्वाह मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़लेट) पेश करने के साथ साथ ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

57 तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत देना या उस के क़र्ज़ में कुछ कमी करना

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ज़मीन की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमा रहे थे, जिस ने तंग दस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से बचाएगा। (مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج عن معسر، الحدیث ۶۶۶۶، جلد ۴، ص ۲۴۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने तंग दस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन अपने अ़र्श के साए में जगह देगा जिस दिन उस साए के इलावा कोई साया न होगा।

(ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی انظار المعسر، الحدیث ۱۳۱۰، ج ۳، ص ۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब क़ियामत का दिन होगा और सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा शिद्दते प्यास से ज़बानें बाहर निकल पड़ी होंगी, लोग पसीने में डुबकियां खा रहे होंगे, अ़र्श के साए की सह़ीह़ मा'नों में उसी वक़्त अहम्मिय्यत पता चलेगी, इस की त़लब अपने दिल में पैदा कीजिये, गर्मियों की दोपहर हो और आप चिलचिलाती धूप में लको दक़ सह़रा के अन्दर नंगे पाउं चल रहे हों अगर ऐसे में कोई साइबान या साए की जगह नज़र आ जाए उस वक़्त आप को किस क़दर ख़ुशी होगी इस का आप ब ख़ूबी अन्दाज़ा कर सकते हैं ह़ालांकि क़ियामत की तमाज़त (या'नी गर्मी) के मुक़ाबले में दुन्या की धूप कोई ह़ैषिय्यत ही नहीं रखती । लिहाज़ा बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से "सायए अ़र्श" पाने के लिये आज दुन्या में तंग दस्त क़र्ज़दार को मोहलत देने या उस के क़र्ज़ में कमी करने की आसान नेकी कर लीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में सायए अ़र्श की भीक भी मांगते रहिये । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّنَجِّيَهُ اللّٰهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلْيُنَفِّسْ عَنْ مُعْسِرٍ اَوْ يَضَعْ عَنْهُ

या'नी जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ियामत की बे चैनियों से नजात दिलाए तो उसे चाहिये कि वोह किसी तंग दस्त की मुश्किल आसान कर दे या उस के क़र्ज़ में रिआ़यत कर दे । (صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، الحدیث: ۱۵۶۳، ص ۸۴۵)

या इलाही गर्मिये महशर में जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो
या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहिबे कौषर शहे जूदो अता का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब खुरशीदे हश्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदके़ का षवाब मिलेगा

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी तो उस के लिये हर रोज़ इस क़र्ज़ की मिष्ल सदक़ा करने का षवाब है। फिर मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : "जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी तो उसे रोज़ाना इतना ही माल दो मरतबा सदक़ा करने का षवाब मिलेगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहले तो मैं ने आप को येह फ़रमाते हुवे सुना था कि जिस ने किसी तंग दस्त को मोहलत दी उस के लिये हर रोज़ इस क़र्ज़ की मिष्ल सदक़ा करने का षवाब है, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया कि जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी उस के लिये हर रोज़ इस क़र्ज़ से दो गुना सदक़ा करने का षवाब है!" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उसे रोज़ाना क़र्ज़ की मिक़दार के बराबर माल सदक़ा करने का षवाब तो क़र्ज़ की अदाएगी का वक़्त आने से पहले

मिलेगा, और जब अदाएगी का वक़्त हो गया फिर उस ने क़र्ज़दार को मोहलत दी तो उसे रोज़ाना इतना माल दो मरतबा सदक़ा करने का षवाब मिलेगा।" (مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج عن معسر ...الخ، ج ۴، ص ۲۴۲، الحدیث: ۶۶۷۶)

मैं ने तुझे मुआ़फ़ किया

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक शख़्स जिस ने कभी कोई अच्छा अ़मल न किया था, लोगों को क़र्ज़ दिया करता तो अपने क़ासिद से कहा करता क़र्ज़दार जो कुछ आसानी से दे उसे लिया करो और जिस में क़र्ज़दार को दुश्वारी हो उसे छोड़ दिया करो और चश्मपोशी करो शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे। जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया : क्या तू ने कभी कोई अच्छा अ़मल किया? तो उस ने अ़र्ज़ किया, नहीं, मगर मेरा एक ग़ुलाम था और मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था, जब मैं उसे क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने के लिये भेजता तो उसे कहता जो आसानी से मिले वोह ले लो और जिस में क़र्ज़दार को दुश्वारी हो उसे छोड़ दो और चश्म पोशी करो, शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से चश्म पोशी फ़रमाए। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया : बेशक मैं ने तुझे मुआ़फ़ कर दिया। (سنن النسائی، کتاب البیوع، باب حسن المعاملۃ، الحدیث ۴۷۰۳ ص ۷۵۴)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

58 रिश्तेदार पर सदक़ा करना

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रिश्तेदार पर किये जाने वाले सदक़े का षवाब दोगुना कर दिया जाता है। (المعجم الکبیر، ج ۸، ص ۲۰۶، الحدیث: ۷۸۳۴)

तुम्हारे लिये दुगना षवाब है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब षक़फ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ औ़रतो ! सदक़ा किया करो अगर्चे अपने ज़ेवरात ही से करो।" तो मैं अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास गई और उन से कहा : "आप एक तंगदस्त शख़्स हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें सदक़ा करने का हुक्म दिया है, जाइये और आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछिये कि अगर मैं आप पर सदक़ा करूं तो क्या मेरी त़रफ़ से सदक़ा अदा हो जाएगा ? वरना मैं इसे आप के इ़लावा किसी और पर सदक़ा कर दूं।" तो उन्हों ने फ़रमाया : तुम ख़ुद ही चली जाओ।" लिहाज़ा मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये रवाना हुई तो मैं ने देखा कि अन्सार की एक औ़रत भी येही सुवाल करने के लिये दरे दौलत पर ह़ाज़िर है। हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरऊ़ब रहती थीं, चुनान्चे, जब ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारी त़रफ़ आए तो हम ने उन से कहा : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जा कर अ़र्ज़ करो कि दो औ़रतें दरवाज़े पर येह सुवाल करने के लिये खड़ी हैं कि अगर वोह अपने शोहर और अपने ज़ेरे किफ़ालत यतीमों पर सदक़ा करें तो क्या उन की त़रफ़ से सदक़ा अदा हो जाएगा ? और ऐ बिलाल ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह न बताना कि हम कौन हैं।" जब उन्हों

ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "वोह औ़रतें कौन हैं?" अ़र्ज़ की : 'अन्सार की एक औ़रत और ज़ैनब है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कौन सी ज़ैनब ?" अ़र्ज़ की : "अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) की ज़ौजा।" फ़रमाया : "इन दोनों के लिये दुगना अज्र है, एक रिश्तेदारी का और दूसरा सदक़े का।" (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ..الخ، ص ۵۰۱، الحدیث: ۱۰۰۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

59 तंगदस्त का बक़दरे त़ाक़त सदक़ा करना

आ़म त़ौर पर येही समझा जाता है कि सदक़ा व ख़ैरात वोही करे जिस के पास बहुत सारा माल हो, ह़ालांकि तंगदस्त मुसलमान भी अपनी ह़ैषिय्यत के मुत़ाबिक़ सदक़ा करने का षवाब कमा सकता है बल्कि येह अफ़्ज़ल है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है? फ़रमाया : "तंगदस्त का बक़दरे त़ाक़त सदक़ा देना और वोह सदक़ा जो फ़क़ीर को पोशीदा त़ौर पर दिया जाए।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب فی الرخصۃ فی ذالک، ج ۲، ص ۱۷۹، الحدیث: ۱۶۷۷)

अंगूर का दाना सदक़ा किया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी किताब "मुअत्ता' में नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक मिस्कीन ने उम्मुल मोअमिनीन

ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से खाने का सुवाल किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सामने कुछ अंगूर रखे हुवे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने किसी से फ़रमाया : "इन में से एक दाना उठा कर उसे दे दो।" उसे इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा लेकिन उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : तुम ह़ैरान क्यूं हो रहे हो येह तो देखो कि इस दाने में कितने ज़र्रात हैं ?

(المؤطا للامام مالک، کتاب الصدقۃ، باب الترغیب فی الصدقۃ، ج۲، ص۴۷۴، الحدیث: ۱۹۳۰)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

60 छुपा कर सदक़ा देना

सदक़ा व ख़ैरात की कषरत नेकियों में इज़ाफ़े, गुनाहों के इज़ाले और अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचने का मुअष्षिर ज़रीआ़ है। येह सब फ़ज़ाइल व फ़वाइद अपनी जगह मगर छुपा कर सदक़ा देने का षवाब ज़ियादा है, इस लिये अगर अ़लानिय्या सदक़ा व ख़ैरात करने में दूसरों को तरग़ीब देने जैसी कोई मस्लेह़त न हो तो रियाकारी से बचने की अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ छुपा कर सदक़ा दीजिये और इस बिशारत के ह़क़दार बनिये चुनान्चे, एक मरतबा सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन सात अफ़राद का तज़किरा फ़रमाया जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अ़र्श के साए में उस दिन जगह देगा जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया न होगा, इन में से एक शख़्स वोह होगा जो इस त़रह़ छुपा कर सदक़ा दे कि उस के दाएं हाथ ने जो सदक़ा दिया बाएं हाथ को इस का पता न चले।

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، ج۱، ص۶۳۲، الحدیث: ۶۶۰)

बा'दे विसाल सख़ावत का पता चला

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़िन्दगी में दो मरतबा अपना सारा माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत से मसाकीने मदीना के घरों में ऐसे पोशीदा त़रीक़े से रक़म भेजा करते थे कि उन्हें ख़बर ही नहीं होती थी कि येह रक़म कहां से आती है ? जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया तो उन ग़रीबों को पता चला कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **सख़ावत** थी ।

(سیر اعلام النبلاء، ج ۵، ص ۲۳۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

61 अहले ख़ाना पर ख़र्च करना

इस दुन्या में हर कोई अपने घर वालों के लिये कमाता और इन पर ख़र्च करता है, लेकिन इस मुआ़शी दौड़ धूप में ज़ियादा तर क़ल्बी जज़्बात कार फ़रमा होते हैं कि मेरे मां बाप, बीवी बच्चों और भाई बहनों को ख़ुशह़ाली मिले इन्हें भूक प्यास और तंगदस्ती का सामना न करना पड़े लेकिन येह बहुत कम इस्लामी भाइयों को मा'मूल होगा कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने घर वालों पर ख़र्च किया जाए तो इस का भी षवाब है, महज़ निय्यत दुरुस्त कर लेने की सूरत में आसानी से षवाब कमाया जा

सकता है । चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई शख़्स षवाब की निय्यत से अपने अहले ख़ाना पर ख़र्च करता है तो वोह उस के लिये सदक़ा होता है ।

चादर जौ़जा को देना भी सदक़ा

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन उमय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान या अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) एक ऊनी चादर को ख़रीदने के लिये भाव तै़ कर रहे थे कि मेरा वहां से गुज़र हुवा और मैं ने वोह चादर ख़रीद कर अपनी बीवी सुख़ैला बिन्ते उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को ओढ़ा दी । जब हज़रते सय्यिदुना उ़षमान या अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का वहां से गुज़र हुवा तो उन्हों ने पूछा : ''तुम ने जो चादर ख़रीदी थी उस का क्या हुवा ?'' मैं ने कहा : ''उसे मैं ने सुख़ैला बिन्ते उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर सदक़ा कर दिया है ।'' तो उन्हों ने पूछा : ''जो कुछ तुम अपने घर वालों पर ख़र्च करते हो क्या वोह सदक़ा है ?'' मैं ने जवाब दिया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ फ़रमाते हुवे सुना है । जब मेरी येह बात रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ज़िक्र की गई तो फ़रमाया : ''अम्र ने सच कहा है तुम जो कुछ अपने घर वालों पर ख़र्च करते हो वोह उन पर सदक़ा ही है ।''

(الترغیب والترھیب، کتاب النکاح، الترغیب فی النفقۃ...الخ، ج ۳، ص ۴۳، الحدیث: ۱۵)

ज़ौजा को पानी पिलाया

हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : "जब कोई शख़्स अपनी बीवी को पानी पिलाता है तो उसे इस का अज्र दिया जाता है।" तो मैं अपनी बीवी के पास आया और उसे पानी पिलाया और जो कुछ मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना था, उसे भी सुना दिया।

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی نفقۃ الرجل...الخ، ج ۳، ص ۳۰۰، الحدیث: ۴۶۵۹)

Allah عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

62 सुवाल न करना

दूसरों से सुवाल करना मुरव्वत के ख़िलाफ़ है, सुवाल से बचिये और जन्नत की ज़मानत के हक़दार बनिये, चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुझे इस बात की ज़मानत दे कि किसी से सुवाल न करेगा तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" हज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ज़मानत देता हूं।" लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी से कुछ न मांगा करते थे। एक रिवायत में यहां तक आया है कि अगर हज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घोड़े पर सुवार होते और आप का कोड़ा नीचे गिर जाता तो किसी से

उठाने के लिये न कहते बल्कि घोड़े से नीचे उतर कर खुद ही कोड़ा उठाते थे । (سنن ابن ماجہ، کتاب الزکاۃ، باب کراھیۃ المسئلۃ، ج ۲، ص ۴۰۰، الحدیث: ۱۸۳۷)

मुझे प्यास लगी है

मन्क़ूल है कि मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن को जब प्यास लगती तो फ़रमाते : मुझे प्यास लगी है । ख़िदमत गार मुआ़मला समझ कर आप की बारगाह में पानी ह़ाज़िर कर देते और यूं आप को सुवाल भी न करना पड़ता । *अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

63

क़र्ज़ देना

आ़म तौ़र पर हम क़र्ज़ का लैन दैन करते ही रहते हैं लेकिन बहुत कम इस्लामी भाइयों को मा'लूम होगा कि क़र्ज़ देना भी कारे षवाब है, चुनान्चे, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मे'राज की रात मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा देखा कि सदक़े का षवाब दस गुना है और क़र्ज़ का अठ्ठारह गुना ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب القرض، ج ۳، ص ۱۵۴، الحدیث: ۲۴۳۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

64 अदा करने की निय्यत से क़र्ज़ लेना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़ की अदाएगी तक क़र्ज़ लेने वाले के साथ होता है जब तक वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी न करे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपने ख़ाज़िन से फ़रमाया करते : जाओ मेरे लिये क़र्ज़ ले कर आओ क्यूंकि जब से मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह ह़दीष सुनी है मैं पसन्द करता हूं कि मैं इस ह़ाल में रात गुज़ारूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ हो।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الصدقات، ج ۳، ص ۱۴۲، الحدیث: ۲۴۰۹)

क़र्ज़ लौटाने की दिलचस्प ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का तज़किरा कर के फ़रमाया कि उस ने बनी इस्राईल के किसी शख़्स से एक हज़ार दीनार बतौ़रे क़र्ज़ मांगे तो इस शख़्स ने मुत़ालबा किया : "मेरे पास कोई गवाह लाओ ताकि मैं उन्हें गवाह बना लूं।" तो क़र्ज़दार ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की गवाही काफ़ी है।" क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा : कोई ज़ामीन ले कर आओ। क़र्ज़दार ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत काफ़ी है।" क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा : "तुम सच कहते हो।" फिर उस ने एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिये इस शख़्स को एक हज़ार दीनार दे दिये। फिर येह शख़्स समन्दरी

सफ़र पर रवाना हो गया और अपना काम पूरा कर के किसी कश्ती को तलाश करने लगा ताकि उस पर सुवार हो कर मुक़र्ररा मुद्दत पूरी होने तक क़र्ज़ की अदाएगी के लिये उस शख़्स के पास जाए मगर इसे कोई कश्ती न मिली। (बिल आख़िर) इस ने एक लकड़ी ली और उस में सूराख़ कर के एक हज़ार दीनार और क़र्ज़ ख़्वाह के नाम एक ख़त उस सूराख़ में डाला और उसे बन्द कर दिया। फिर वोह लकड़ी ले कर समन्दर के किनारे आया और येह दुआ मांगी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि जब मैं ने फ़ुलां शख़्स से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ मांगा तो उस ने मुझ से गवाह मांगा था तो मैं ने कहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की गवाही काफ़ी है तो वोह तेरे गवाह होने पर राज़ी हो गया था फिर उस ने मुझ से ज़ामिन त़लब किया तो मैं ने कहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत काफ़ी है तो वोह तेरी ज़मानत पर राज़ी हो गया और तू येह भी जानता है कि मैं ने कश्ती के हुसूल के लिये कोशिश की ताकि येह माल इस के मालिक तक पहुंचा सकूं मगर मैं इस में कामयाब न हो सका, लिहाज़ा ! अब मैं इस अमानत को तेरे ही सिपुर्द कर रहा हूं।" येह कह कर उस ने लकड़ी को समन्दर में फेंक दिया और अपने शहर जाने के लिये कश्ती की तलाश में दोबारा निकल खड़ा हुवा। दूसरी जानिब वोह शख़्स जिस ने इसे क़र्ज़ दिया था, दूसरे किनारे पर आया कि शायद कोई सफ़ीना इस के माल को ले कर आए। अचानक उस ने उसी लकड़ी को देखा जिस में क़र्ज़दार ने माल छुपाया था। उस ने वोह लकड़ी उठा ली ताकि घर में ईंधन के त़ौर पर इस्ति'माल कर सके। जब उस ने लकड़ी को काटा तो उस में से माल और (उस के नाम लिखी गई)

तह़रीर बर आमद हुई ! इस के बा'द क़र्ज़दार एक हज़ार दीनार ले कर आया और कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तेरा माल वापस कर ने तेरे पास आने के लिये मुसलसल कश्ती की तलाश में था मगर मुझे आने के लिये कोई कश्ती न मिल सकी।" येह सुन कर क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी त़रफ़ से वोह माल अदा कर दिया है जो तू ने लकड़ी में डाल कर भेजा था।" येह सुन कर वोह अपने एक हज़ार दीनार ले कर ख़ुशी ख़ुशी लौट गया।

(صحیح البخاری، کتاب الکفالۃ، باب الکفالۃ فی القرض...الخ، ج۲، ص۷۳، الحدیث:۲۲۹۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

65 यतीम के सर पर शफ़्क़त से हाथ फेरना

यतीमों पर रह़मत व शफ़्क़त और उन के साथ हुस्ने सुलूक करना बेह़द अज्रो षवाब का बाइ़ष है ह़त्ता कि उन के सर पर शफ़्क़त व मह़ब्बत से हाथ फेरने का भी षवाब मिलता है, लिहाज़ा अगर कोई मानेए़ शरई़ न हो तो किसी यतीम के सर पर शफ़्क़त से हाथ फेरिये कि हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे हर बाल के इ़वज़ एक एक नेकी मिलेगी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किसी यतीम[1] के सर पर हाथ फेरेगा तो जिस जिस बाल पर से उस का हाथ गुज़रेगा इस के इ़वज़ हाथ फेरने

مدینہ

1 : बच्चा या बच्ची उस वक़्त तक **यतीम** हैं जब तक नाबालिग़ हैं जूंही बालिग़ हुवे **यतीम** न रहे। लड़का बारह और पन्दरह साल के दरमियान बालिग़ और लड़की नव और पन्दरह साल के दरमियान बालिग़ा होती है।

वाले के लिये नेकियां लिखी जाएंगी और जो अपने ज़ेरे किफ़ालत यतीम (लड़के या लड़की) के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं और वोह जन्नत में इस त़रह़ होंगे । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और बीच वाली उंगलियों को जुदा कर दिया ।

(مسند احمد، حدیث ابی امامہ الباھلی، الحدیث ۲۲۲۱۵، ج۸، ص۲۷۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

66 तल्बिय्या पढ़ना

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मोह़रिम (या'नी एह़राम बान्धने वाला) दिन की इब्तिदा से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तल्बिय्या पढ़ता है तो सूरज ग़ुरूब होते वक़्त उस के गुनाहों को साथ ले जाता है और वोह शख़्स गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب الظلال للمحرم، ج۳، ص۴۲۴، الحدیث: ۲۹۲۵)

तल्बिय्या :-

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

67 बैतुल्लाह में दाख़िल होना

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۶﴾ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ إِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ

(پ ۴، ال عمرٰن: ۹۶۔۹۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा इस में खुली निशानियां हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो ।*

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो बैतुल्लाह में दाख़िल हुवा वोह भलाई में दाख़िल हो गया और बुराई से पाक हो कर मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर निकला । (صحیح ابن خزیمۃ، کتاب المناسک، باب استحباب دخول الکعبۃ...الخ، ج ۴، ص ۳۳۲، الحدیث: ۳۰۱۳)

ह़त़ीम में दाख़िल होना का'बा शरीफ़ में दाख़िल होना है

का'बए मुअ़ज़्ज़मा की शिमाली दीवार के पास निस्फ़ दाइरे की शक्ल में फ़सील (या'नी बाऊन्ड्री) के अन्दर का हिस्सा "ह़त़ीम" कहलाता है। ज़मानए जाहिलिय्यत में जब क़ुरैश ने का'बा अज़ सरे नौ ता'मीर किया, ख़र्च की कमी के बाइ़ष इतनी ज़मीन का'बए मुअ़ज़्ज़मा से बाहर छोड़ दी। इस के गिर्दा गिर्द एक क़ौसी अन्दाज़ की छोटी सी दीवार खींच दी इसी को ह़त़ीम कहते हैं । येह मुसलमानों की ख़ुश नसीबी है कि इस में दाख़िल होना का'बए मुअ़ज़्ज़मा ही में दाख़िल होना है जो بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی बे तकल्लुफ़ नसीब हो सकता है। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. **1094** मुलख़्ख़सन)

लेकिन ख़याल रहे कि बैतुल्लाह की इमारत में दाख़िल होना नसीब हो या ह़तीम में दोनों सूरतों में दूसरों को धक्के देने से बचिये और इस्लामी भाई अपने जिस्म को इस्लामी बहनों से मस होने (या'नी छू जाने) से बचाइये जब कि इस्लामी बहनें भी येही एह़तियात़ करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

68 आबे ज़म ज़म पीना

आबे ज़म ज़म की क्या बात है ! इस को ब निय्यते इबादत देखने से एक साल की इबादत का षवाब मिलता है और इस को पी कर जो भी दुआ़ मांगी जाए वोह क़बूल होती है।

(المسلک المتقسط المعروف مناسک الملا علی قاری، ص ۴۹۵)

क़ियामत की प्यास से तह़फ़्फ़ुज़ के लिये पी रहा हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें पर आए और एक डोल पानी पीने के बा'द क़िब्ला रुख़ हो कर दुआ़ मांगी : 'ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन मुअम्मिल ने अबू ज़ुबैर से और उन्हों ने जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हुवे येह ह़दीष बयान की है कि साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''आबे ज़म ज़म उसी के लिये है जिस के लिये इसे पिया जाए।'' लिहाज़ा मैं क़ियामत की प्यास से तह़फ़्फ़ुज़ के लिये इसे पी रहा हूं।''

(المتجر الرابح، ثواب ماء زمزم، ص ۳۳۴، الحدیث: ۳۹۸ وشعب الایمان، باب فی المناسک، ج ۳، ص ۱۸۴، الحدیث: ۸۲۱۴)

नफ़्अ़ बख़्श इल्म, वसीअ़ रिज़्क़ और तन्दुरुस्ती मांगते

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا जब आबे ज़म ज़म पीते तो येह दुआ़ मांगते :

اَللّٰھُمَّ اَسۡئَلُکَ عِلۡماً نَافِعاً وَّ رِزۡقاً وَّاسِعاً وَّ شِفَاءً مِّنۡ کُلِّ دَآءٍ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से नफ़्अ़ देने वाला इ़ल्म, वसीअ़ रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

(المستدرک، کتاب المناسک، باب ماء زمزم لما شرب لہ، ج۲، ص۱۳۲، الحدیث: ۱۷۸۲)

येह ज़म ज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई
इसी ज़म ज़म में जन्नत है इसी ज़मज़म में कौषर है

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिह़्ह़त मन्द हो गए

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "ज़म ज़म खाने की जगह खाना और बीमारी से शिफ़ा है।" (المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الحج، باب فی فضل زمزم، الحدیث ۲، ج۴، ص۸۵۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ इब्तिदाए इस्लाम में जब सह़ाबा (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) चालीस (40) तक न पहुंचे थे, उस ज़माने में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा आए। वहां न किसी से शनासाई (या'नी जान पहचान) न किसी से मुलाक़ात। एक महीना कामिल वोही ज़म ज़म शरीफ़ पिया, ह़ालत येह हुई की पेट की बल्टें उलट पड़ीं। (या'नी ख़ूब तवानाई आ गई) (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، الحدیث ۲۴۷۳، ص۱۳۴۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पेट भर कर पीना चाहिये

आबे ज़म ज़म जब भी पीना नसीब हो इस को पेट भर कर पीना चाहिये। मोह़सिने अहले सुन्नत सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं, वहां जब पियो पेट भर कर पियो। ह़दीषे पाक में है : हम में और मुनाफ़िक़ों में येह फ़र्क़ है कि वोह ज़मज़म कूख (या'नी पेट) भर कर नहीं पीते।

(بہارِ شریعت حصہ ۶ ج ۱ ص ۱۱۰۵، سنن ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب الشرب من زمزم، الحدیث ۳۰۶۱، ج ۳ ص ۴۸۹)

येह आबे ज़म ज़म है

एक मरतबा तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की **मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़ह के इस्लामी भाई अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे। इस दौरान आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने खड़े हो कर पानी पिया। फिर वज़ाह़त करते हुवे कुछ इस त़रह़ से फ़रमाया : येह आबे ज़म ज़म है, इस लिये मैं ने खड़े हो कर पिया और आप को बताने में मेरी एक निय्यत येह भी है कि कहीं कोई इस्लामी भाई **बद गुमानी** में मुब्तला न हो जाए।

(बदगुमानी, स.57)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

69 मुसीबत छुपाना

मुसीबत बसा अवक़ात मोमिन के ह़क़ में रह़मत हुवा करती है और सब्र कर के अ़ज़ीम अज्र कमाने और बे ह़िसाब जन्नत में जाने का मौक़अ़ फ़राहम करती है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने पोशीदा रखा और लोगों को इस की शिकायत न की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، الحدیث ۱۷۸۷۲، ج۱۰، ص۴۵۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ख़्म, बीमारी, घबराहट, नींद उचट जाना, तंग दस्ती और हर त़रह़ की जानी या माली नुक़्सानों और परेशानियों पर सब्र करते हुवे बिला वजह दूसरों पर ज़ाहिर करने से बच कर मग़्फ़िरत की बिशारत के ह़क़दार बनिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

70 सब्र करना

सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मख़्लूक़ को जम्अ़ फ़रमाएगा तो एक मुनादी निदा करेगा : "अहले फ़ज़्ल कहां हैं ?" तो कुछ लोग खड़े होंगे जो ता'दाद में निहायत क़लील होगें। जब येह जल्दी से जन्नत की त़रफ़ बढ़ेंगे तो फ़िरिश्ते इन से मिलेंगे और कहेंगे : "हम देख रहे हैं कि तुम तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ जा रहे हो तुम हो कौन ?" तो वोह जवाब देंगे कि हम अहले फ़ज़्ल हैं। फ़िरिश्ते पूछेंगे : तुम्हारा

फ़ज़्ल क्या है ? वोह जवाब देंगे : जब हम पर ज़ुल्म किया जाता था तो हम सब्र करते थे और जब हम से बुराई का बरताव किया जाता था तो उसे बरदाश्त करते थे। फिर उन से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ और अच्छे अ़मल वालों का षवाब कितना अच्छा है ! (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، الحدیث ۱۸، ج ۳، ص ۲۸۱)

सब्र किसे कहते हैं ?

सब्र का मत़लब येह है कि परेशानी के मौक़अ़ पर ज़बान तो ज़बान ! मुंह बना कर या दीगर आ'ज़ा के इशारे से भी बे चैनी और बेक़रारी का इज़हार न किया जाए। चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : सब्र के मा'ना हैं "रोकना"। जब कि शरीअ़त में कामयाबी की उम्मीद से मुसीबत पर बेक़रार न होने को **सब्र** कहते हैं। सब्र की तीन क़िस्में हैं (1) मुसीबत में सब्र करना (2) इ़बादत और इत़ाअ़त की मशक़्क़तों पर सब्र करना और इन पर क़ाइम रहना (3) नफ़्स को गुनाह की त़रफ़ माइल होने से रोकना। इस को यूं समझो कि मुसीबत में दिल चाहता है कि बेक़रारी और बेचैनी का इज़हार करे अब दिल को क़ाबू में रखना और राज़ी ब रिज़ा रहना **पहली क़िस्म का सब्र** है। सर्दी के मौसिम में ठन्डे पानी से वुज़ू करने की हिम्मत नहीं पड़ती, इसी त़रह़ ज़कात निकालने को जी नहीं चाहता अब दिल पर जब्र कर के इन कामों को कर गुज़रना **दूसरी क़िस्म का सब्र** है। गाने बजाने की त़रफ़ दिल माइल है, हम देखते हैं कि सूदख़ोर बड़े मज़े से पैसे कमा रहे हैं हमारा दिल भी चाहता है कि येह ह़रकत करें अब दिल को रोकना और उधर न जाने देना **तीसरी क़िस्म का सब्र** है। (तफ़्सीरे नईमी, जि.1, स.337-338)

है सब्र को ख़ज़ानए फ़िरदौस आशिक़ो !
लब पे तुम्हारे शिक्वा भला कैसे आ सके

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब्र कर के अज्र कमाने के बा'ज़ मवाक़ेअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल हमारी ह़ालत किस क़दर बद से बदतर होती जा रही है, हम तो मा'मूली सी तक्लीफ़ भी बरदाश्त करने की कोशिश नहीं करते, या'नी अगर आसानी से षवाब ह़ासिल हो रहा होता है जब भी हम उसे ज़ाएअ़ कर देते हैं, हमें क़दम क़दम पर सब्र का षवाब कमाने का मौक़अ़ मिलता है। मषलन

(1) रास्ते में पड़े हुवे केले के छिलके पर पाउं फिसल गया या ठोकर लग गई शिक्वा करने और दूसरों को कोसने के बजाए अगर सब्र करें तो अज्र मिलेगा। ज़ाहिर है ऊल फ़ूल बकने से न तो चोट सह़ीह़ होगी न ही षवाब मिलेगा बल्कि नुक़्सान ही नुक़्सान होगा। (2) राह चलते किसी का धक्का लग गया, बजाए उस से उलझने के सब्र कर लिया जाए। (3) किसी गाड़ी से टकरा गए। (4) गाड़ी चलाने वाले ने कोई बात उल्टी सीधी कह दी। (5) हम राह चल रहे थे, सड़क पर "**ट्रेफ़िक जाम**" हो गया, सख़्त गर्मी भी है, हॉर्न की आवाज़ों से कान फटे जा रहे हैं, (ऐसे वक़्त लोग बहुत बड़ बड़ाते, गालियां बकते हैं, ह़ालांकि ऐसा करने से ट्रेफ़िक बह़ाल नहीं हो जाता। काश ! ज़रा ख़ामोश रहते तो सब्र करने का षवाब तो मिल जाता) (6) किसी ने आवाज़ कस दी। (7) कंकर मार दिया।

(8) त़ा'नाज़नी की, (9) घर में भाई बहनों ने मज़ाक़ उड़ाया। (10) पड़ोसी ने हुस्ने सुलूक नहीं किया या कोई ज़ियादती की। (11) मस्जिद में जूते चोरी हो गए। (12) जेब कट गई। (13) किसी ने ऊपर से कूड़ा डाल दिया। (14) किसी ने बात काट दी। (15) आप ने सुन्नतों भरा बयान किया, किसी ने बेजा तन्क़ीद कर दी या आवाज़ व अन्दाज़ की हंसी उड़ाई। (16) किसी के यहां मेहमान हुवे और उस ने चाए पानी का नहीं पूछा। (17) सुन्नत के मुत़ाबिक़ खा पी रहे थे तो किसी ने तन्ज़ कर दिया। (18) कभी घर में बिजली चली गई। (19) पानी बन्द हो गया। (20) मालिके मकान या किराएदार ने ज़ुल्म किया। (21) बस वग़ैरा में भीड़ में किसी ने आप के पाउं पर अपना पाउं रख दिया। (22) कोई सिगरेट पी रहा है या किसी क़िस्म की बद बू से जब तक्लीफ़ पहुंची (23) अपनी गाड़ी वग़ैरा में कोई नुक़्सान हो गया। (24) कोई पुर्ज़ा टूट गया। (25) पंचर ही हो गया। (26) रास्ते में कीचड़ की वजह से परेशान हो गए। (27) खाने वग़ैरा में नमक मिर्च कमो बेश हो गया। (28) कोई कड़वी चीज़ मुंह में आ गई, जैसे बादाम की कड़वी गिरी। (29) खाना गर्म नहीं था और त़बीअ़त गर्म खाना चाहती थी। (30) ठन्डे पानी की ख़्वाहिश थी मगर सादा पानी मिला (31) चाए या पान वग़ैरा की ख़्वाहिश थी मगर मुयस्सर नहीं आया, जिस से त़बीअ़त में कुछ परेशानी हुई। (32) किसी ने गाली दे दी, (33) कोई ऐसी बात कह दी जो नागवार ख़ात़िर हुई। (34) ख़रीदो फ़रोख़्त के मवाक़ेअ़ पर नागवार मुआ़मला पेश आ गया। (35) कारोबार कम हुवा, (36) किसी ने धोका दे दिया।

(37) सेठ बद मिज़ाज है या नोकर बद अख़्लाक़ है। (38) किसी ने थूक फेंका और अपने ऊपर आ पड़ा। (39) किसी वजह से पाउं फिसल गया या गिर गए तो लोग हंसे या ख़ुद चोट खाई। (40) किसी ने ग़लत फ़हमी में कुछ तल्ख़ बातें सुना दीं, वग़ैरा वग़ैरा, इस क़िस्म के मुआमलात उ़मूमन रोज़ मर्रा पेश आते ही रहते हैं, ऐसे मवाक़ेअ़ पर सब्र कर लीजिये और अज्र कमाइये, इन मवाक़ेअ़ पर उ़मूमन बे सब्रे लोग बड़ बड़ाते, गालियां तक बकते सुने जाते हैं, अब जो होना था वोह हो गया। बेजा बे सब्री का मुज़ाहरा करने से तक्लीफ़ या परेशानी तो दूर नहीं होती, फिर सब्र कर के ख़ज़ानए अज्र क्यूं न ह़ासिल किया जाए।

(अज़ इफ़ादाते अमीरे अहले सुन्नत)

आदमी ह़ौसला हारे न परेशानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती नहीं मौजों की तुग़यानी में जिस की किश्ती हो मुह़म्मद की निगेहबानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

71 अ़फ़्वो दर गुज़र करना

अगर एक शख़्स से दूसरे को कोई तक्लीफ़ पहुंच जाए तो उसे शरीअ़त की ह़ुदूद में रह कर बदला लेने का ह़क़ ह़ासिल है या फिर क़ियामत में उसे उस का ह़क़ दिलवाया जाएगा लेकिन नफ़्स पर गिरां होने के बा वुजूद अगर मुआ़फ़ कर दिया जाए तो ढेरों षवाब ह़ासिल हो सकता है। इस ह़वाले से यूं भी ज़ेह्न बनाया जा सकता है कि मैं ने भी इस को वैसी ही तक्लीफ़ पहुंचा दी जैसी इस ने मुझे पहुंचाई या इसे आख़िरत में अ़ज़ाब हुवा तो मेरा इस में क्या फ़ाइदा?

लेकिन अगर मैं इसे मुआ़फ़ कर दूं तो मेरे गुनाह मुआ़फ़ होंगे और दरजात की बुलन्दी भी नसीब होगी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَامِنْ رَجُلٍ يُّصَابُ بِشَیْءٍ فِیْ جَسَدِہٖ فَيَتَصَدَّقُ بِہٖ اِلَّا رَفَعَہُ اللّٰہُ بِہٖ دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْہُ بِہٖ خَطِيْئَةً या'नी जिस शख़्स के जिस्म को कोई तक्लीफ़ पहुंची और वोह इसे (या'नी तक्लीफ़ पहुंचाने वाले मुसलमान को) मुआ़फ़ कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के दरजात बुलन्द कर देता है और उस के गुनाह मिटा देता है। (سنن الترمذی، کتاب الدیات، باب ماجاء فی العفو، الحدیث: ۱۳۹۸، ج ۳، ص ۹۷)

अगर हमें कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो बदला लेने के बजाए मुआ़फ़ कर देने पर हमें भी इस फ़ज़ीलत से ह़िस्सा नसीब हो जाएगा, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : **''उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं।''** तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। (المعجم الاوسط، ج ۱، ص ۵۴۲، حدیث ۱۹۹۸)

क़ातिलाना ह़म्ले की कोशिश करने वाले को मुआ़फ़ फ़रमा दिया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **873** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सीरते मुस्त़फ़ा''** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ह़ा **604** ता **605** पर है : एक सफ़र में नबिय्ये

मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि ग़ौरष बिन ह़ारिष ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने के इरादे से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तल्वार ले कर नियाम से खींच ली, जब सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हुवे तो ग़ौरष कहने लगा : ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अब आप को मुझ से कौन बचा सकता है? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह**।" नबुव्वत की हैबत से तल्वार उस के हाथ से गिर पड़ी और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तल्वार हाथ मुबारक में ले कर फ़रमाया : अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है? ग़ौरष गिड़गिड़ा कर कहने लगा : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही मेरी जान बचाइये। रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को छोड़ दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे, ग़ौरष अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं जो दुन्या के तमाम इन्सानों में सब से बेहतर है। (الشّفا، ج۱، ص۱۰۶)

सलाम उस पर कि जिस ने ख़ूं के प्यासों को क़बाएं दीं
सलाम उस पर कि जिस ने गालियां सुन कर दुआ़एं दीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

72 सुल्ह़ करवाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मुसलमान मुसलमान का भाई होता है और इन्हें आपस में मह़ब्बत व इत्तिफ़ाक़ से रहना चाहिये मगर शैत़ान को येह क्यूंकर गवारा हो सकता है चुनान्चे, वोह

मर्दूद मुसलमानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारत गिरी करवाता है, बा'ज़ अवक़ात दुश्मनी का सिलसिला नस्ल दर नस्ल चलता है, जिस से हो सके इन के बीच में पड़ कर सुल्ह़ करवाने की कोशिश करे और अ़ज़ीमुश्शान षवाब कमाए, हमारा प्यारा रब عَزَّوَجَلَّ पारह **26** सूरए हुजुरात की दसवीं आयते करीमा में इरशाद फ़रमा रहा है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ (پ۲۶، الحجرات: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुसलमान मुसलमान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करो और* **अल्लाह** *से डरो कि तुम पर रह़मत हो।*

सुल्ह़ करवाने का षवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ اَصْلَحَ بَيْنَ النَّاسِ اَصْلَحَ اللّٰهُ اَمْرَهٗ وَاَعْطَاهُ بِكُلِّ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا عِتْقَ رَقَبَةٍ وَرَجَعَ مَغْفُوْرًا لَّهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ

या'नी जो शख़्स लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मुआ़मला दुरुस्त फ़रमा देगा और उसे हर कलिमा बोलने पर एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह जब लौटेगा तो अपने पिछले गुनाहों से मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर लौटेगा।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، الحدیث ۹، ج ۳، ص ۳۲۱)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुल्ह़ करवाई

सुल्ह़ करवाना ताजदारे ह़रम, नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोह़तरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस सुन्नत भी है,

चुनान्चे, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़ह़ा **949** पर है, सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दराज़ गोश पर कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि अन्सार के पास से गुज़र हुवा, वहां कुछ देर तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया, उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय्य ने नाक बन्द कर ली । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है । ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो तशरीफ़ ले गए मगर इन दोनों की बात बढ़ गई और दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथापाई तक नौबत पहुंची । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और दोनों में सुल्ह़ करवा दी । इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई :

وَ اِنْ طَآىٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَاۚ

(پ۲۶،الحجرات : ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर मुसलमानों के दो गुरोह आपस में लड़ें तो उन में सुल्ह़ कराओ ।*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

73 शुक्र करना

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلطَّاعِمُ الشَّاكِرُ بِمَنْزِلَةِ الصَّائِمِ الصَّابِرِ

या'नी खाना खा कर शुक्र करने वाला उस रोज़ेदार की त़रह़ है जिस ने खाने से सब्र किया हो । (ترمذی،ج۴،ص۲۱۹،الحدیث۲۴۹۴)

यक़ीनन शुक्र आ'ला दरजे की इबादत, अ़ज़ीम सआ़दत और इस में ने'मतों की हिफ़ाज़त है। शुक्र का **एक दरजा** येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ने'मतों में ग़ौर करे, उस की अ़ता पर राज़ी हो और उस की किसी ने'मत की नाशुक्री न करे जबकि शुक्र का **दूसरा दरजा** येह है कि ज़बान से भी इन ने'मतों का शुक्र करे। जब भी हमें कोई छोटी बड़ी ने'मत मिले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना चाहिये मषलन नमाज़ वक़्त पर बा जमाअ़त अदा करने की सआ़दत मिली तो शुक्र अदा करें, किसी गुनाह से बचने में कामयाब हो गए तो शुक्र अदा करें, शदीद भूक प्यास में खाने को मिल गया तो शुक्र अदा करें, बीमारी से सिह्हत याबी मिली तो शुक्र अदा करें, तपती धूप में साया मयस्सर आ गया तो शुक्र अदा करें, घर वापसी पर बीवी बच्चों को सलामत देखा तो शुक्र अदा करें, वलिय्युल्लाह के मज़ार पर जाना नसीब हुवा तो शुक्र अदा करें, पीरो मुर्शिद की बारगाह में बा अदब हाज़िरी नसीब हुई तो शुक्र अदा करें, सोने को आराम देह बिस्तर और सर छुपाने को घर मयस्सर है तो शुक्र अदा करें अल ग़रज़ हर वोह जाइज़ बात जिस से ख़ुशी या आराम मिले उस पर शुक्र अदा करते रहने की आ़दत डालनी चाहिये। शुक्र के लिये कोई अल्फ़ाज़ ख़ास नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कह लीजिये या अपनी मादरी ज़बान में शुक्र अदा कर लीजिये दोनों त़रह़ दुरुस्त है। अगर ज़बान से मौक़अ़ नहीं मिला तो दिल ही दिल में शुक्र अदा कर लेना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मुन्कदिर क़रशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़

किया करते थे : اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।[1] (المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، باب ما کان یدعو.....الخ، حدیث ۱۱ج ۷ص ۳۶)

शुक्र अदा हो क्यूंकर तेरा कि महबूब की उम्मत में
मुझ से निकम्मे को भी पैदा तूने ऐ रहमान किया

(वसाइले बख़्शिश, स.387)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

74 अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना

अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना भी इबादत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''فِکْرَۃُ سَاعَۃٍ خَیْرٌ مِّنْ عِبَادَۃِ سِتِّیْنَ سَنَۃً (उमूरे आख़िरत में) घड़ी भर ग़ौरो फ़िक्र करना साठ साल की इबादत से बेहतर है।'' (کنز العمال، ج ۳، ص ۸۴، رقم الحدیث ۷۰۷۵) हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''दुन्या की फ़िक्र दिल में अन्धेरा जब कि आख़िरत की फ़िक्र रोशनी व नूर पैदा करती है।''

(المنبہات علی الاستعداد لیوم المعاد، ص ۴)

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आख़िरत में सब से ज़ियादा ख़ुश वोह शख़्स होगा जो दुन्या में (आख़िरत के बारे में) सब से ज़ियादा मुतफ़क्किर रहने वाला हो और आख़िरत में सब से ज़ियादा हंसना उसी को नसीब होगा जो दुन्या में (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब) सब से ज़ियादा रोने वाला हो

---

1 : शुक्र के मज़ीद फ़ज़ाइल पढ़ने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब ''**शुक्र के फ़ज़ाइल**'' का मुत़ालआ़ कीजिये।

और बरोज़े क़ियामत सब से ज़ियादा सुथरा ईमान उसी का होगा जो दुन्या में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करने वाला है। (تنبیہ الغافلین، باب التفکر، ص۸۰۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना मकह़ूल शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی फ़रमाते हैं : "इन्सान जब बिस्तर पर आराम करने लगे तो अपना मुह़ासबा करे कि आज उस ने क्या आ'माल किये ? फिर अगर उस ने अच्छे आ'माल किये हों तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करे और अगर उस से गुनाह सरज़द हुवे हों तो तौबा व इस्तिग़फ़ार करे। क्यूंकि अगर येह ऐसा न करेगा तो उस ताजिर की त़रह़ होगा जो ख़र्च करता जाए लेकिन ह़िसाब किताब न रखे तो एक वक़्त ऐसा आएगा कि वोह कंगाल हो जाएगा।" (تنبیہ الغافلین، باب التفکر، ص۹۰۳)

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

75 मां बाप को महब्बत भरी निगाह से देखना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मां बाप की अहम्मिय्यत समझने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन। आइये ! बिग़ैर किसी ख़र्च के बिल्कुल मुफ़्त षवाब का ख़ज़ाना ह़ासिल कीजिये। ख़ूब हमदर्दी और प्यार व मुह़ब्बत से मां बाप का दीदार कीजिये, मां बाप की त़रफ़ ब नज़रे रह़मत देखने के भी क्या कहने ! सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब अवलाद अपने मां बाप की त़रफ़ रह़मत की नज़र करे तो

अल्लाह तआ़ला उस के लिये हर नज़र के बदले ह़ज्जे मबरूर (या'नी मक़्बूल ह़ज) का षवाब लिखता है । सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर्चे दिन में सो मरतबा नज़र करे ! फ़रमाया : نَعَمْ،اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَاَطْیَبُ या'नी "हां, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और अत़्यब (या'नी सब से ज़ियादा पाक) है ।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۶ ص۱۸۶ حدیث۷۸۵۶) यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर शै पर क़ादिर है, वोह जिस क़दर चाहे दे सकता है, हरगिज़ आ़जिज़ व मजबूर नहीं लिहाज़ा अगर कोई अपने मां बाप की त़रफ़ रोज़ाना **100** बार भी रह़मत की नज़र करे तो वोह उसे **100** मक़्बूल ह़ज का षवाब इनायत फ़रमाएगा । (समन्दरी गुम्बद, स.**6**)

उस्ताद की करता रहूं हर दम मैं इत़ाअ़त
मां बाप की इ़ज़्ज़त की भी तौफ़ीक़ ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश, स.**102**)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

76 वालिदैन की क़ब्रों पर जुमुआ के दिन ह़ाज़िरी देना

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जो अपने मां बाप दोनों या एक की क़ब्र पर हर जुमुआ के दिन ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा और मां बाप के साथ भलाई करने वाला लिख दिया जाएगा । (نوادرالاصول للحکیم الترمذی ص۹۷ حدیث۷۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

77 नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

जब जब मौक़अ़ मिले मुसलमान के जनाज़े में शिर्कत कर के षवाब का ख़ज़ाना समेटना चाहिये । रसूले बे मिषाल, बीबी

आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जो किसी मुसलमान के जनाज़े में ईमान के साथ अज्रो षवाब की निय्यत से शरीक हुवा और नमाज़े जनाज़ा अदा करने और तदफ़ीन तक जनाज़े के साथ रहा तो दो क़ीरात़ षवाब ले कर लौटेगा इन में से हर क़ीरात़ उहुद पहाड़ के बराबर होगा और जो नमाज़ पढ़ कर तदफ़ीन से पहले लौट आया तो वोह एक क़ीरात़ षवाब ले कर लौटेगा। (مسلم، کتاب الجنائز، ص۱۷۴، رقم۵۴۹:)

एक और ह़दीषे पाक में है : बन्दे को अपनी मौत के बा'द सब से पहले जो जज़ा दी जाती है वोह येह है कि उस के जनाज़े में शरीक तमाम अफ़राद की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।

(مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب اتباع الجنازۃ.....الخ، رقم ۴۳۱۴، ج۳، ص۲۳۱)

78 आ़जिज़ी करना

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रिफ़्अ़त निशान है : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है। (مسلم، کتاب البر والصلۃ، الحدیث۸۸۵۲، ص۷۹۳۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की पैदाइश बदबूदार नुत़्फ़े (या'नी गन्दे क़त़रे) से होती है अन्जामे कार सड़ा हुवा मुर्दा है और इस क़दर बे बस है कि अपनी भूक, प्यास, नींद, ख़ुशी, ग़म, याद दाश्त, बीमारी या मौत पर उसे कुछ इख़्तियार नहीं, इस लिये उसे चाहिये कि अपनी अस्लिय्यत, हैषिय्यत और अवक़ात को कभी फ़रामोश न करे, वोह इस दुन्या में तरक़्क़ियों की मन्ज़िलें त़ै

करता हुवा कितने ही बड़े मक़ाम व मर्तबे पर क्यूं न पहुंच जाए, ख़ालिक़े कौनो मकां عَزَّوَجَلَّ के सामने उस की हैषिय्यत कुछ भी नहीं है। साहिबे अ़क़्ल इन्सान तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी का चलन इख़्तियार करता है और येही चलन उस को दुन्या में बड़ाई अ़ता करता है वरना इस दुन्या में जब भी किसी इन्सान ने फ़िरऔनिय्यत, क़ारूनिय्यत और नमरूदिय्यत वाली राह पकड़ी है बसा अवक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे दुन्या ही में ऐसा ज़लीलो ख़्वार किया है कि उस का नाम मक़ामे ता'रीफ़ में नहीं बत़ौरे मज़म्मत लिया जाता है। लिहाज़ा अ़क़्लो फ़हम का तक़ाज़ा येह है कि इस दुन्या में ऊंची परवाज़ के लिये इन्सान जीते जी पैवन्दे ज़मीन हो जाए और आ़जिज़ी व इन्किसारी को अपना ओढ़ना बिछौना बना ले फिर देखे कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त उस को किस त़रह़ इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत से नवाज़ता है और उसे दुन्या में मह़बूबिय्यत और मक़्बूलिय्यत का वोह आ'ला मक़ाम अ़ता करता है जो उस के फ़ज़्लो करम के बिग़ैर मिल जाना मुमकिन ही नहीं है। ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) इख़्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बड़े मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और तकब्बुर से भी बरी हो जाओगे।

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحدیث: ۵۷۲۲، ج ۳، ص ۹۴)

लकड़ियों का गट्ठा ख़ुद उठा कर लाए

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने बाग़ से जलाने वाली लकड़ियों का गट्ठा ख़ुद उठा कर लाए ह़ालांकि उन के पास कई ग़ुलाम थे जो येह काम कर सकते थे। किसी ने उन

से पूछा : आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपने किसी गुलाम को क्यूं न उठाने को कहा ! जवाब दिया : मैं येह कर सकता था मगर मैं खुद को आज़माना चाहता था कि आया मैं ऐसा कर सकता हूं या नहीं ! और कहीं मेरा नफ़्स इस काम को नापसन्द तो नहीं करता ! (کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)، ص۴۰۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़ख़्रो ग़ुरूर से तू मौला मुझे बचाना
या रब ! मुझे बना दे पैकर तू आ़जिज़ी का

(वसाइले बख़्शिश, स.195)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

79 नेक मुसलमान से हुस्ने ज़न रखना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बद गुमानी का मरज़ आ़म है, इस मरज़ से बचने के लिये हुस्ने ज़न रखने की आ़दत बना लेना बेह़द ज़रूरी है और मुसलमान के बारे में अच्छा गुमान करना बाइ़षे षवाब भी है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَۃِ या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इबादत है।

(سُنَنِ ابوداود ج۴ ص۸۳۷ حدیث۴۹۹۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुवे लिखते हैं : या'नी मुसलमानों से अच्छा गुमान करना, इन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादत में से एक इबादत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि.6 स.621)

मुझे ग़ीबतो चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.80)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

80 ऐबपोशी करना

अगर किसी मुसलमान का ऐ़ब मा'लूम हो जाए तो बिला मस्लेह़ते शरई किसी दूसरे पर इस का इज़्हार करने वाला गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। मुसलमानों का ऐ़ब छुपाने का ज़ेह्न बनाइये कि जो किसी का ऐ़ब छुपाए उस के लिये जन्नत की बिशारत है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : जो शख़्स अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दापोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (مُسْنَدعَبد بِن حُمید ص۲۷۹رقم ۸۸۵) लिहाज़ा जब भी हमें मा'लूम हो कि फुलां ने مَعَاذَ اللّٰہ ज़िना या लिवात़त का इर्तिकाब किया है, बद निगाही की है, झूट बोला है, बद अ़हदी या ग़ीबत की है या कोई भी ऐसा जुर्म छुप कर किया है जिस को ज़ाहिर करने में कोई शरई मस्लेह़त नहीं तो हमें उस का पर्दा रखना लाज़िम है और दूसरे पर ज़ाहिर करना गुनाह। यक़ीनन ग़ीबत और आबरू रेज़ी का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। लेकिन अगर किसी में ऐसा ऐ़ब मौजूद है जिस से दूसरे इस्लामी भाई को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा हो तो मह़्ज़ इस निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ा इस्लामी भाई को इस ऐ़ब के बारे में बता देना चाहिये ताकि वोह इस नुक़्सान से बच सके मषलन एक शख़्स

की आ़दत है कि वोह लोगों की रक़में धोका देही से हड़प कर जाता है या क़र्ज़ ले कर वापस नहीं करता तो जिन जिन को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा हो उन्हें उस के बारे में बता देने में कोई ह़रज़ नहीं, इसी त़रह़ अगर किसी ने कहीं रिश्ता भेजा है और लड़की वाले आप से उस के किरदार व अ़मल के बारे में पूछें तो उन्हें ह़क़ीक़ते ह़ाल से आगाह कर देना ज़रूरी है, लेकिन इन तमाम सूरतों में निय्यत दूसरों को नुक़्सान से बचाने की होनी चाहिये, किसी को रुस्वा करने की नहीं।

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब
अ़त़ा करम से हो ऐसी मुझे ह़या या रब
किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और
सुनें न कान भी ऐबों का तज़किरा या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

81 ईसाले षवाब करना

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा षवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "**दुआए मग़फ़िरत करना**" है। (شُعَبُ الْاِیْمَان، ج۶، ص۳۰۲، حدیث ۵۰۹۷)

फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, बयान, दर्स, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, **मदनी इन्आ़मात**, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ालआ़, मदनी कामों के लिये इनफ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का किसी इन्तिक़ाल करने वाले या ज़िन्दा शख़्स को ईसाले षवाब कर सकते हैं। ईसाले षवाब करने वाले के षवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि उस ने जितनों को ईसाले षवाब किया उन सब के मजमूए़ के बराबर उस को षवाब मिले। मषलन कोई नेक काम किया जिस पर उस को दस नेकियां मिलीं अब उस ने दस मुर्दों को ईसाले षवाब किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले षवाब करने वाले को एक सो दस और अगर एक हज़ार को ईसाले षवाब किया तो उस को दस हज़ार दस। وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیاس

(बहारे शरीअ़त, जि.1 हिस्सा 4 स.850 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

82 दूसरों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करना

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कोई तमाम मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औ़रत के इवज़ एक नेकी लिख देता है। (مجمع الزوائد، ج۱۰، ص۲۵۳، حدیث۱۷۹۵۸)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** झूम जाइये! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा हाथ आ गया! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसलमान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि अरबों

दुन्या से चल बसे हैं। अगर हम सारी उम्मत की मग़फ़िरत के लिये दुआ करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें अरबों, खरबों नेकियों का ख़ज़ाना मिल जाएगा। मैं अपने लिये और तमाम मोअमिनीन व मोअमिनात के लिये दुआ तहरीर कर देता हूं। (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लें) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ढेरों नेकीयां हाथ आएंगी।

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَلِکُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَۃٍ या'नी ऐ **अल्लाह** मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आप भी ऊपर दी हुई दुआ को अरबी या उर्दू दोनों ज़बानों में अभी और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बाद भी पढ़ने की आदत बना लिजीये।

बे सबब बख़्श दे न पूछ अमल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

83 दीनी इजतिमाआ़त में शिर्कत करना

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते रास्तों में घूम फिर कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों को तलाश करते हैं। जब वोह किसी क़ौम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुवे पाते हैं तो एक दूसरे को आवाज़ देते हैं कि अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ आ जाओ। फिर वोह उन लोगों को आस्माने दुन्या तक अपने परों से ढांप लेते हैं तो उन का रब عَزَّوَجَلَّ हालांकि वोह ख़ूब

जानता है फिर भी उन से पूछता है कि "मेरे बन्दे क्या कहते हैं ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "तेरी तस्बीह़ पढ़ते हैं और तेरी पाकी, बड़ाई, ह़म्द और अ़ज़मत बयान करते हैं ।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने मुझे देखा है ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "तेरी क़सम ! उन्हों ने तुझे नहीं देखा ।" फिर रब तआ़ला फ़रमाता है : "अगर वोह मुझे देख लेते तो क्या करते ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "अगर वोह तुझे देख लेते तो तेरी बहुत ज़ियादा इबादत करते और ज़ियादा शौक़ से तेरी पाकी और बुज़ुर्गी बयान करते ।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पूछता है कि "वोह मुझ से क्या मांगते हैं ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "तुझ से जन्नत मांगते हैं ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने उसे देखा है ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम नहीं देखा ।" रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "अगर वोह देख लेते तो क्या करते ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "अगर वोह उसे देख लेते तो शिद्दत के साथ उसे पाने की ख़्वाहिश करते, उस की त़लब में शदीद कोशिश करते और उस में ज़ियादा रग़बत रखते ।" फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "वोह किस चीज़ से पनाह मांगते हैं ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "वोह जहन्नम से पनाह मांगते हैं ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा है ?" फ़िरिश्तें अ़र्ज़ करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं देखा ।" रब तआ़ला फ़रमाता है : "अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "अगर वोह उसे देख लेते तो शिद्दत के साथ उस से फ़िरार इख़्तियार करते और उस से ख़ौफ़ खाते ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाता है : "मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि बेशक मैं ने उन को बख़्श दिया।" उन में से एक फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : "फ़ुलां शख़्स उन में से नहीं बल्कि वोह अपनी किसी ज़रूरत के तह़्त आया था?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : **"वोह ऐसे लोग हैं जिन का हमनशीन भी महरूम नहीं रहता।"** (صحیح البخاری، کتاب الدعوات، ج۴، ص۰۲۲، الحدیث:۸۰۴۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले षवाब का एक अहम ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त भी हैं, आप भी अपने शहर में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये, इस सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत से हमें षवाब का अ़ज़ीम ख़ज़ाना हाथ आ सकता है क्यूंकि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के जदवल में येह चीज़ें शामिल हैं : ❁ तिलावते कुरआने करीम ❁ ना'ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ❁ सुन्नतों भरा बयान ❁ दुरूदे पाक ❁ ज़िक्रुल्लाह ❁ इजतिमाई दुआ ❁ सलातो सलाम ❁ नमाज़े बा जमाअ़त ❁ तर्बिय्यती ह़ल्क़े ❁ नमाज़े तहज्जुद ❁ मुनाजात ❁ बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र ❁ मदनी ह़ल्क़ा (जिस में कुरआने करीम की चन्द आयात की तिलावत होती है और **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** और **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** पढ़ कर सुनाई जाती है इस के बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स होता है, और शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या के दुआइय्या अश्आ़र पढ़े जाते हैं) ❁ इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा करने और सलातो सलाम के बा'द सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर बहुत से आ़शिक़ाने रसूल **3** दिन, **12**

दिन, **30** दिन बल्कि कई ख़ुश नसीब तो बारह बारह माह के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के मदनी क़ाफ़िलों में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सफ़र पर रवाना हो जाते हैं।

सुन्नतों की लूटना जा के मताअ़
हो जहां भी सुन्नतों का इजतिमाअ़

(वसाइले बख़्शिश, स.**670**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहौल से वाबस्ता हो जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अगर आप अभी तक दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा माहौल से दूर हैं तो **मदनी मश्वरा** है कि आज ही इस मदनी माहौल से हमेशा के लिये वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने में बहुत मदद मिलेगी क्यूंकि इबादात पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करना उस वक़्त तक दुश्वार महसूस होता है जब तक हमारे सामने कोई शख़्स उन्हें इस्तिक़ामत से अपनाए हुवे न हो चुनान्चे, अगर हम मदनी माहौल से वाबस्ता हो जाएंगे तो हमें कषीर इस्लामी भाई इजतिमाई तौ़र पर इबादात पर इस्तिक़ामत पज़ीर दिखाई देंगे जिस की बरकत से हैरत अंगेज़ तौ़र पर हम भी किसी क़िस्म की मशक़्क़त के एहसास के बिग़ैर इबादात करने और गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत हासिल करने में कामयाब हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी के मदनी माहौल की बरकत से कैसे कैसे बिगड़े हुवे लोगों की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस की एक झलक इस **मदनी बहार** में मुलाहज़ा कीजिये :

मैं एक बद मुआ़श था

झड़ू (ज़िल्अ़ मीरपूर ख़ास बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं एक बद मुआ़श था, लोगों पर ज़ुल्म करना मेरी आ़दत में शामिल था। अपने मज़बूत़ और त़ाक़तवर जिस्म पर ऐसा मग़रूर था कि किसी को ख़ात़िर में न लाता था। गले के बटन खोल कर अकड़ कर चलना, बद निगाही करना, किसी को मुक्का तो किसी को लात मारना, किसी को गालियां देना तो किसी का मज़ाक़ उड़ाना मेरा मा'मूल था। बद क़िस्मती से मुझे दोस्त भी अपने जैसे ही मयस्सर थे जो इन ग़लत़ कामों पर मुझे समझाने के बजाए मेरी ह़ौसला अफ़्ज़ाई करते। फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने का भी शाइक़ था। मुझे अपनी ग़लतियों का एह़सास तक न था। ज़िन्दगी के "अनमोल हीरे" ग़फ़्लत की नज़्र हो रहे थे। मेरी सआ़दतों की मे'राज का सफ़र इस त़रह़ शुरूअ़ हुवा कि एक रोज़ मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई से हुई, जिन्हों ने मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में मुझे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत की दा'वत पेश की। उन के "**मीठे बोल**" मेरे कानों में देर तक रस घोलते रहे चुनान्चे, मैं ने हामी भर ली, मगर दिल में पैदा होने वाले मुख़्तलिफ़ वस्वसों की वजह से न जा सका। वोह इस्लामी भाई मुझे मुसलसल मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत की दा'वत पेश करते रहे, यहां तक कि एक दिन मैं ने शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल कर ही ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र माह़ोल

की बरकत से मुझे गुनाहों भरी ज़िन्दगी से नजात मिल गई। मैं ने तौबा कर ली और नेकियों का आ़मिल बन गया, सुन्नत के मुत़ाबिक़ चेहरे पर दाढ़ी सजाई और मदनी लिबास ज़ेबे तन कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर ज़ैली मुशावरत के ख़ादिम (निगरान) की हैषिय्यत से दा'वते इस्लामी के मदनी काम करने में कोशां हूं।

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माह़ोल बचे बद नज़र से सदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश,स.**602**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों के फ़ज़ाइल पढ़िये

मज़ीद नेकियों की तफ़्सील और इन के फ़ज़ाइल जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिये, मषलन शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमाम तसानीफ़ बिल ख़ुसूस ❁ फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) ❁ तिलावत की फ़ज़ीलत ❁ नमाज़ के अह़काम ❁ रफ़ीकुल ह़रमैन ❁ रफ़ीकुल मो'तमिरीन ❁ नेकी की दा'वत (फ़ैज़ाने सुन्नत का एक बाब) ❁ इस्लामी बहनों की नमाज़ ❁ मदनी पंज सूरह ❁ समन्दरी गुम्बद ❁ मदीने की मछली ❁ अ़फ़्वो दर गुज़र

के फ़ज़ाइल ۞ अब्लक़ घोड़े सुवार ۞ 163 मदनी फूल ۞ 101 मदनी फूल ۞ मस्जिदे खुश्बूदार रखिये ۞ सुब्हे बहारां ۞ ख़ामोश शहज़ादा ۞ आक़ा का महीना ۞ मीठे बोल ۞ अनमोल हीरे (वग़ैरा) का मुत़ालआ़ कीजिये और मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) की पेश कर्दा तालीफ़ात में से ۞ फ़ैज़ाने ज़कात ۞ जन्नत की दो चाबियां ۞ तौबा की रिवायात व ह़िकायात ۞ ज़ियाए सदक़ात ۞ क़ब्र में आने वाला दोस्त ۞ ख़ौफ़े खुदा ۞ चालीस फ़रामीने मुस्त़फ़ा ۞ जन्नत में ले जाने वाले आ'माल ۞ हुस्ने अख़्लाक़ ۞ सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ? ۞ शुक्र के फ़ज़ाइल ۞ राहे इ़ल्म ۞ फ़ज़ाइले दुआ़ ۞ राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल ۞ बहिश्त की कुंजियां ۞ अख़्लाकुस्सालिह़ीन ۞ जन्नत की तय्यारी (वग़ैरा) का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है। इन कुतुबो रसाइल को दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से डाऊनलॉड भी किया जा सकता है इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी की मजलिसे आई टी (I.T) की त़रफ़ से **"अल मदीना लाइब्रेरी"** के नाम से एक सॉफ़्टवेर भी शाएअ़ किया जा चुका है जिस की मदद से इन कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ करना और अपना मत़लूबा मवाद तलाश करना बेह़द आसान हो गया है। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِك

दीनी कुतुब का मुत़ालआ़ नेक बनने में मदद देता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीनी कुतुबो रसाइल के मुत़ालए़ से जहां हमें ढेरों ढेर मा'लूमात ह़ासिल होंगी वहीं अ़मल

का जज़्बा भी नसीब होगा मषलन जब हमें येह मा'लूम होगा कि नमाज़ से रह़मतें नाज़िल होती और गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, नमाज़ दूआ़ओं की क़बूलिय्यत और रोज़ी में बरकत का सबब है, नमाज़ जन्नत की कुंजी और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है। नमाज़ी को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी और नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि उसे बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला का दीदार होगा तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ हमारे दिल में फ़र्ज़ नमाज़ के साथ साथ नवाफ़िल पढ़ने की भी ह़िर्स पैदा होगी। इसी त़रह़ जब हमें येह पता चलेगा कि रोज़ादार का सोना भी इ़बादत में शुमार किया जाता है, अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ़ पर **आमीन** कहते हैं और एक ह़दीषे पाक के मुत़ाबिक़ **"रमज़ान के रोज़ा दार के लिये दरया की मछलियां इफ़्त़ार तक दुआ़ए मग़फ़िरत करती रहती हैं"** तो दिल में रोज़ा रखने की रग़बत पैदा होगी। इसी त़रह़ जब ह़ज की येह फ़ज़ीलत पढ़ने को मिलेगी कि जिस ने ह़ज किया और रफ़ष (फ़ोह़्श कलाम) न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से ऐसा पाक हो कर लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा तो हमारा दिल सफ़रे ह़ज के लिये मचल जाएगा, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ماٰخذ و مراجع

نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ
کنزالایمان ترجمۂ قرآن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	تفسیر قرطبی	دارالفکر بیروت
التفسیر الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	تفسیر نعیمی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
تفسیر روح البیان	کوئٹہ	تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
صحیح البخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	المعجم الاوسط	دارالفکر بیروت
صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت	المعجم الصغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن الترمذی	دارالفکر بیروت	الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن النسائی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	جمع الجوامع للسیوطی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن ابی داؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	مصنف ابن ابی شیبۃ	دارالفکر بیروت
سنن ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الموطأ	دارالمعرفۃ بیروت	مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت
سنن الدارمی	دارالکتاب العربی بیروت	الترغیب والترھیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
فردوس الاخبار	دارالفکر بیروت	شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	مکتبۃ العصریۃ بیروت	مشکاۃ المصابیح	دارالکتب العلمیۃ بیروت
المستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
السنن الکبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کنزالعمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
المسند	دارالفکر بیروت	المقاصد الحسنۃ	دارالکتاب العربی بیروت
مسند عبد بن حمید	المکتبۃ الشاملۃ	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
المعجم الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	جامع العلوم والحکم	الفیصلیۃ مکۃ المکرمہ
الادب المفرد	ملتان	شرح النووی علی المسلم	دارالکتب العلمیۃ بیروت
نزھۃ القاری	برکاتی پبلشرز کراچی	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
مرقاۃ المفاتیح	دارالفکر بیروت	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
نوادرالاصول	مکتبہ امام بخاری	الدرالمختار	دارالمعرفۃ بیروت
ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت	الفتاوی الھندیۃ	دارالفکر بیروت
غنیۃ المتملی	لاہور	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
فتاوٰی رضویہ (مخرجہ)	رضا فاؤنڈیشن لاہور	نماز کے احکام	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
الشفا بتعریف حقوق المصطفٰی	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	کشف الالتباس فی استحباب اللباس	داراحیاء العلوم
سیرتِ مصطفٰی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	لواقح الانوار القدسیۃ	داراحیاء التراث العربی بیروت
تاریخ مدینۃ دمشق	دارالفکر بیروت	جلاء الافہام	دارالکتب العلمیۃ بیروت
حیاتِ محدثِ اعظم	رضا فاؤنڈیشن لاہور	اَفضل الصلوات علٰی سیّد السادات	دارالکتاب العربی بیروت
مطالع المسرات	نوریہ رضویہ پبلیکیشنز لاہور	کتاب اللمع فی التصوف (مترجم)	اسلام آباد
القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت	لطائف المنن والاخلاق للشعرانی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ذم الھوٰی	پشاور	احیاء علوم الدین	دارصادر بیروت
اتحاف السادۃ المتقین	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
کیمیائے سعادت	تہران، ایران	شرح الصدور	مرکز اھل سنّت (الھند)
الزواجر عن اقتراف الکبائر	دارالمعرفۃ بیروت	تنبیہ المغترین	دارالمعرفۃ بیروت
تنبیہ الغافلین	پشاور	المنبھات علی الاستعداد لیوم المعاد	
فیضانِ سنت (جلد اول)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	خاموش شہزادہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	سمندری گنبد	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
مدنی انعامات	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	الطبقات الکبریٰ	دارالفکر بیروت
نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ تہران
زلزلہ اور اس کے اسباب	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	مکارم الاخلاق	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مدینے کی مچھلی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	حدائقِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
سامانِ بخشش	ضیاء الدین پبلیکیشنز کراچی	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ काम आ गया	1	बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये	20
सिर्फ़ एक नेकी चाहिये	1	ज़हरे क़ातिल बे अषर हो गया	20
हर नेकी अहम है	2	घरेलू झगड़ों का इ़लाज	21
बरोज़े क़ियामत नेकी खुश ख़बरियां सुनाएगी	3	**(3) ज़िक्रुल्लाह करना**	22
शेर दहाड़ते वक़्त क्या कहता है ?	4	अफ़्ज़ल दरजे में होगा	22
नेकी की किसी बात को ह़क़ीर न जानो	4	तुम्हारी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रहा करे	22
अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब	4	ज़िक्र की अक़्साम	23
वोह मालिको मुख़्तार है	8	मुझ पर रह़मत की नज़र रखना	24
नेकियों की दो क़िस्में	9	मेरी गवाही दें	24
क्या नेकी कमाना मुश्किल काम है ?	9	**मदनी इन्आ़मात** और ज़िक्रुल्लाह	25
हर नेकी मुश्किल नहीं होती	10	अज़्कार व अवराद और इन के षवाब	26
जितनी मशक़्क़त ज़ियादा उतना षवाब ज़ियादा	10	**100** ह़ज का षवाब	26
आसान नेकियां	11	बुराइयां मिटा कर नेकियां लिख दी जाती हैं	26
अ़मल शुरूअ़ कर दीजिये	11	**100** के बदले हज़ार	27
83 आसान नेकियां	12	जन्नत में खजूर का दरख़्त	27
(1) अच्छी अच्छी निय्यतें करना	14	गुनाहों की मुआ़फ़ी	27
अच्छी अच्छी निय्यतें करने का त़रीक़ा	14	अफ़्ज़ल अ़मल	27
एक दम से काम शुरूअ़ न कर दीजिये	15	ज़बान पर हल्के मीज़ान पर भारी	28
मदनी इन्आ़मात और अच्छी अच्छी निय्यतें	15	हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करूंगा	28
अम्मी जान सिह़्ह़त याब हो गईं	16	जन्नती पौदा	28
(2) हर जाइज़ काम "बिस्मिल्लाह" से शुरूअ़ करना	18	बीस लाख नेकियों का षवाब	29
		नेकियां ही नेकियां	29
बिस्मिल्लाह पढ़े जाइये	19	रोज़ाना एक हज़ार नेकियां	29

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
गुनाह झड़ते हैं	30	छे लाख दुरूद शरीफ़ का षवाब	47
जन्नती ख़ज़ाना	30	कुर्बे मुस्त़फ़ा	48
दस नेकियों का इज़ाफ़ा और दस गुनाहों की मुआ़फ़ी	31	सब से अफ़्ज़ल दुरूदे पाक	48
		बख़्शिश व मग़्फ़िरत	49
(4) बाज़ार में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना	32	माल में ख़ैरो बरकत	50
(5) तिलावत करना	32	कुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़बूत हो	50
वाह ! क्या बात है आ़शिके़ कुरआन की	33	दीनो दुन्या की नेमतें ह़ासिल कीजिये	50
(6) कुरआने मजीद देख कर पढ़ना	35	दुरूदे शफ़ाअ़त	51
एक मिनट में कुरआन पढ़ने का षवाब	35	आबे कौषर से भरा पियाला	51
सूरए इख़्लास तिहाई कुरआन के बराबर है	35	ग्यारह हज़ार दुरूद का षवाब	51
मैं तिहाई कुरआन पढ़ूंगा	36	हर क़िस्म के फ़ितने से नजात के लिये	52
तिलावत का मदनी इन्आ़म	36	एक लाख दुरूदे पाक का षवाब	52
(7) दुरूदे पाक पढ़ना	37	दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़रूई	52
क़ियामत की दहशतों से नजात पाने का नुस्ख़ा	38	चौदह हज़ार दुरूदे पाक का षवाब	53
उ़म्र में एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है	38	दुरूदे तुनज्जीना	53
दुरूद शरीफ़ के **30** मदनी फूल	39	**(8) मुख़ालिफ़ सुन्नतों पर अ़मल**	54
दम ब दम सल्ले अ़ला	41	सुन्नत पर अ़मल का जज़्बा	56
दुरूदे पाक का आ़शिक़ मदनी मुन्ना	43	**मदनी इन्आ़मात** और सुन्नतों पर अ़मल	57
दुरूद शरीफ़ का सदक़ा	44	सुन्नतें सीखिये	58
18 दुरूदो सलाम	46	**(9) इ़मामा शरीफ़ बांधना और खोलना**	58
शबे जुमुआ़ का दुरूद	46	**(10) तौबा करना**	59
तमाम गुनाह मुआ़फ़	47	जन्नत में दाख़िला	59
रह़मत के सत्तर दरवाज़े	47	तौबा करना मुश्किल काम नहीं है	59
		गुलूकार की तौबा	61

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
तौबा का मदनी इन्आ़म	62	मग़्फ़िरत कर दी जाएगी	80
(11) अज़ान देना	63	**(25) नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठना**	80
मोती के गुम्बद	63	गुनाहों को मिटाने वाला अ़मल	81
मदनी इन्आ़मात और अज़ान	64	**(26) रोज़ा इफ़्तार करवाना**	81
(12) अज़ान का जवाब देना	65	**(27) सलाम में पहल करना**	82
3 करोड़ **24** लाख नेकियां कमाइये	65	सिर्फ़ सलाम करने के लिये बाज़ार जाया करते	82
अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया	66	सलाम करने का मदनी इन्आ़म	83
अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा	67	**(28) सलाम के अल्फ़ाज़ बढ़ाना**	84
जवाबे अज़ान का मदनी इन्आ़म	69	**(29) ख़न्दा पेशानी से सलाम करना**	85
(13) अज़ान के बा'द की दुआ़ पढ़ना	70	**(30) मुसाफ़हा करना**	85
(14) **वुज़ू के शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه पढ़ना**	70	गुनाह झड़ते हैं	85
(15) **वुज़ू के बा'द कलिमए शहादत पढ़ना**	71	जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ?	86
(16) बा वुज़ू रहना	71	अमीरे अहले सुन्नत की ख़ामोश इनफ़िरादी कोशिश	86
हर वक़्त बा वुज़ू रहने के सात फ़ज़ाइल	72	**(31) ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना**	87
बा वुज़ू रहने का मदनी इन्आ़म	72	**(32) दुआ़ करना**	88
(17) बा वुज़ू सोना	73	दुआ़ मोमिन का हथयार है	88
(18) मस्जिदें आबाद करना	74	दुआ़ के तीन फ़ाइदे	89
(19) मस्जिद से मह़ब्बत करना	75	**मदनी इन्आ़मात** और आदाबे दुआ़	89
क्या मस्जिद से बेहतर भी कोई जगह है ?	75	(33) **क़ब्रिस्तान वालों के लिये दुआ़ करना**	90
(20) इमामे के साथ नमाज़ पढ़ना	76	**(34) आयत या सुन्नत सिखाना**	90
(21) नमाज़ से पहले मिस्वाक करना	77	**(35) नेकी की दा'वत देना**	91
(22) पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना	77	तमाम अ़मल करने वालों का षवाब मिलेगा	92
पहली सफ़ का मदनी इन्आ़म	78	एक साल की इ़बादत का षवाब	94
(23) सफ़ में दाहिनी त़रफ़ खड़े होना	79	समझाना कब वाजिब है ?	95
(24) सफ़ में ख़ाली जगह पुर करना	79	फ़ाइदा ही फ़ाइदा	96
		इ़स्यां का मरीज़ "आ़लिम" बन गया	97

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
(36) जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना	98	**(48) मुसलमान से महब्बत रखना**	120
नाख़ुन काटने का त़रीक़ा	99	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी तुझ से महब्बत फ़रमाता है	121
(37) सालिहीन का ज़िक्रे ख़ैर करना	99	मुझे आप से महब्बत है	121
हमें बुज़ुर्गों की बातें सुनाइये	100	**(49) रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाना**	122
(38) शआ़इरे इस्लाम की ता'ज़ीम करना	100	जन्नत में दाख़िला	123
क़ुरआने पाक को चूमा करते	101	एक नेकी ने जादू ना काम कर दिया	123
हाथ चेहरे पर फेर लिया	101	**(50) जानवरों पर रह़्म खाना**	125
(39) ईषार करना	101	जानवरों पर रह़्म की अपील	126
अनोखा दस्तर ख़्वान	102	मरने के बा'द मज़लूम जानवर मुसल्लत़ हो सकता है	127
ईषार का षवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े	103	कुत्ते को पानी पिलाने वाले की बख़्शिश हो गई	128
(40) ख़ामोश रहना	104	मख्खी पर रह़्म करना बाइषे मग़्फ़िरत हो गया	129
मीज़ाने अ़मल पर बहुत भारी है	105	मख्खी को मारना कैसा ?	129
बोलने की चार अक़्साम	105	**(51) मरीज़ की इ़यादत करना**	130
मदनी माहौल बनाने में ख़ामोशी का किरदार	107	फ़िरिश्ते इ़यादत करेंगे	130
(41) मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना	108	इ़यादत के सात मदनी फूल	131
किसी के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने वाले चन्द काम	109	मरीज़ के लिये एक दुआ़	131
(42) नर्म गुफ़्तगू करना	109	इ़यादत का मदनी इन्आ़म	132
मीठे बोल की बरकत	110	**(52) मुसलमान की ह़ाजत रवाई करना**	132
नर्मी का मदनी इन्आ़म	112	परेशानी दूर फ़रमाएगा	133
(43) मुसलमान भाई को तकिय्या पेश करना	113	मैं ने तुम्हारी ह़ाजत पूरी की थी	134
(44) मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना	113	**(53) जाइज़ सिफ़ारिश करना**	134
मग़्फ़िरत कर दी जाती है	115	**(54) झगड़े से बचना**	135
(45) बेची हुई चीज़ वापस लेना	116	**(55) ए'तिकाफ़ करना**	136
(46) क़िब्ला रुख़ बैठना	117	**(56) ता'ज़िय्यत करना**	138
तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	117	**मदनी इन्आ़मात** और ग़म ख़्वारी	139
(47) मजलिस बरख़ास्त होने की दुआ़ पढ़ना	119	**(57) तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत देना**	140

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
सदक़े का षवाब मिलेगा	142	येह आबे ज़म ज़म है !	158
मैं ने तुझे मुआ़फ़ किया	143	**(69) मुसीबत छुपाना**	159
(58) रिश्तेदार पर सदक़ा करना	143	**(70) सब्र करना**	159
तुम्हारे लिये दुगना षवाब है	144	सब्र किसे कहते हैं ?	160
(59) तंगदस्त का बक़दरे ताक़त सदक़ा करना	145	सब्र कर के अज्र कमाने के बा'ज़ मवाक़ेअ़	161
(60) अंगूर का दाना सदक़ा किया	145	**(71) अ़फ़्वो दर गुज़र करना**	163
छुपा कर सदक़ा देना	146	क़ातिलाना ह़म्ला करने वाले को मुआ़फ़ फ़रमा दिया	164
बा'दे विसाल सख़ावत का पता चला	147	**(72) सुल्ह़ करवाना**	165
(61) अहले ख़ाना पर ख़र्च करना	147	सुल्ह़ करवाने का षवाब	166
चादर ज़ौजा को देना भी सदक़ा	148	सरकार صلى الله تعالى عليه واله وسلم ने सुल्ह़ करवाई	166
ज़ौजा को पानी पिलाया	149	**(73) शुक्र करना**	167
(62) सुवाल न करना	149	**(74) अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना**	169
मुझे प्यास लगी है	150	**(75) मां बाप को मह़ब्बत भरी निगाह से देखना**	170
(63) क़र्ज़ देना	150	**(76) वालिदैन की क़ब्रों पर ह़ाज़िरी देना**	171
(64) अदा करने की निय्यत से क़र्ज़ लेना	151	**(77) नमाज़े जनाज़ा पढ़ना**	171
क़र्ज़ लौटाने की दिलचस्प ह़िकायत	151	**(78) आ़जिज़ी करना**	172
(65) यतीम के सर पर शफ़्क़त से हाथ फेरना	153	लकड़ियों का गठ्ठा खुद उठा कर लाए	173
(66) तल्बिय्या पढ़ना	154	**(79) नेक मुसलमान से ह़ुस्ने ज़न रखना**	174
(67) बैतुल्लाह में दाख़िल होना	154	**(80) ऐ़ब पोशी करना**	175
ह़तीमे का'बा शरीफ़ में दाख़िल होना	155	**(81) ईसाले षवाब करना**	176
(68) आबे ज़म ज़म पीना	156	**(82) दूसरों के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करना**	177
क़ियामत की प्यास से तह़फ़्फ़ुज़ के लिये पी रहा हूं	156	**(83) नेक इजतिमाआ़त में शिर्कत करना**	178
नफ़्अ़ बख़्श इल्म, वसीअ़ रिज़्क़ और तन्दुरुस्ती मांगते	157	मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये	181
सिह़्ह़त मन्द हो गए	157	मैं एक बद मुआ़श था	182
पेट भर कर पीना चाहिये	158	नेकियों के फ़ज़ाइल पढ़िये	183
		मुत़ालआ़ नेक बनने में मदद देता है	184

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या शो'बए इस्लाही कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा 33 कुतुबो रसाइल

01..... गौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)	02..... तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)
03..... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)	04..... बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)
05..... तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)	06..... नूर का खिलौना (कुल सफ़ह़ात : 32)
07..... आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 49)	08..... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)
09..... इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात :32)	10.....रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170)
11..... क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 262)	12..... उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़ह़ात : 48)
13..... तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)	14..... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़ह़ात : 150)
15..... अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)	16..... तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
17..... कामयाब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 63)	18..... टीवी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
19..... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)	20..... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)
21..... फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)	22..... शर्ह़ शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़ह़ात : 215)
23..... नमाज़ में लुक्मा देने के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)	24..... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)
25..... तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)	26..... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)
27..... आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)	28..... क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़ह़ात : 115)
29..... फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)	30..... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़ह़ात : 408)
31..... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)	32..... कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)
33..... आदाबे मुर्शिदे कामिल (कुल सफ़ह़ात : 275)	

तौबा की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं। (سنن ابن ماجه حديث ٤٢٥٠ ص ٢٧٣٥)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालअ़ा ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- 19 - 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, फ़ोन : (0145) 2629385
- हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
- हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net